उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती हिन्दी ग़ज़लें

संकलन एवं सम्पादन

रमेश 'कँवल'

श्वेतवर्णा प्रकाशन

नई दिल्ली

Published by Shwetwarna Prakashan in Hindi in Hardcover as *Urdu Ke Sammohan Se Mukt Hoti Hindi Ghazalen* (First Edition) Edited by *Ramesh 'Kanwal'* in the year 2026.

Shwetwarna Prakashan
212 A, Express View Apartment
Super MIG, Sector 93, Noida-201304, INDIA
Mobile: +91 8447540078
Email: shwetwarna@gmail.com
Website: www.shwetwarna.com

Copyright © *Ramesh 'Kanwal'*

ISBN: 978-81-976575-*-*

Views and opinions expressed in this work are author's own and the facts are reported by the author and the publisher is in no way liable for the same.

All rights reserved.

Book Design by *Sharda Suman*

No part of this book may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without express written permission of the author.

अंजू केशव

अनिल कुमार सिंह

अनिल गौड़

अनीता मिश्रा सिद्धि

अनुराग मिश्र ग़ैर

अमित 'अहद'

अरविन्द 'असर'

अरुण कुमार आर्य

अर्चना जौहरी

अविनाश अमन

अशोक 'अंजुम'

अशोक कुमार 'नीरद'

आनन्द पाण्डेय 'तन्हा'

आराधना प्रसाद

आलोक यादव

उत्कर्ष अग्निहोत्री

कविता विकास

कालजयी घनश्याम

किरण सिंह

कुलदीप शर्मा

कृष्ण सुकुमार

केशव शरण

गरिमा सक्सेना

चाँद मुंगेरी

छाया शुक्ला

ज़ाहिद अबरोल

ज्वाला सांध्यपुष्प

डॉ. आनन्द किशोर

डॉ. आरती कुमारी

ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'

डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

डॉ. गीता विश्वकर्मा 'नेह'

डॉ. ज़ीनत एहसान क़ुरैशी

डॉ. दिनेश त्रिपाठी शम्स

डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह 'त्यागी'

डॉ. नलिन

डॉ. पुरुषोत्तम 'यक़ीन'

डॉ. पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह

डॉ. राकेश जोशी

डॉ. विकास सोलंकी

डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'

डॉ. शिवओम अम्बर

डॉ. संगीता नाथ

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा

डॉ. सुनीता सिंह 'सुधा'

लक्ष्मी प्रसाद बडोनी

दिनेश सिंदल

दिलीप समदर्शी

दुर्गेश कुमार 'शाद'

द्रौपदी साहू

धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'

नवीन सी चतुर्वेदी

पवन शर्मा

पूर्णिमा सुमन

प्यासा अंजुम

प्रीति सुमन

बनवारी लाल 'ख़ामोश'

बाबा बैद्यनाथ झा

भूपेन्द्र सिंह 'होश'

महेश कुमार कुलदीप

महेश जोशी 'अनल'

मीना भट्ट सिद्धार्थ

रमा प्रवीर वर्मा

रवि खण्डेलवाल

राजकान्ता राज

राजमूर्ति सौरभ

राजेन्द्र तिवारी

राजेन्द्र राज

राहुल शर्मा

रीना धीमान 'स्वर्ण'

रेखा भारती मिश्रा

वंदना बाजपेयी

वसंत जमशेदपुरी

विजय कुमार स्वर्णकार

विज्ञानव्रत

शबला अरोरा (शालू)

संजीव प्रभाकर

सत्यभामा सिंह 'ज़िया'

सत्यम भारती

सत्यम् दुबे 'शार्दूल'

सविता राज

सुभाष पाठक 'ज़िया'

सुभाष मित्तल सत्यम्

सुरेंद्र कुमार सैनी

सोनिया वर्मा

हिमकर श्याम

हीरालाल यादव हीरा

अनुक्रम

- हिन्दी का स्वर साधती ग़ज़लें *-विजय कुमार स्वर्णकार* 23
- हिन्दी ग़ज़ल: हिन्दी-उर्दू के पुनर्मिलन का एक सशक्त माध्यम
  -ज़ाहिद अबरोल 29
- "उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती हिन्दी ग़ज़लें" कितनी मुक्त!
  -अशोक 'अंजुम' 40
- हिन्दी ग़ज़लों में हिन्दी भाषा का अवदान *-डॉ. सीमा विजयवर्गीय*......48
- "उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती हिन्दी ग़ज़लें"
  एक अभिनव प्रयोग *-रमेश 'कँवल'* 53

1. अंजू केशव 61
   - ☞ विचारों का ही मंथन नित किया है
   - ☞ दर पे तो आती थी क़िस्मत हम ही पर सोते रहे
2. अनिल कुमार सिंह 63
   - ☞ फुहारें पड़ती हैं पावस की तन मन भींग जाता है
   - ☞ हमने जितने शब्द उचारे सारे अब तक छाए हैं
3. अनिल गौड़ 65
   - ☞ लड़ाई राम रावण में ठनी है
   - ☞ देखी जो स्वप्नलोक में खोई अनामिका
   - ☞ नये समाज की ख़ातिर नई सदी के लिए
   - ☞ सुन्दर और असुन्दर क्या
4. अनीता मिश्रा सिद्धि...69
   - ☞ आज कल उसका ही जग में नाम है
   - ☞ आप होते तो अनोखा ही नज़ारा होता

5. अनुराग मिश्र ग़ैर 71
☞ बेमौसम के फूल सभी हम,
☞ चुप सारे पदचाप मिले,
6. अमित 'अहद' 73
☞ तुम कहाँ हो मेरे राघव आजकल
☞ जिसमें प्रेम का भाव निहित है
7. अरविन्द 'असर' 75
☞ पतझड़ को जानबूझ के मधुमास लिख दिया,
☞ फ़िल्मी धुन पर भजन सोचिये,
8. अरुण कुमार आर्य 77
☞ तेरा ये रूप पल में ही जादू सा कर गया
☞ अधूरा है तेरे बिन अपना जीवन
9. अर्चना जौहरी 79
☞ कुछ टूटे सपनो की किरचें कुछ यादों की कतरन
☞ कितनी अजीब बात, ये जो बात हो गई
10. अविनाश अमन 81
☞ रूप कुम्हला कर मेरा दर्पण से जब निसृत हुआ
☞ उनको वर्षो से रही हमसे जलन
11. अशोक 'अंजुम' 83
☞ मंच पर मुस्कान थी पर अश्क थे नेपथ्य में
☞ बड़ा बुरा है हाल कबीरा
12. अशोक कुमार 'नीरद' 85
☞ अब नहीं बाक़ी भरोसा है किसी विश्वास पर
☞ आत्मा के सूखते बूटों को पानी चाहिए

☞ गुल हुए हैं गौण चर्चित हो गया गुलदान है

☞ क्या पाना था, क्या पाया है, चिंतन करने बैठा हूँ

13. आनन्द पाण्डेय 'तन्हा' 89

☞ हर किसी की जब निजी हैं मान्यताएँ,

☞ क्यों पहनें वो लोग वसन,

14. आराधना प्रसाद 91

☞ सिर्फ़ उम्मीद पर टिकी मिट्टी

☞ आग ऐसी लगा गया सावन

15. आलोक यादव 93

☞ फिर आने का वादा करके पतझर में

☞ पढ़ रहा हूँ वेदना का व्याकरण मैं

16. उत्कर्ष अग्निहोत्री 95

☞ प्रेम के प्रतिमान हमने ज्ञान में पहना दिये

☞ प्रेम को पानी समय को खाद तो करते

17. ऋषिपाल धीमान 'ऋषि' 97

☞ अलग-थलग-सा बैठा हूँ

☞ मन-सरिता में करता हलचल

18. कविता विकास 99

☞ घटा काली है छायी आसमानों में

☞ जीवन से दिलदारी रख

19. कालजयी घनश्याम 101

☞ जो रक्खे शक्ति का हथियार होगा

☞ वो समाया है इस क़दर मुझमें

20. किरण सिंह 103
☞ घटा छाई हैं नयनों में, हृदय की शुष्क हैं नदियाँ
☞ इश्क़ का रिश्ता वे भी निभाते रहे,

21. कुलदीप शर्मा 105
☞ इतनी गहरी हलचल कैसी कैसा हाहाकार नदी
☞ बहरों की बैठक में तेरा रोना सब बेकार गया

22. केशव शरण 107
☞ उसे पाया न जिसका पात्र हूँ मैं
☞ न रहने से तुम्हारे कम सुहाना

23. कृष्ण सुकुमार 109
☞ जाने कितने ऐसे अवसर चूक गये
☞ टूटने के बाद की संभावना

24. गरिमा सक्सेना 111
☞ देखकर स्वाधीनता इन तितलियों की,
☞ रोज़ ढलकर भी नहीं इक पल ढला सूरज

25. चाँद मुंगेरी 113
☞ जीवन के पथ पर हम दौड़ें, ले इच्छा उत्थान की
☞ बिम्ब अम्बर के मरने लगे

26. छाया शुक्ला 115
☞ मिट गए जो देश के सम्मान पर
☞ दाता जीवन भर देता है

27. ज्वाला सांध्यपुष्प 117
☞ सब पुराने जब बिछुड़ते जा रहे हैं
☞ नदी बची न ही किनारा बचा

28. ज़ाहिद अबरोल 119

☞ रात को रात तभी समझे जब नींद ने हम को घेरा बाबा

☞ आँख झपकते ही साजन ने जीवन का मुख मोड़ दिया

29. डॉ. आनन्द किशोर 121

☞ पास किसके साफ़ मन है

☞ लगता है कुछ ज़रूर होना है

30. डॉ. आरती कुमारी 123

☞ प्रेम की भावना रखो मन में

☞ स्वप्न है परिदृश्य बदले प्रेम ही आधार हो

31. डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़' 125

☞ सत्य में और झूठ में इतना ही बस अंतर मिला

☞ फूल का, गंध का, रंग का, रास का

32. डॉ. गीता विश्वकर्मा 'नेह' 127

☞ धारणा सफल विफल बना लिया स्वभाव ने

☞ कितने रहस्य गोपन गतिमान पुतलियों में

33. डॉ. ज़ीनत एहसान क़ुरैशी 129

☞ हमारे पास आईना रखा है

☞ हमें मालूम है वो बेवफ़ा है

34. डॉ. दिनेश त्रिपाठी शम्स 131

☞ व्यवस्था में रद्दो-बदल चाहते हैं,

☞ सारे रूपक सारे बिंब विधान अधूरे हैं

35. डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह 'त्यागी' 133

☞ जो गिरे हैं उन्हें उठाया कर

☞ हर किसी इंसान में होती हैं कुछ अच्छाइयाँ

36. डॉ. नलिन 135
☞ फूल हैं तो तितलियाँ हैं
☞ ये जो मोती पाए हैं

37. डॉ. पुरुषोत्तम 'यक़ीन' 137
☞ धन-शक्ति जिन के पास है
☞ नदिया की कल-कल, छल-छल में

38. डॉ. पूनम सिन्हा 'श्रेयसी' 139
☞ यूँ स्वयं के पक्ष में तकरार करना चाहिए,
☞ वही साथ दिल से निभाना भी चाहे,

39. डॉ. ब्रह्मजीत गौतम 141
☞ यह हुआ क्या चमत्कार है
☞ हम कहें कैसे अपनी व्यथा

40. डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह.. 143
☞ बीत गया जो वो मौसम दो
☞ पग पग पर हैवान मिलेंगे

41. डॉ. राकेश जोशी 145
☞ जब अँधेरों से कहीं मैं मिलके आता हूँ
☞ जब कभी दरबार लिखना

42. डॉ. विकास सोलंकी.. 147
☞ हो रहा है पाप का कुछ इस तरह पंजीकरण
☞ प्रश्न मेरे सामने तो आज भी इक यक्ष है

43. डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ' 149
☞ सताती है बहुत लड़की मुझे दो चोटियों वाली,
☞ किसी के प्यार में पागल उड़ी तितली पकड़ लेना,

44. डॉ. शिवओम अम्बर 151
☞ अथक अविराम अक्षर-साधना है,
☞ आक्षितिज जो भी प्रत्यक्ष है

45. डॉ. संगीता नाथ 153
☞ सच्चाई से आँख मिलाना सबके बस की बात नहीं,
☞ आइना ख़ुद सँवरने लगा देखिए,

46. डॉ. सीमा विजयवर्गीय 155
☞ दुनिया में इसकी गूँज हो, आकाश में परचम रहे
☞ चाँद, सूरज, दीप बनकर हर घड़ी लड़ती रही
☞ बासंती रुत में जब, मन मधुमास हुआ
☞ कहाँ मैं भूल पाता, याद आती है मेरी मिट्टी

47. डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा 159
☞ तारे छिपने लगे, डर गये भोर से
☞ तेरी चाहत भली भली होगी

48. डॉ. सुनीता सिंह 'सुधा' 161
☞ जब कोई अफ़साना पढ़ना
☞ सबको ही बहलाती कुर्सी

49. लक्ष्मी प्रसाद बडोनी.. 163
☞ मेरे भीतर शोर मचाता सन्नाटा है
☞ हाल जो तुमने पूछा होता

50. दिनेश सिंदल 165
☞ न आनी की न जानी की ख़बर है
☞ सच के मुंह पर ही ताला है सच पूछो तो

51. दिलीप समदर्शी... 167

☞ कांच जैसे ही टूटा बिखरना पड़ा,
☞ मुस्कुराने की अभी फ़ुरसत नहीं है,

52. दुर्गेश कुमार 'शाद' 169
☞ जब ख़त पीले हो जाते हैं,
☞ जब-जब सच मैं बोला था,

53. द्रौपदी साहू 171
☞ मन के भीतर उथल पुथल है
☞ प्यास बहुत है जीने की

54. धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल' 173
☞ मैं जो इतना सरल नहीं होता
☞ यूँ नहीं मरती प्रबल सम्भावना

55. नवीन सी चतुर्वेदी 175
☞ धवल मुखचन्द्र पर जब श्याम कुन्तल नृत्य करते हैं
☞ प्रीत में हर बात को विपरीत कहते हैं

56. प्यासा अंजुम 177
☞ वो नया विश्वास लिखने आएगा
☞ खो गए हैं कितने राही रास्तों की भीड़ में

57. पवन शर्मा.. 179
☞ चौका-आँगन रोज़ बुहारे
☞ सुनो भगवन
☞ कहीं मलमल

58. पूर्णिमा सुमन 181
☞ दिखाता जो हमें अस्तित्व का गुलशन समय ही है,
☞ कठिन राहें न हों जिसमें, भला वो भी सफ़र कैसा

59. प्रीति सुमन 183
☞ कबतक किनारे किनारे चलेंगे
☞ साँसें टूट रही हैं तन में

60. बनवारी लाल 'ख़ामोश' 185
☞ सभी देवताओं के गण ढूँढ़ियेगा
☞ सफल घरेलू जीवन-गाथा के नायक थे बाबूजी

61. बाबा बैद्यनाथ झा 187
☞ मूल्य दे आप दर्शक जुटाते रहे
☞ उपकार ले लिया तो, उसको न है भुलाना

62. भूपेन्द्र सिंह 'होश' 189
☞ लक्ष्य बस मानस पटल पर झिलमिलाते रह गए
☞ नेह करुणा शान्ति यद्यपि सभ्यता का सार है,

63. महेश कुमार कुलदीप 191
☞ मौन की अभिव्यंजना किसको समझ आई यहाँ
☞ आने वाले प्रतिक्षण का खुलकर अभिनंदन करता हूँ

64. महेश जोशी 'अनल' 193
☞ होगा अगल-बगल में पानी
☞ रख नहीं पाई नियंत्रण अपनी लहरों पर नदी

65. मीना भट्ट सिद्धार्थ 195
☞ मेरी पूजा मेरी निष्ठा ईश के समकक्ष है
☞ बैठा इस उर के भी अंदर कौन है

66. रमा प्रवीर वर्मा 197
☞ अम्बर की नगरी में काले, काले छाते हैं बादल
☞ भीनी सी महक आज इधर है बसंत की

67. रमेश 'कँवल' 199
☞ मुफ़्त मिली पहचान नहीं हूँ
☞ प्रश्न हूँ मैं, हल नहीं हूँ

68. रवि खण्डेलवाल 201
☞ जीवन दाता मात-पिता हैं औ' उनके संस्कार गुरू
☞ रुचि नहीं निकले कभी हल

69. राजकान्ता राज 203
☞ सच की राहों पर चलती हूँ
☞ मैं जिसे याद में बसाती हूँ

70. राजमूर्ति सौरभ 205
☞ पंछियों का देरतक कलरव रहा,
☞ कठघरे में सच खड़ा है, कुछ ख़बर है आपको,
☞ कुछ लालच कुछ डर बैठा है,
☞ किया है पहले उसने श्रम निरंतर,

71. राजेन्द्र तिवारी.. 209
☞ पर्वत के हिम शिखर से उतरी सज-धज कर अलबेली धूप
☞ इतना अभिनय ठीक नहीं है

72. राजेन्द्र राज.. 211
☞ नाम हिन्दी का बढ़ाना है उचित
☞ जानें कितनी दफ़ा चोट सहते रहे

73. राहुल शर्मा 213
☞ टूटे सपनों को बुझी आस को रँगना है मुझे
☞ हमसे आकर पूछो क्या हैं पीड़ा की परिभाषाएँ

74. रीना धीमान 'स्वर्ण' 215
☞ क्यों किसी बात पे मैं अपनी सफ़ाई दूँगा,
☞ उर के धागे बांधे गिरधारी तुमसे,

75. रेखा भारती मिश्रा..217
☞ तुमसे मेरी ज़िंदगी का वास्ता रह जाएगा
☞ अनगिनत चाह बो गईं आँखें

76. वंदना बाजपेयी..219
☞ हौसला रख ले ज़रा इक बार तू
☞ प्रेम कहते हो जिसे वो प्रेम होता है नहीं

77. वसंत जमशेदपुरी 221
☞ सुबह-सुबह कोयल का गाना, अच्छा लगता है
☞ हर अँधेरी वीथिका को जगमगाना चाहता हूँ

78. विज्ञानव्रत...223
☞ उसको कुछ कहना था और
☞ अब वो मेरा गहना है
☞ बोये तो थे सन्नाटे
☞ जब तू मिला

79. शबला अरोरा (शालू)...225
☞ जीवन ये मेरा कृष्ण नें आसान कर दिया
☞ दिल लगा मैं बैठी हूँ अपने भोले शंकर से

80. संजीव प्रभाकर...227
☞ इस बात को लेकर दुखी है इन दिनों अंतःकरण,
☞ आकलन भी नहीं कर सके हम, कर सके क्या नहीं कर सके हम,

81. सत्यभामा सिंह 'ज़िया' 229
☞ मुश्किलों से गुज़र गया कब का
☞ पत्थर पे लिखा हर्फ़ मिटाया नहीं जाता

82. सत्यम भारती 231
☞ चुप हैं सब यह हाल देखकर
☞ ज़िन्दगी भर हाथ वे मलते रहे

83. सत्यम् दुबे 'शार्दूल' 233
☞ तुम्हारे मौन का जो व्याकरण है,
☞ क्या ज़रूरी है किसी के पक्ष की बातें करें,

84. सविता राज 235
☞ आकाश हमारा हो जाता
☞ कहानी सभी की वही की वही है

85. सुभाष पाठक 'ज़िया' 237
☞ भागता दौड़ता रहता जीवन यहाँ
☞ हमने मस्तिष्क खोया है मन खो दिया

86. सुभाष मित्तल सत्यम् 239
☞ भूमि पर का गगन है पिता
☞ तृप्ति जल सब पी रही है

87. सुरेंद्र कुमार सैनी 241
☞ दिल को मत भरमाया कर
☞ कोई अब मुझको क्या जलाएगा
☞ खदानों में नहीं मिलता, ख़ज़ानों में नहीं मिलता
☞ बड़ी ज़िल्लत उठाने जा रहा हूँ

88. सोनिया वर्मा 245

☞ अपना सपना तोड़ रहे हैं अपने हाथों से

☞ पल-पल बीते सारे दिन

89. हिमकर श्याम 247

☞ कैसा ये निष्ठुर समय है पूछ मत

☞ जड़ों से दूर हैं लेकिन वहीं फिर लौट जाना है

☞ पीर की लंबी कहानी हो गई

☞ क्या यहाँ कुछ बदलने वाला है

90. हीरालाल यादव हीरा 251

☞ दिल जुड़ा किससे है और किससे जुदा, याद नहीं

☞ छोड़ हर बात पे औक़ात से बाहर होना

91. ग़ज़लकार मित्रों के शहर और मोबाइल नंबर 253

92. ग़ज़लकार मित्रों की जन्मतिथियाँ 257

93. मुहब्बतों का शायर: रमेश 'कँवल' 261

हिन्दी का स्वर साधती ग़ज़लें-
विजय कुमार स्वर्णकार

"साए में धूप" के प्रकाशन के पश्चात हिन्दी भाषी ग़ज़लकारों को एक नई दिशा मिली थी। ऐसा नहीं है कि उन ग़ज़लों की शब्दावली हिन्दी ग़ज़ल के लिए आदर्श है; हाँ, उनमें जगह-जगह उचित शब्दावली की झलक मिल जाती है। बाद के ग़ज़लकारों ने बहुत प्रयास किये किंतु कमज़ोर कथ्य और ग़ज़ल से संबंधित अन्य ख़ामियों के चलते इन ग़ज़लकारों को वह सफलता प्राप्त न हो सकी जो दुष्यंत कुमार को हुई। ऐसा भी नहीं है कि इस अवधि में अच्छी ग़ज़लें नहीं हुई हैं। सत्य यह है कि अधिकांश ग़ज़लें उर्दू के प्रभाव से मुक्त नहीं हुईं। जो ग़ज़लकार इससे मुक्त होने के प्रयास में थे उनमें से कई अरबी-फ़ारसी के शब्दों से परहेज करने के चक्कर में संस्कृत के कठिन शब्दों के जाल में फंस कर रह गए।

आज भी ग़ज़ल में हिन्दी का नाम आते ही ग़ज़लकारों के एक खेमे में असहजता घर करने लगती है। अधिकांश का एक ही आग्रह होता है कि ग़ज़ल को ग़ज़ल रहने दिया जाए और इसे हिन्दी उर्दू के विवाद से परे रखा जाए। इस विवाद के मूल में क्या है इसे समझना आवश्यक है। पहली बात हिन्दी और उर्दू दो अलग-अलग भाषाएँ हैं। इन भाषाओं की लिपियाँ अलग-अलग हैं हालांकि अनेक भाषाएँ एकाधिक लिपियों में लिखी जाती हैं। इन दोनों भाषाओं की धरोहरें अलग-अलग हैं। हिन्दी में तुलसी, कबीर, जायसी आदि कवि पाठ्यक्रमों का हिस्सा हैं। उर्दू में ये कवि नहीं हैं। इसका अर्थ है हिन्दी ने अपनी बोलियों का साथ नहीं छोड़ा है। इन बोलियों का विराट शब्द भंडार भी हिन्दी को समृद्ध करता है। यह और बात है कि समय के साथ बोलियों के अधिकांश शब्दों को भुला दिया जा रहा है। उपर्युक्त विशेषताओं के साथ ही इन भाषाओं में एक बड़ा साम्य है और वह है इनकी सहायक क्रियाओं की समानता। जैसे

ग़ज़ल में मतले से ग़ज़ल की ज़मीन की घोषणा होती है इसी तरह सहायक क्रियाओं के शब्द भाषा की पहचान कराते हैं। देवनागरी में लिखी उर्दू हिन्दी प्रतीत हो सकती है और अरबी में लिखी हिन्दी भी उर्दू प्रतीत हो सकती है। ग़ज़ल में ही यह भ्रम क्यों होता है? हिन्दी कविता को लेकर कभी यह विवाद नहीं उठता। गद्य की भाषा तो दोनों भाषाओं में अलग ही होती है। ग़ज़ल में समानता का अन्य कारण है एक सी शब्दावली का उपयोग। ग़ज़ल बोलचाल की भाषा को वरीयता देती है। हिन्दी और उर्दू में साझा शब्दों की संख्या अधिक होने के कारण कभी-कभी तय करना कठिन होता है कि बात हिन्दी में है या उर्दू में। यह समानता सुखद है। एक भाषा अगर दूसरी भाषाओं से अपने शब्द साझा करती है तो इससे अच्छा क्या हो सकता है। ग़ज़ल चूंकि उर्दू से होते हुए हिन्दी में आई है इसलिए हिन्दी भाषा के पाठक शे'र में उर्दू के प्रचलित शब्दों की उपस्थिति को अधिक पसंद करते हैं। आम हिन्दी भाषी ग़ज़लकारों की मुश्किल यह है की उर्दू ग़ज़ल की विराट परंपरा के समक्ष अपनी पहचान बनाने के लिए कभी कभी उनमें उर्दू ग़ज़ल के चाहने वालों को प्रभावित करने की प्रवृत्ति जाग उठती है। समय के साथ जब ग़ज़लकार स्थापित होता है तब अपनी दिशा अपने मंतव्य के अनुसार बदलता है। आज स्थिति यह है कि उर्दू हिन्दी की ग़ज़लों में अंतर करना दुष्कर है और अधिकांश जन इस स्थिति को स्वीकार कर चुके हैं। अक्सर यह भी दावे किए जाते रहे हैं कि पिछले दो दशकों में हिन्दी ग़ज़ल के कथ्य में अधिक विविधता आई है और उर्दू की गजलों में वह दिखाई नहीं देती। लेकिन ये केवल दावे हैं सत्य कुछ और है। पिछले दो-तीन दशकों में दोनों भाषाओं की ग़ज़लों ने अपना सफर साथ-साथ तय किया है। विषयगत विविधताएँ समकालीन उर्दू ग़ज़लों का भी हिस्सा हैं। ऐसी स्थिति में "उर्दू के सम्मोहन से मुक्त हिन्दी ग़ज़लें" का प्रकाशन एक विशिष्ट प्रयास है। ध्येय यह होना चाहिए कि शब्दावली के स्तर पर हिन्दी कविता और हिन्दी ग़ज़ल लगभग एक सी हों। पिछली सदी में हिन्दी ग़ज़ल के विरोध में पीछे एक बड़ा कारण यह समझ भी थी कि वह उर्दू के शब्दों को वरीयता देती है। ग़ज़ल जैसी विधा को अपनी भाषा में उसके व्याकरण और मिज़ाज के साथ अपनाना और निभाना कठिन तो है ही। आज अनेक भारतीय भाषाओं और बोलियाँ में ग़ज़लें कही जा

रही हैं। वहाँ गजलों में हिन्दी उर्दू वाला विवाद नहीं है। उनकी अपनी शब्दावली और सहायक क्रियाएँ उन्हें बिल्कुल अलग पहचान देती हैं। वरिष्ठ ग़ज़लकार हरेराम समीप जी ने एक बार मुझे कहा कि मैं चाहता हूँ निकट भविष्य में किसी ग़ज़ल संग्रह को हिन्दी का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिले। इससे हिन्दी भाषी ग़ज़लकारों के सुदीर्घ संघर्ष को और वर्तमान में किए जा रहे उल्लेखनीय लेखन को मान्यता प्राप्त होगी। इसके लिए आवश्यक है कि हिन्दी की भाषाई विशिष्टता के साथ ग़ज़लें कही जाएँ।जैसे तमिल या मलयालम में कही जा रही ग़ज़लें उर्दू के प्रभाव से अलग होती हैं, हिंदी गजल को स्वयं अपना विशिष्ट स्वरूप धारण करना होगा। उर्दू, अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं से अर्जित साझा शब्दावली से दुराव न रखते हुए भी यह लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। प्रस्तुत संग्रह की ग़ज़लों में यही प्रयास है। इस पुस्तक के नाम में ''मुक्त होती'' अर्थपूर्ण है। अभी उर्दू के सम्मोहन से मुक्ति मिली नहीं है।

प्रश्न यह है की उर्दू के सम्मोहन से मुक्त ग़ज़लों का स्वरूप कैसा होना चाहिए। इसे एक उदाहरण से समझते हैं। क्या ''ग़ालिब'', ''फ़ैज़'', ''फ़िराक़'' की किसी ग़ज़ल को आप हिन्दी ग़ज़ल कह सकते हैं? नहीं कह सकते। तो उनमें ऐसा क्या है जो उन्हें हिन्दी से अलग करता है। भाषा के आँगन में खेलते शब्दों के साथ-साथ उसके आँचल में सहेजे जीवंत शब्दों का सटीक संयोजन है वहाँ। इस सटीक संयोजन तक पहुँचने के लिए ग़ज़लकार अपने-अपने स्तर पर प्रयास करते रहे हैं।

'साए में धूप' का एक शे'र देखिए-

''मत कहो आकाश में कोहरा घना है
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है''

''आकाश'' और ''व्यक्तिगत आलोचना'' इसे हिन्दी की श्रेणी में ले आते हैं। एक अन्य शे'र देखिए

''मस्लेहत आमेज़ होते हैं सियासत के क़दम
तू न समझेगा सियासत तू अभी नादान है''

"सियासत", "कदम", और "नादान" को छोड़ भी दें तो "मस्लेहत आमेज़" इसे उर्दू की श्रेणी में डाल देता है। इन दो उदाहरणों से स्पष्ट है कि शब्दावली के स्तर हिन्दी और उर्दू की अपनी सीमाएँ हैं। हिंदी उर्दू के साझा शब्दों से ही हिन्दी ग़ज़ल अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करने में सफल नहीं हो पाएगी।

इस प्रयास में योगदान के लिए संग्रह के सभी ग़ज़लकार और संकलनकर्ता व यशस्वी संपादक श्री रमेश 'कँवल' जी सराहना के पात्र हैं। ऐसे सतत प्रयासों से ही हिन्दी ग़ज़ल अपने लक्ष्य तक पहुँचेगी। इस संग्रह की ग़ज़लें भाषाई प्रयोग के स्तर पर विशिष्ट हैं। कुछ उदाहरण देखिए–

लो मूक हो गया है समय चीखता हुआ
दर्पण के सामने है अभी मुग्ध नायिका।

–अनिल गौड़

लगता है झूठ सच की जरा भी समझ नहीं
चारण कथा को आपने इतिहास लिख दिया।

–अरविंद 'असर'

प्रेम की पोथी कभी पढ़ते नहीं हैं
यों उन्हें कंठस्थ है सारी ऋचाएँ।

–आनंद पांडे 'तन्हा'

जो छुपने के काम आए
मैं घर का वह कोना हूँ।

–ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'

रख नहीं पाई नियंत्रण अपनी लहरों पर नदी
कैसे रखती फिर सुरक्षित रेत का एक घर नदी।

–महेश जोशी 'अनल'

बंद बोतल का हूँ पानी
शुद्ध गंगाजल नहीं हूँ।

–रमेश 'कँवल'

शब्द भाषा के आधार हैं। वर्तमान में हिन्दी अनेक भाषाओं के शब्दों को अपना रही है। हिन्दी में अनुवाद के प्रोत्साहन हेतु अंग्रेज़ी के कई शब्दों के लिए नए शब्द गढ़े जा रहे हैं। अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द भी ग़ज़लों में आ रहे हैं। सिद्धहस्त कवि को पता होता है कि कविता अपने भावानुरूप किन शब्दों से सज्जित होगी। इस संग्रह की ग़ज़लों को ध्यान से पढ़ने पर यह तथ्य स्पष्ट होता है कि अत्यधिक प्रचलित क़ाफ़ियों से बचने पर कैसे नई भावभूमि के शे'र सामने आते हैं।

पढ़ रहा हूँ वेदना का व्याकरण मैं
हूँ समर में आज भी हर एक क्षण मैं

–आलोक यादव

देखकर स्वाधीनता इन तितलियों की
भीगती हैं आँखें अक्सर खिड़कियों की

–गरिमा सक्सेना

यूँ नहीं मरती प्रबल सम्भावना
आप जो करते सही आलोचना

–धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'

इतना अभिनय ठीक नहीं है
हर पल संशय ठीक नहीं है

–राजेंद्र तिवारी

पंछियों का देर तक कलरव रहा
भोर में कितना सरस उत्सव रहा।

–राजमूर्ति सौरभ

कहते हैं कि जो सामने होता है उसका रंग हम पर चढ़ने लगता है। उर्दू ग़ज़ल को हिन्दी भाषियों ने पढ़ा ही नहीं है वरन उसे अपने जीवन संवाद का हिस्सा बना लिया है। हिन्दी में ग़ज़ल का रंग उसकी अपनी शब्दावली को अपनाकर आना चाहिए तभी वह हिन्दी में एक विधा के रूप में स्थायित्व पा सकेगी। इस संग्रह में अनेक वरिष्ठ ग़ज़लकारों के साथ साथ उभरते हुए

ग़ज़लकारों की उपस्थिति यह संकेत देती है कि हिन्दी ग़ज़ल अपनी सुचिंतित दिशा की ओर बढ़ रही है। इस महत्वपूर्ण संग्रह के लिए सभी को हार्दिक बधाई।

चैत्र शुक्ल 15 संवत 2083
श्री हनुमान जयंती
2 अप्रैल, 2026

विजय कुमार स्वर्णकार
मोबाइल 995 855 6141

हिन्दी ग़ज़ल: हिन्दी-उर्दू के पुनर्मिलन का एक सशक्त माध्यम-ज़ाहिद अबरोल

श्री रमेश कँवल मुख्य रूप से हिन्दी-उर्दू के सुप्रतिष्ठित कवि हैं, परन्तु अपने स्वरचित आठ-नौ काव्य-संग्रहों के अतिरिक्त उन्हों ने लगभग एक दर्जन काव्य-संग्रह संकलित और सम्पादित किये हैं, जिनमें अधिकतर संग्रह ग़ज़लों के हैं। प्रस्तुत ग़ज़ल-संग्रह में उन्होंने ऐसी ग़ज़लें समाहित करने की कोशिश की है जो उर्दू शब्दावली के प्रभाव से मुक्त हो रही हों। हिन्दी ग़ज़ल का आधुनिक दौर दुष्यंत कुमार की "साये में धूप" से आरम्भ हुआ, जिसमें शुद्ध काव्यात्मक हिन्दी को छोड़ कर वो भाषा प्रयोग में लायी गई जो आम बोलचाल की भाषा थी। देखने में लगता था कि उर्दू शब्दों का खुल कर प्रयोग किया गया है, परन्तु एक तो ग़ज़ल वैसे भी उर्दू भाषा से हिन्दी में आई थी, दूसरा शुद्ध हिन्दी में जो ग़ज़लें लिखी गई थीं उनमें भाषा की सहजता और सरलता कम, शब्दों का आडम्बर अधिक लगता था। शायद इसीलिए वो उतनी सफल नहीं हुईं जितनी कि दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें। श्रोताओं व पाठकों से स्वीकृति मिलने पर हिंदी में ऐसी ग़ज़लों की भरमार लग गई जिनमें उर्दू के शब्दों का प्रयोग बेझिझक होने लगा, यहाँ तक कि वो शब्द हिन्दी ग़ज़ल में आ गये जो आम बोलचाल की भाषा में प्रचलित नहीं थे, यानि कि क्लिष्ट उर्दू। यह हिन्दी ग़ज़ल संग्रह जो रमेश कँवल जी प्रकाशित करने जा रहे हैं शायद उसी क्लिष्ट उर्दू से हिंदी ग़ज़ल को मुक्त कराने का प्रयास है वरना शब्दों के स्रोत के हिसाब से हिन्दी भाषा में से यदि उर्दू/फ़ारसी/ अरबी/ तुर्की के सभी शब्द निकल दिये जायें तो वो न भाषा रहेगी न बोली, केवल एक ठूंठ सा रह जायेगा, जिसमें कविता रचना तो दूर, सहज बातचीत भी न हो पायेगी।

हिन्दी और उर्दू इन दोनों भाषाओं का स्रोत एक ही है और वह है खड़ी बोली। यह दोनों भाषाएँ दो अलग अलग लिपियों में लिखी जाती रही हैं .

इन दोनों भाषाओं के इतिहास को दो भागों में बांटा जा सकता है। एक तो खड़ी बोली का इतिहास और दूसरा इन दोनों भाषाओं के अलग अलग रूप धारण करने के बाद का इतिहास। किसी भाषा या बोली का इतिहास केवल साहित्यिक रचनाओं से ही ढूँढा जा सकता है। खड़ी बोली जिसको अमीर ख़ुसरौ द्वारा हिन्दवी कहा गया है, इसका साहित्य फ़ारसी और देवनागरी दोनों लिपियों में लिखा गया। हिन्दवी की सर्वप्रथम रचना मसऊद साद सलमान (1046-1121) का दीवान माना जाता है परन्तु खेद का विषय यह है कि वह दीवान उपलब्ध नहीं हो सका, केवल इस के बारे में मुहम्मद औफ़ी और अमीर ख़ुसरौ ने ज़िक्र किया है। क्योंकि यह आरंभिक दौर था, हिन्दवी को दूसरी भाषाओं की तुलना में कम सम्मान मिलता था।

अमीर ख़ुसरौ (1253-1325 ई०) जो पहले फ़ारसी, अरबी आदि भाषओं में काव्य-रचना करते थे, अपने अध्यात्मिक गुरु निज़ामुद्दीन औलिया के आदेशानुसार हिन्दवी में लिखने लगे क्योंकि उनके गुरु चाहते थे कि सूफ़ी विचार आम लोगों तक पहुँच सकें। अमीर ख़ुसरौ ने अपनी मसनवी "नह सिपहर" में लिखा है:

"यह बात बिल्कुल व्यर्थ है कि मैं अपना दिल फ़ारसी, अरबी और तुर्की के नग़मों पर लाऊँ और उसे इस तरह ख़ुश करूं। मैं चूँकि हिन्दोस्तानी हूँ इसलिए यही बेहतर है कि मैं अपनी जगह से बात करूं। इस देश की हर दिशा में उसकी अपनी विशेष भाषाएँ हैं और वे दूसरों से माँगी हुई नहीं हैं, बल्कि वहीं की हैं"

अमीर ख़ुसरौ ने अपने फ़ारसी साहित्य में ख़ुद को "तूती-ए-हिन्द" कहा है

चुम तूती-ए-हिन्दम, अर रास्त पुर्सी
ज़िमन हिन्दुई पुर्स, ता नग़ज़ गोयम

(मैं हिन्द की तूती हूँ और अगर मुझसे बात करनी है तो हिन्दवी में करो ताकि मैं तुम्हें मधुर बातें सुना सकूं)

ख़ुसरौ ने हिन्दवी की फ़ारसी और तुर्की से भी तुलना की। वह लिखते हैं:

इस्बात गुत हिन्द बहुज्जत कि राज़े-हस्त
बर पारसी-ओ-तुर्की अल अल्फ़ाज़ ख़ुशगवार

ग़ज़ल की विधा में पहला ग़ज़लगो होने का श्रेय भी अमीर ख़ुसरौ ही को जाता है। हिन्दवी में उनकी यह ग़ज़लें देखिये:

जब यार देखा नैन भर, दिल की गई चिंता उतर
ऐसा नहीं कोई अजब, राखे उसे समझाये कर

जब आँख से ओझल भया, तड़पन लगा मेरा जिया
हक्का इलाही क्या किया, आँसू चले भर लाय कर

बह गये बलम बह गये नदियों किनार,
आप पार उतर गये हम तो रहे अरदार
भाई रे मल्लाहो, हम को उतारो पार,
हाथ का देऊँगी मुंदरी, गल का देऊँ हार

भाषा का तअल्लुक़ हमेशा से उस क्षेत्र की विशेष बोली या बोलियों से रहा है, कभी किसी विशेष धर्म या सम्प्रदाय से नहीं। 13वीं शताब्दी के अमीर ख़ुसरौ के बाद कविता को ग़ज़ल के रूप में कहने वालों में कबीर का नाम बड़े आदर से लिया जाता है, हालाँकि उन की भाषा में खड़ी बोली, ब्रज, अवधी और फ़ारसी का समिश्रण है। उनकी ग़ज़ल देखिये:

हमन हैं इश्क़म मस्ताना हमन को होशियारी क्या
गुज़ारी होशियारी से जवानी फिर गुज़ारी क्या

धुएँ की उम्र कितनी है, घुमड़ना और कहो जाना
यही सच्चाई है प्यारे, हमारी क्या तुम्हारी क्या

कबीर के बाद16वीं शताब्दी के संत कवियों सूरदास, रसखान, रहीम, मीरा बाई आदि ने ब्रज भाषा में अपनी कवितायेँ रचीं और मलिक मोहम्मद जायसी के पद्मावत और तुलसीदास की रामचरित मानस अवधि में रचे गये (इन से पहले 12वीं शताब्दी के चन्दबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो भी पिंगल (ब्रज भाषा + अपभ्रंश) और डिंगल (राजस्थानी + अपभ्रंश) में रचा गया। ख़ुसरौ

के बाद ही 13वीं शताब्दी में दिल्ली और उस के आसपास के क्षेत्र युद्धों और असुरक्षा की भावना से ग्रस्त रहे और कुछ अमनपसंद कवि, सामंत सूफ़ी संत आदि इस हिन्दवी भाषा को ले कर दक्खन (हैदराबाद, अहमदाबाद आदि) चले गये। वहाँ इस भाषा का नाम दकनी पड़ गया।

खड़ी बोली का दो अलग अलग भाषाओं में विभाजन 18वीं शताब्दी में ही शुरू हुआ और 19वीं शताब्दी की आरम्भ में ही कलकत्ता से फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के साथ ही इन दोनों भाषाओं ने अपनी अपनी पहचान अलग बनाने की कोशिश शुरू कर दी। उस कॉलेज में अंगरेज़ अफ़सरों की शिक्षा के लिये फ़ारसी, संस्कृत और अरबी किताबों के अनुवाद का सिलसिला शुरू हुआ। मीर अमन ने क़िस्सा बाग़ो-बहार या चार दरवेश का अनुवाद आसान खड़ी बोली या उर्दू में किया तो गुजरात के लल्लू लाल जी ने तीन किताबें उर्दू में लिखने के बाद चौथी किताब "प्रेम सागर" हिन्दी में लिखी और लिपि भी देवनागरी रखी।

यहाँ तक तो दोनों भाषाओं का इतिहास साँझा है, फिर 19वीं शताब्दी में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिन्दी भाषा के विकास के लिये बनारस से एक पत्रिका भी निकाली और बहुत से ड्रामे आदि बंगला से हिन्दी में अनुवाद किये। फिर स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिन्दी को आर्य भाषा का नाम दे कर इस के विकास को हिन्दुओं का धार्मिक कर्तव्य घोषित कर दिया। पण्डित श्रद्धाराम फिल्लौरी (ॐ जय जगदीश हरे..के रचयिता) ने भी हिन्दी के विकास के लिये काम किया। फिर तो हिन्दी पूरी तरह से अपने यौवन पर आने लगी और पूर्णत: देवनागरी लिपि में लिखी जाने लगी। प्रेम चंद ने भी अपने उपन्यास उर्दू लिपि में लिखे और फिर हिन्दी लिपि में लिपियन्तरित किये गये। उसके बाद तो जितने भी कवि आये उन्हों ने शुद्ध हिन्दी लिपि में कविता सृजन की।

हिन्दी का नाम हिन्दवी तो 13वीं शताब्दी में ही पड़ गया था परन्तु उर्दू भाषा को उर्दू नाम 18वीं शताब्दी में मिला। तब तक इस का नाम हिन्दवी ही रहा जिसे दक्खन में जा कर 'दकनी' नाम से पुकारा गया। दक्खन में 15वीं शताब्दी में उर्दू की पहली मसनवी (लम्बी नज़्म) फ़ख़रुद्दीन निज़ामी कृत "कदम

राव पदम् राव" लिखी गई और 17वीं शताब्दी में वली दकनी ने ग़ज़ल को प्रारंभिक रूप दिया। 18वीं शताब्दी में मीर, सौदा, दर्द और 19वीं शताब्दी में नज़ीर अकबराबादी, ग़ालिब, ज़ौक़, मोमिन आदि ने इस के विकास में काफ़ी सहयोग दिया। उर्दू को हिंदी से पूर्णत: पृथक लखनऊ के शाइर इमाम बख़्श नासिख़ (1776-1839) आदि शाइरों ने किया जिन्हों ने उर्दू भाषा से संस्कृत, हिन्दी के शब्दों को मतरूकात (परित्यक्त के योग्य) बता कर उर्दू को विदेशी शब्दों से भर दिया।

जिस तरह आर्यसमाज के नेताओं ने हिन्दी का प्रसार किया, उसी तरह अलीगढ से एक आन्दोलन शुरू हुआ जिस ने उर्दू भाषा का प्रसार केवल मुसलमानों की भाषा के रूप में किया। अंग्रेज़ शासकों ने भी इन दोनों भाषाओं के विभाजन में भरपूर योगदान दिया। भाषा को धर्म से जोड़ा जाना उन्हीं के विभाजनकारी दिमाग़ की उपज थी। हालाँकि ग़ैर-मुस्लिम शाइरों की सूची भी बहुत लम्बी रही है जिनमें ब्रजनारायण चकबस्त, दयाशंकर कौल नसीम, रत्ननाथ सरशार, सुरूर जहानाबादी, तिलोक चंद महरूम, हरी चाँद अख़्तर और फ़िराक़ गोरखपुरी प्रमुख हैं।

हिन्दी और उर्दू, इन दोनों भाषाओं में मूल भाषा हिन्दी है। उर्दू ने व्याकरण और वाक्य-रचना हिन्दी से ली है। इसलिए मूल भाषा हिन्दी ही कही जानी चाहिए और उर्दू उसकी एक शाखा। मुहम्मद हुसैन आज़ाद द्वारा लिखित 'आबे-हयात' उर्दू काव्य पर लिखा जाने वाला पहला गद्य है और उस का पहला वाक्य यह है: "इतनी बात प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हमारी उर्दू भाषा ब्रज भाषा से निकली है"। यह बात ऐसे समय में कही गई थी जब उर्दू को फ़ारसी से जोड़ना बहुत सम्मानजनक समझा जाता था। हिन्दी-उर्दू की विभाजन प्रक्रिया पर इसी पुस्तक में आगे लिखा गया है:

"सुन्दरता एवं सौन्दर्य के रनिवास में लैला और शीरीं आ गईं। जब वे आईं तो रांझे की जगह मजनूं और फ़रहाद क्यों न आते? मजनूं और फरहद की आँखों से गंगा-जमुना तो बह नहीं सकीं, विवश हो कर जैहून और सैहून (मध्य-एशिया के दरिया) भारत में आ गये। हिमाचल और विन्ध्याचल को छोड़ कर आशिक़

लोग कोहे-बेसुतून (काकेशिया का पहाड़ जो फरहाद ने काटा था), क़स्रे-शीरीं, कोहे-अलबर्ज़ (ईरान की एक पर्वत श्रंखला) से सर फोड़ते हैं। मगर जब कोई सुरुचिपूर्ण कवि चाहता है तो यहीं के फूलों से यहाँ के मकान सजा देता है और वे अजब बाहर देते हैं" ..... (आबे-हयात, अनुवाद: जाफ़र रज़ा)

उर्दू के मशहूर शाइर व आलोचक अल्ताफ़ हुसैन हाली (1837-1914 ई०) ने "मुक़द्दमा-ए शे'रो-शाइरी" में लिखा है:

"जैसा कि विदित है, उर्दू भाषा की नींव हिंदी भाषा पर रखी गई है। उसकी समस्त क्रियाएँ, समस्त वर्ण और अधिकांश संज्ञाएँ हिन्दी से ली गई हैं, जो अरबी कविता से प्रभावित है, फिर उर्दू भाषा में संज्ञाओं का बड़ा भाग अरबी और फ़ारसी से लिया गया है। अत: उर्दू का जो कवि हिन्दी भाषा बिल्कुल नहीं जानता और केवल अरबी फ़ारसी के सहारे गाड़ी चलाता है वह मानो अपनी गाड़ी बिना पहियों के निर्दिष्ट स्थान तक पहुँचाना चाहता है और जो अरबी फ़ारसी नहीं जानता और केवल हिंदी भाषा अथवा मातृभाषा के बल पर इस भार का वहन करता है, वह एक ऐसी गाड़ी ठेलता है जिसमें बैल नहीं जोते गये। (अनुवाद: हँस राज रहबर)"

सो हाली के अनुसार उर्दू कविता एक ऐसी बैल-गाड़ी की तरह है जिसके बैल अरबी फ़ारसी हैं और पहिये हिन्दी। इस से पहले मीर तकी मीर (1723-1810 इ०) ने अपने एक शे'र में लिखा था:

क्या जानूँ लोग कहते हैं किस को सुरूरो-क़ल्ब
आया नहीं है लफ्ज़ यह हिन्दी ज़बां के बीच

मिर्ज़ा ग़ालिब ने भी अपने ख़तूत के प्रकाशित संकलन को ऊदे-हिन्दी नाम दिया था। अकबर इलाहाबादी ने भी उर्दू-हिन्दी विवाद पर अपने रंग में लिखा है:

हम उर्दू को अरबी क्यों न करें, हिन्दी को वो भाषा क्यों न करें
अख़बार चलने की ख़ातिर, मज़मून तराशा क्यों न करें
आपस में अदावत कुछ भी नहीं, पर एक अखाड़ा जारी है
जब इससे ख़ल्क़ का दिल बहले, हम लोग तमाशा क्यों न करें

बज़्म की शब मैं ने उस बुत से लड़ाई थी ज़बां
यह असर उस पर हुआ, उर्दू से हिन्दी लड़ गई

मुहम्मद इक़बाल ने भी इस विवाद को दुर्भाग्य-पूर्ण समझा और लिखा:

वां बाहम प्यार के चर्चे थे, दस्तूरे-मुहब्बत क़ाइम था
याँ बहस में उर्दू-हिन्दी है, या क़ुर्बानी या झटका है

हिन्दी और उर्दू के दरमियान फ़ासला तो बढ़ता ही जा रहा है, लेकिन इस से भी ज़ियादा गम्भीर समस्या और यह आ रही है कि दोनों भाषाओं का साहित्य उनके पाठकों से दूर होता जा रहा है। यह तो हमारी फ़िल्म-इंडस्ट्री है जिसने इन दोनों भाषाओं के विकास के लिये अधिकाधिक योगदान दिया है, वरना फ़िल्में न होतीं तो साहित्य से आम आदमी की दूरी बहुत अधिक बढ़ जानी थी। हर साहित्यकार के मुँह पर यही शब्द सुनने को मिलते हैं कि आम आदमी का साहित्य-रसास्वादन का स्तर काफ़ी गिर गया है। सच्चाई यह है कि हम साहित्यकार लोग आम आदमी की बात तो करते हैं लेकिन शब्दावली ऐसी प्रयोग में ला कर जो आम आदमी को समझ नहीं आती क्यों की उसकी भाषा आम आदमी की भाषा से बिल्कुल अलग होती है। साहित्य को भारी भरकम, कठिन शब्दों (जिनमें संस्कृत, या अरबी-फ़ारसी का तत्त्व अधिक हो) से भर देने से आप साहित्य के विद्यार्थियों या साथी साहित्यकारों को तो प्रभावित कर सकते हैं, लेकिन आम आदमी से प्रशंसा प्राप्त नहीं कर सकते। आम पाठक तो वहीं पर है जहाँ वह सालों पहले था, उसकी बोलचाल की भाषा भी वही है, केवल साहित्यकार अपने साहित्य को उससे बहुत दूर ले गये हैं। लोगों का स्वाद ग़ैर-साहित्यिक नहीं हुआ, हम साहित्यकारों ने अपने व्यंजन में या तो बहुत अधिक मीठा डाल दिया है या बहुत अधिक मसाले। हम अगर उर्दू में अधिक अरबी, फ़ारसी और हिंदी में अधिक संस्कृत की शब्दावली प्रयोग में लाते रहे तो दोनों भाषाओं के साहित्य के पाठकों की संख्या कम से कमतर होती जाएगी और हम अपना लिखा ख़ुद ही सुना करेंगे। धीरे धीरे यह हालात हो जायेगी कि हिन्दी बोलने वाले उर्दू बोलने वालों को नहीं समझ पाएँगे और उर्दू बोलने वाले हिंदी बोलने वालों की बातें नहीं समझ पायेंगे। ऐसी स्थिति से बचने के लिये ज़रूरी है कि इन दोनों भाषाओं का आन्तरिक फ़ासला दूर

कर के फिर से एक भाषा की रचना करें जिसका नाम हिन्दोस्तानी हो और जो दो लिपियों में लिखी जाये। मुंशी प्रेम चन्द ने आर्य समाज के एक वार्षिक सम्मलेन में भाषण दिया था जिसमें हिंदी-उर्दू एकता पर ज़ोर दिया गया था। उस भाषण में उन्होंने संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर विलियम मैरिन द्वारा इलाहबाद की हिन्दोस्तानी अकेडमी खोलते वक़्त हिन्दी-उर्दू के लेखकों को दी गई सलाह का हवाला दिया था। वह सलाह यह थी कि हिन्दी के लेखकों को लिखते वक़्त यह समझते रहना चाहिए कि उनके पाठक मुसलमान हैं और इसी तरह उर्दू लेखकों को यह ख़याल रखना चाहिए कि उनके क़ारी हिन्दू हैं।

अब बात यह उठती है कि जनता से जुड़ने के लिये क्या साहित्यकार आम जनता के स्तर पर आ कर ही उस स्तर का लेखन करें? यह तो अच्छे, साधारण और निम्न स्तर के साहित्य सब को एक ही रस्सी में बाँध देगा और लगभग हर आम आदमी ख़ुद को साहित्यकार मनवाने लगेगा। मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उसी भाषण में इस का जवाब भी दिया है। वह कहते हैं:

"जनता में शिक्षा इतनी कम है, समझने की ताक़त इतनी कम है कि अगर हम उसे ज़िहन में रख कर कुछ बोलना या लिखना चाहें, तो हमें लिखना और बोलना बंद करना पड़ेगा। यह जनता का काम है कि वह साहित्य पढ़ने और गहन विषयों को समझने की ताक़त अपने में लाये। लेखक का काम तो अच्छी से अच्छी भाषा में ऊँचे से ऊँचे विचारों को प्रकट करना है। अगर जनता का शब्दकोष सौ-दो सौ निहायत मा'मूली रोज़मर्रा के काम के शब्दों के सिवा और कुछ नहीं है, तो लेखक कितनी ही सरल भाषा लिखे, जनता के लिये वह कठिन ही होगी। इस विषय में हम इतना अर्ज़ करेंगे कि जनता को इस मानसिक दशा में छोड़ने की ज़िम्मेदारी भी हमारे ऊपर ही है। हम में जिन के पास इल्म है, और फ़ुर्सत है, यह उनका फ़र्ज़ था कि अपनी तक़रीरों से जनता में जागृति पैदा करते, जनता में ज्ञान के प्रचार के लिये पुस्तकें लिखते और सफ़री कुतुबख़ाने (पुस्तकालय) काइम करते। हम में जिन्हें मक़दरत (सामर्थ्य) है वह मदरिसे खोलने में लाखों रुपए दान करते हैं। मैं यह नहीं चाहता कि क़ौम को ऐसे मुह्सिनों को धन्यवाद न देना चाहिए, मगर क्या ऐसी संस्थाएँ न खुल सकती थीं और क्या उनसे क़ौम का कुछ कम उपकार होता जो भाषणों और पुस्तकों

से जनता में साहित्य का प्रचार करतीं और उनको सभ्यता की ऊँची सतह पर लातीं?"

प्रस्तुत संकलन "उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती हिन्दी ग़ज़लें" दूसरे संकलनों से भिन्न है और यह भिन्न इस लिये है कि इस में भाषा का ग्राफ़ संस्कृत में लिपटी हुई शुद्ध हिन्दी से ले कर आसान बोलचाल की हिन्दी को छूता हुआ कभी कभी उर्दू की इज़ाफ़तों तक पहुँच गया है। उदाहरण के तौर पर:

धवल मुखचन्द्र पर जब श्याम कुंतल नृत्य करते हैं
तो यों लगता है ज्यों लहरा के बादल नृत्य करते हैं

सभा सावन सजाये और पावस हो पखावज पर
गगन कहता है तत् तत् थेई जल थल नृत्य करते हैं

सरोवर में कभी हंसों के जोड़े का प्रणय देखो
ह्रदय जिन के हों निच्छल वे ही निर्मल नृत्य करते हैं

कोई संकल्प कर ले तो असम्भव कुछ नहीं प्रियवर
यहाँ चरणों से वंचित शीश के बल नृत्य करते हैं

पतंजलि जैसा जब कोई धरा पर जन्म लेता है
मग्न हो जाते हैं बरगद औ' पीपल नृत्य करते हैं

भले अमृत गटक कर भी जगत उलझा रहे लेकिन
जगत के मित्र 'शिव' पी कर हलाहल नृत्य करते हैं

–नवीन सी चतुर्वेदी

उपरोक्त ग़ज़ल विषय-वस्तु, तकनीक, सार्थकता और स्पष्ट अभिव्य क्ति की हर कसौटी पर खरी उतरती है और इस का काव्यात्मक सौन्दर्य और शब्दों का चयन इसे 'ग़ज़ल' के चरम शिखर पर पहुँचा रहा है:

देखी जो स्वर्गलोक में खोई अनामिका
आँखों में रूप राशि है होठों पे गीतिका
खोये हुए हैं दोनों किसी और लोक में
प्रेमी हैं या कि योगी हैं क्षण है समाधि का

–अनिल गौड़

लगता है झूठ सच की ज़रा भी समझ नहीं
चारण कथा को आपने इतिहास लिख दिया
जिस शे'र से पहचानते हैं लोग अब मुझे
वह शे'र तो बस मैंने अनायास लिख दिया

–अरविन्द असर

जब जब मुझे लगा कि सम्भलने लगी हूँ मैं
पैदा नई सी गर्दिशे-हालात हो गई

–अर्चना जौहरी

वही है शौक़े-आज़ादी, जो पिंजरे को गिरा डाले
गगन को छू न जो पाये, परिंदे का वो पर कैसा

उसी का नाम दुनिया को हमेशा याद रहता है
जो औरों के न काम आये भला वो भी बशर कैसा

–पूर्णिमा सुमन

(इस ग़ज़ल के अन्य शे'रों के क़ाफ़िये भी लगभग उर्दू शब्दावली से ही हैं, और अच्छी तरह निभाए गये हैं जैसे नामाबर, हुनर, असर आदि)

कितने रहस्य गोपन गतिमान उँगलियों में
जैसे छुपी कलाएँ चालाक उँगलियों में

–डॉ. गीता विश्वकर्मा 'नेह'

ग़ज़ल कहना तलवार की धार पर चलने जैसा काम है। ग़ज़ल की रवानगी ही अच्छे शे'र की कसौटी होती है। अगर आप पढ़ते पढ़ते किसी शब्द पर अटक जाते हो या रवानगी क़ाइम रखने की ख़ातिर किसी शब्द का उच्चारण

बिगाड़ना पड़ता हो तो समझो कि शे'र वज़न से बाहर हो गया है। उर्दू में तो कुछ लफ़्ज़ों के मुखफ़्फ़फ़ तय कर दिये गये हैं। शाह, सियाह, राह, माह आदि को शह, सियह, रह, मह, ख़ामोशी को ख़मोशी या ख़ामशी, जान, ख़ून, गुलिस्तान, आदि को जाँ, ख़ूँ, गुलिस्ताँ आदि के रूप में लिखा जा सकता है। हिन्दी में यह सहूलत किस हद तक है कह नहीं सकते।

इस संकलन में लगभग सभी रचनाएँ स्तरीय हैं और पाठकों से प्रशंसा प्राप्त करने के लिये सक्षम हैं। बहुधा कवियों ने अपनी ग़ज़लों का सम्पूर्ण हिन्दीकरण न कर के उसे सहज और सरल भाषा से विभूषित किया है और इसी सहज और सरल भाषा को आप हिन्दोस्तानी कह सकते हो। मेरा यह मानना है कि हिन्दी-उर्दू का पुनर्मिलन कराने के लिये ग़ज़ल एक सशक्त माध्यम है। अंत में मैं श्री रमेश कँवल को उनकी इस ताज़ा कोशिश पर वधाई देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन के द्वारा संकलित हिन्दी ग़ज़लों का यह संग्रह हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाओं में दूरी बढ़ाने का काम न करे बल्कि इन्हें और समीप ले आये। आमीन !

ज़ाहिद अबरोल
सम्पादक, जदीद फिक्रो-फ़न (उर्दू त्रैमासिक पत्रिका)
"गुलरुख़", निकट डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, नंगल रोड,
ऊना (हिमाचल प्रदेश)-174303; मो०9816643939

"उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती हिन्दी ग़ज़लें" कितनी मुक्त!-अशोक 'अंजुम'

ग़ज़ल की सैकड़ों साल पुरानी परंपरा में उर्दू (अरबी-फ़ारसी) इसकी रग-रग में बहती आ रही है। तब उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती ग़ज़लें से मतलब?

रमेश कँवल जी ने पिछले एक-डेढ़ दशक के बीच ग़ज़ल पर बड़ा और बहुत बड़ा काम किया है, ठोस काम किया है। आपकी संपादित ग़ज़ल-पुस्तकों में आपका श्रम सहज ही दिखाई देता है। ये पुस्तकें प्रमाणित करती हैं कि आपके काम कभी सतही नहीं रहे।

आपके ग़ज़ल के प्रति समर्पण को देखते हुए यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि आप ग़ज़ल के मिज़ाज से, उसकी परंपराओं से, उसकी अंतरात्मा से भली भांति परिचित हैं।... कि भाषाई ताक़त का आपको हर तरह भान है।

आज जबकि हिंदी भाषा की गंगा से अन्य-अन्य भाषाई नदियाँ जुड़कर उसे जीवंत बना रही हैं, तब शुद्ध हिंदी अर्थात संस्कृतनिष्ठ हिंदी (तत्सम शब्दावली) का पूर्णतया प्रयोग करते हुए ग़ज़ल रचना एक भाषाई-व्यायाम का माध्यम बन सकती है, ऐसा मेरा मानना है। और इस प्रकार यह भी संभव है कि ग़ज़ल अपने मूल चरित्र को खो बैठे। तब मैं यहाँ रमेश कँवल जी के इस अनुष्ठान के समर्थन में यही कहना चाहूँगा कि उर्दू के सम्मोहन से मुक्ति का अर्थ यह कदापि नहीं है कि जो उर्दू-अरबी-फ़ारसी के शब्द आम आदमी के बीच बहुतायत में प्रयोग होते हैं, जैसे-ज़िन्दगी, क़ुदरत, क़िस्मत, ख़ुशी, ग़म, असर, कुर्सी, किताब, दवा, दुकान, सफ़र, फ़ायदा, मोहब्बत, ख़्वाब आदि-आदि इन और ऐसे हिंदी में घुले-मिले शब्दों से ग़ज़ल को मुक्त करना है!

उर्दू के सम्मोहन से मुक्त ग़ज़लें अर्थात ऐसी ग़ज़लें जिनमें उर्दू-अरबी-फ़ारसी के भारी-भरकम शब्दों, क्रिया पदों का प्रयोग न किया गया हो। जहाँ सहजता से प्रचलित उर्दू शब्द आ रहा हो-स्वागत है! लोगों के तरह-तरह से विरोध के बावजूद प्रस्तुत किताब में रमेश कँवल जी ने ऐसी ही लगभग 200 ग़ज़लों को जुटाया है। किताब की ग़ज़लों का चयन और प्रस्तुतिकरण सभी

सवाल उठाने वाले विद्वानों की जिज्ञासा को शांत करते हुए रमेश कँवल जी के उद्देश्य तक पाठकों को ले जाने का उपक्रम सिद्ध होंगे।

चलिए कुछ ऐसे उदाहरण देखते हैं जहाँ सहजता से प्रयुक्त उर्दू (अरबी-फ़ारसी) तो है, किंतु उसके प्रति सम्मोहन के भाव का अभाव है-

नये समाज की ख़ातिर नई सदी के लिए
नई निगाह ज़रूरी है ज़िन्दगी के लिए

-अनिल गौड़

दिखावे की प्राथमिकता के माहौल में अशोक कुमार 'नीरद' का यह मतला देखें-

गुल हुए हैं गौण चर्चित हो गया गुलदान है
पा रही तलवार से ज़्यादा महत्ता म्यान है

'हिस्सा' भले ही अरबी भाषा का हो, लेकिन अब इसे हिंदी से कैसे अलग करें-

अलग-थलग-सा बैठा हूँ
वैसे घर का हिस्सा हूँ

-ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'

उम्मीद है कि 'उम्मीद' फ़ारसी का होकर भी हिंदी का माना जाएगा-

घटा काली है छाई आसमानों में
जगी उम्मीद है फिर से किसानों में

-कविता विकास

'हक़दार' पर यूँ तो मूल रूप से अरबी-फ़ारसी भाषा का हक़ है-

जो रक्खे शक्ति का हथियार होगा
वो अपनी भूमि का हक़दार होगा

-कालजयी घनश्याम

कृष्ण सुकुमार फ़ारसी के 'बेहतर' का हिंदी ग़ज़ल में बेहतर प्रयोग कर रहे हैं-

जाने कितने ऐसे अवसर चूक गए
जिनको जी सकते थे बेहतर, चूक गए

हम फ़ारसी 'रोज़' का रोज़ाना ख़ूब प्रयोग करते हैं, तब ग़ज़ल में उससे कैसे बच पाएँगे-

रोज़ ढलकर भी नहीं इक पल ढला सूरज
घाटियों से चोटियों तक फिर चला सूरज

-गरिमा सक्सेना

'मौसम' भले ही अरबी हो, लेकिन हिंदी को उल्लसित करने में उसकी महती भूमिका है-

फूल का, गंध का, रंग का, रास का
हर तरफ़ सिर्फ़ मौसम है उल्लास का

-डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'

यूँ 'बेवफ़ा' उर्दू-फ़ारसी से आया है, लेकिन अब इससे हिंदी के प्रति वफ़ा की उम्मीद है-

हमें मालूम है वो बेवफ़ा है
मगर ये दिल उसी का हो गया है

-डॉ. ज़ीनत एहसान क़ुरैशी

'रद्दो-बदल' में परिवर्तन कैसे हो?

व्यवस्था में रद्दो-बदल चाहते हैं
हम अपनी समस्या का हल चाहते हैं

-डॉ. दिनेश त्रिपाठी 'शम्स'

अरबी भाषा के 'इंसान' और 'मुश्किल' के साथ मुश्किल ये है कि अब इन्हें हिंदी से अलग नहीं किया जा सकता-

पग-पग पर हैवान मिलेंगे
मुश्किल से इंसान मिलेंगे

-डॉ.मेहता नगेन्द्र सिंह

भले ही 'वादा' हिंदी में किया जाए लेकिन आया ये फ़ारसी से है-

फिर आने का 'वादा' करके पतझर में
हाथ छुड़ाकर चला गया वो पल भर में

-आलोक यादव

भाषा भले ही हिंदी हो लेकिन 'ज़बां'-'सितारे' तो फ़ारसी हैं-

सताती है बहुत लड़की मुझे दो चोटियों वाली
सितारे जिसके आँचल में ज़बां है मोतियों वाली

-डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'विनोद'

जब रास आ गई हो तो हिंदी अन्य भाषाओं की 'सुहबत' से कैसे बचे-

तेरी चाहत भली-भली होगी
तेरी सुहबत में हर ख़ुशी होगी

-डॉ. (प्रोफे.) सुधा सिन्हा

दिनेश सिंदल फ़ारसी 'ज़िन्दगानी' की 'ख़बर' ले रहे हैं-

ना आनी की न जानी की ख़बर है
हमें बस ज़िन्दगानी की ख़बर है

लेकिन अरबी 'ख़बर' तो महत्वपूर्ण यहाँ भी है-

कटघरे में सच खड़ा है कुछ ख़बर है आपको
झूठ उस पर हँस रहा है कुछ ख़बर है आपको

-राजमूर्ति सौरभ

'ख़त' भले ही अरबी भाषा का हो लेकिन उसके पीलेपन का नशा हिंदी में चढ़ रहा है-

जब ख़त पीले हो जाते हैं
और नशीले हो जाते हैं

-दुर्गेश कुमार 'शाद'

‘मुफ़्त’ भी फ़ारसी से हिंदी तक मुफ़्त में पहुँच गया है-

मुफ़्त मिली पहचान नहीं हूँ
मुँह माँगा वरदान नहीं हूँ

-रमेश कँवल

‘हौसला’ भले अरबी का हो लेकिन ‘ज़िन्दगी’ की ‘जंग’ फ़ारसी है और ग़ज़ल हिंदी की-

हौसला रख ले ज़रा इक बार तू
ज़िन्दगी की जंग यूँ ना हार तू

-वंदना बाजपेई

और ज़िन्दगी का ये रंग सत्यम भारती के अनुसार-

ज़िन्दगी भर हाथ वे मलते रहे
ले नहीं पाए जो सच्चे फ़ैसले

अरबी का ‘लहज़ा’ हिंदी में पूरे हिंदीपन के साथ है-

वो जो मुझमें रहता और
होता मेरा लहज़ा और

-विज्ञान व्रत

सुभाष पाठक ‘ज़िया’ भी फ़ारसी की ‘कश्ती’ में चढ़कर हिंदी के साथ संतुलन बना रहे हैं-

हमने मस्तिष्क खोया है, मन खो दिया
कश्तियाँ तो चढ़े संतुलन खो दिया

सोनिया वर्मा के पापा का सपना भले ही हिंदी में हो लेकिन ‘साल’ तो फ़ारसी के हैं-

अपना सपना तोड़ रहे हैं कितने हाथों से
पापा ऐसा करते आए कितने सालों से

पुस्तक में ऐसे भी ग़ज़लकार हैं जिन्होंने उर्दू-अरबी-फ़ारसी के प्रचलित शब्दों से पूर्णतया मुक्त रहने का प्रयास किया है। ऐसे ग़ज़लकारों की ग़ज़लों के कुछ मतले प्रस्तुत हैं-

हाल जो तुमने पूछा होता
दुख अपना भी हल्का होता

-दर्द गढ़वाली

मन के भीतर उथल-पुथल है
नैनों का उद्गार सजल है

-द्रौपदी साहू

यूँ नहीं मरती प्रबल संभावना
आप जो करते सही आलोचना

-धर्मेंद्र गुप्त 'साहिल'

उसे पाया न जिसका पात्र हूँ मैं
बहुत कह लो अभागा पात्र हूँ मैं

-केशव शरण

क्यों पहनें वे लोग वसन
जिनका बिकता नंगापन

-आनंद पांडे 'तन्हा'

इस बात को लेकर दुखी है इन दिनों अंत:करण
उसकी बहुत अवहेलना करने लगा है आचरण

-संजीव प्रभाकर

नदिया की कल-कल छल-छल में
डूब गए दुख निर्मल जल में

-डॉ. पुरुषोत्तम यक़ीन

हम कहें कैसे अपनी व्यथा
दुख भरी है हमारी कथा

-डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

हो रहा है पाप का कुछ इस तरह पंजीकरण
पुण्य का कोई नया मिलता नहीं है उद्धरण

-डॉ. विकास सोलंकी

जड़ों से दूर हैं लेकिन वहीं पर लौट जाना है
इसी मिट्टी से नाता है जहाँ घर है, घराना है

-हिमकर श्याम

प्रीत में हर बात को विपरीत कहते हैं
मन चुराता है उसे मनमीत कहते हैं

-नवीन सी. चतुर्वेदी

नेह, करुणा, शांति यद्यपि सभ्यता का सार है
शत्रु यदि शठ हो तो अंतिम लक्ष्य फिर संहार है

-भूपेंद्र सिंह 'होश'

आने वाले प्रतिक्षण का खुलकर अभिनंदन करता हूँ
भीतर क्रंदन है पर ऊपर सुख का मंचन करता हूँ

-महेश कुमार 'कुलदीप'

इतना अभिनय ठीक नहीं है
हर पल संशय ठीक नहीं है

-राजेंद्र तिवारी

हर अंधेरी वीथिका को जगमगाना चाहता हूँ
गीत कोई प्रीति का मैं गुनगुनाना चाहता हूँ

-वसंत जमशेदपुरी

हिंदी ग़ज़ल केवल भाषा से ही हिंदी ग़ज़ल नहीं होती, बल्कि प्रतीक, बिम्ब, उपमान, अलंकार, परिवेश आदि और बहुत से तत्व हैं जो ग़ज़ल में प्रयुक्त होकर उसे पारंपरिक उर्दू-फ़ारसी ग़ज़ल से अलग पहचान देते हैं। उर्दू के सम्मोहन से मुक्त ग़ज़लों की इस किताब में ग़ज़लकारों ने प्रचलित उर्दू-अरबी-फ़ारसी के शब्दों का भले ही खुलकर प्रयोग किया हो तथापि इन्हें इनकी प्रयोगधर्मिता के आधार पर हिंदी ग़ज़ल ही कहा जाएगा। रमेश कँवल जी का

यह अभियान निश्चित रूप से हर तरह सराहनीय, अभिनंदनीय है। मेरा विश्वास है इस किताब से हिंदी ग़ज़ल की पहचान और भी अधिक स्पष्ट और पुख़्ता होगी।

फाल्गुन शुक्ल 6 संवत 2082
23 फ़रवरी, 2026
स्ट्रीट-2, चंद्रविहार कॉलोनी
(नगला डालचंद) क्वार्सी बायपास,
अलीगढ़-202002 (उ.प्र.)

अशोक 'अंजुम'
मोबाइल–925 877 9744

नोट: अशोक 'अंजुम' साहब ने जिन शब्दों को यथा

हिस्सा, उम्मीद, हक़दार, बेहतर, रोज़, मौसम, बेवफ़ा, रद्दो-बदल, इंसान, मुश्किल, वादा, ज़बाँ, सितारे, सुहबत, ख़बर, ज़िंदगानी, ख़त, मुफ़्त, हौसला, ज़िंदगी, लहज़ा, ज़िया, कश्ती, साल शब्दों पर अरबी-फ़ारसी का ठप्पा लगा बताया है उसे हिन्दी भाषा ने कब का आत्मसात कर लिया है।

अत: अब इनका कोई सम्मोहन नहीं रह गया है (संपादक)

हिन्दी ग़ज़लों में हिन्दी भाषा का अवदान-
डॉ. सीमा विजयवर्गीय

जब एक व्हाट्सएप ग्रुप में सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार मान्यवर रमेश कँवल साहब ने अपना विचार रखे, 'उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती हिन्दी ग़ज़लें-एक अभिनव प्रयोग' तो ग्रुप में बहुत हलचल मच गई। कुछ लोग इसके पक्ष में अपने विचार रख रहे थे तो कुछ लोग विपक्ष में खड़े हो गए। कुछ लोगों ने उन पर धर्मान्धिता का भी आरोप लगाया उनका मानना था कि उर्दू के बिना ग़ज़ल कैसे संभव है?

कालमार्क्स के 'भौतिक द्वंद्वात्मक सिद्धांत' के अनुसार 'दो विरोधी शक्तियों के संघर्ष से तीसरी शक्ति विकसित होती है। बाद में तीसरी शक्ति का संघर्ष चौथी से होता है और और उससे पाँचवी शक्ति विकसित होती है इसी क्रम में नई-नई शक्तियों का विकास होता रहता है।'

कहने का तात्पर्य है दो विपरीत विचारों से एक नवीन विचार का जन्म हुआ। इस ग़ज़ल-संग्रह की नींव यहीं से बनने लगी। जिसकी प्रत्यक्षदर्शी मैं भी रही।

तमाम आलोचनाओं-प्रत्यालोचनाओं के बीच एक महत्त्वपूर्ण बिंदु निकल कर सामने आया कि 'उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती हिन्दी ग़ज़लें' इस बिंदु पर भी विचार किया जाए। किसी निष्कर्ष पर पहुँचे इससे पहले हमें हिंदी की व्युत्पत्ति के बारे में जानना होगा-

हिंदी शब्द 'हिंद' से बना है इसमें 'ईक' प्रत्यय लगने तथा 'क' का लोप हो जाने से 'हिंदी' शब्द बना है। ईरानियों ने भारत आने पर अर्थात सिंधु प्रांत में आने पर सिंध को हिंद तथा यहाँ की भाषा को हिंदी नाम दिया अतः 'हिंदी' शब्द 'सिंधी' शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है। भाषा विज्ञान के निर्णय के अनुसार फ़ारसी में 'स' का 'ह' और 'ध' का 'द' हो जाता है। इस नियम के अनुसार

सिंधु का हिंदु हुआ। आरंभ में सिंधु प्रदेश को हिंदु कहा गया कालांतर में संपूर्ण देश को ही हिंदु, हिंद और हिंदुस्तान कहने लगे। वस्तुतः संस्कृत भाषा, प्राकृत, पाली और अपभ्रंश से होती हुई हिंदी अपने प्रवाह में आगे बढ़ती रही। क्षेत्र की दृष्टि से समस्त उत्तर भारत की भाषा को हम हिंदी भाषा कहते हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी अपना विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान रखती है वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ठ, पुरानी हिंदी का सफर तय करती हुई हिंदी का वर्तमान स्वरूप हमारे सामने आता है और इसके प्रमुखता दो रूप देखने को मिलते हैं पश्चिम हिंदी और पूर्वी हिंदी।

शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिम हिंदी में-ब्रज, बुंदेली, बाँगरू खड़ी बोली, कन्नौजी और अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित पूर्वी हिंदी में अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी भाषा आती है

साथ ही दो अन्य भाषा जिनका संबंध हिंदी से है राजस्थानी और बिहारी है। पहाड़ी को भी हिंदी की उपभाषा माना गया है इस तरह से हिंदी की पाँच उपभाषाएँ हैं। पश्चिम हिंदी, पूर्वी हिंदी राजस्थानी, बिहारी पहाड़ी और इसे निकली हुई भाषाएँ-ब्रजभाषा, बुंदेली, बाँगरू, खड़ी बोली, कन्नौजी, अवधी, बघेली छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी बिहारी से मैथिली, मगही, भोजपुरी बोलियाँ आती हैं। साथ ही सिंधी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, बंगला, असमिया, उड़िया सभी हिंदी से जुड़ी हैं हिंदी का शब्द-विधान संमृद्ध करती हैं।

हिंदी की मुख्यतः तीन शैलियाँ हैं-

1. हिंदी या हिंदुस्तानी

2. उरदू

3. हिन्दुई

1. हिंदी या हिंदुस्तानी-खड़ी बोली में जब बोलचाल के तत्सम तद्भव देशज अरबी फ़ारसी, व तुर्की का प्रयोग होता है तो उसे बोलचाल की हिंदी या हिंदुस्तानी कहते हैं।

जब बोलचाल की हिंदी या हिंदुस्तानी में संस्कृत के अल्प प्रचलित शब्द अर्थात कठिन तत्सम शब्दों का बहुतायत प्रयोग होता है तो उसे हिंदी या

साहित्यिक हिंदी कहते हैं।

2. जब बोलचाल की हिंदी में अरबी फ़ारसी तुर्की के कठिन शब्दों का बहुतायत प्रयोग होने लगे तो वह उर्दू कहलाती है।
3. हिन्दुई-हिंदी का प्राचीनतम रूप जिसमें संस्कृत शब्द अपेक्षाकृत अधिक थे अमीर खुसरो ने इसका प्रयोग खालिक बारी में किया है।

स्पष्ट है कि साहित्यिक हिंदी में तत्सम शब्दावली तद्भव शब्दावली का आधिकारिक प्रयोग देखने को मिलता है और विदेशी शब्दों का प्रयोग बहुत कम जिसमें उर्दू भी शामिल है। कहने का का तात्पर्य हिंदी-संस्कृत पालि प्राकृत अपभ्रंश, पुरानी हिंदी और तमाम 22 हिंदी की बोलियाँ। इन सबको मिलाकर हिंदी का शब्द-विधान इतना समृद्ध है कि उसे अन्य भाषाओं की कोई आवश्यकता नहीं है और अन्य भाषाओं के शब्द वही लिए जाएँगे जो हिंदी में रचबस गए हैं। हिंदी ने अपनी प्रकृति के अनुसार उनको आत्मसात कर लिया है। उर्दू पर भी यही बात लागू होगी।

अब हम हिंदी के शब्द-विधान पर विचार करेंगे-

उत्पत्ति के आधार पर हिंदी भाषा के शब्दों को 5 भागों में बाँटा जा सकता है-

1. तत्सम शब्द-किसी भाषा में प्रयुक्त उसकी मूल भाषा के शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं हिंदी की मूल भाषा संस्कृत के वे शब्द जो हिंदी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं उन्हे तत्सम शब्द कहते हैं जैसे-अट्टालिका, अर्पण, शून्य, उष्ट्र, क्षेत्र आदि।

2. तद्भव शब्द-उच्चारण की सुविधानुसार संस्कृत के वे शब्द जिनका हिंदी में रूप परिवर्तित हो गया हिंदी में तद्भव शब्द कहलाते हैं।जैसे-चंद्र से चाँद अग्नि से आग, जिह्वा से जीभ आदि शब्द तद्भव शब्द कहलाते हैं

3. देशज शब्द-किसी भाषा में प्रचलित हुए शब्द जो क्षेत्रीय जनता द्वारा आवश्यकतानुसार गढ़ लिए जाते हैं देशज शब्द कहलाते हैं। साथ वे शब्द भी देशज की श्रेणी में आते हैं जिनके स्रोत का कोई पता नहीं हिंदी में संस्कृतेतर भारतीय भाषाओं से भी शब्द आ गए हैं जैसे उटपटाँग, उधम, खिड़की, खुरपा, गाड़ी, गड़गड़ाना, ढक्कन, ढाँचा बटलोई आदि

4. **विदेशी शब्द-**इसमें अंग्रेजी, अरबी, फ़ारसी, पुर्तगाली, तुर्की, फ्रेंच, चीनी, डच, जर्मनी, जापानी, तिब्बती, रूस, यूनानी आदि भाषाओं के शब्द हैं जो हिंदी में आ गए हैं।

5. **संकर शब्द-**हिंदी के वे शब्द जो दो अलग-अलग भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बना लिए गए हैं। वह संकर शब्द कहलाते हैं जैसे अग्नि बोट, अग्नि संस्कृत का है वोट अंग्रेजी का। इसीतरह टिकटघर टिकट अंग्रेजी का है घर हिंदी का।

इस तरह साहित्यिक हिंदी में तत्सम तद्भव और हिंदी की बोलियाँ जो 22 बोलियाँ संविधान द्वारा स्वीकृत है उन शब्दों की प्रधानता है साहित्यिक हिंदी में विदेशी भाषाओं के शब्द तो है लेकिन अल्प मात्रा में प्रयोग किए जाते हैंऔर उर्दू चूँकि विदेशी भाषा के अंतर्गत मानी गई है हिंदी में उसका प्रयोग अत्यल्प मात्रा में हुआ है और होना भी चाहिए

इस तरह प्रसिद्ध भाषाशास्त्री व्याकरणाचार्य श्री मोतीलाल विजयवर्गीय जी का मानना है कि-'हिंदी में हम आवश्यकतानुसार उन विदेशी शब्दों प्रयोग करें जो आम बोलचाल में प्रचलित हो गए हैं जो कठिन शब्द है या जिनको समझने के लिए यदि हमें शब्दकोशों का प्रयोग करना पड़े तो ऐसे शब्दों को हमें त्याग देना चाहिए। हिंदी की अपनी प्रकृति है हिंदी में अपनी प्रकृति के अनुसार ही शब्दों को आत्मसात किया है।'

चूँकि राजनीतिक परिवेश ऐसा रहा कि एक लंबे समय तक, कई शताब्दियों तक मुगल साम्राज्य रहा इसलिए उर्दू के बहुत से शब्द हिंदी में आ गए हैं लेकिन हमें हिंदी और उर्दू की प्रकृति समझनी होगी। दोनों की प्रकृति अलग-अलग है। हिंदी की अपनी प्रकृति है हिंदी का अपना शब्द-विधान है हिंदी की अपनी विशेषता है। हिंदी का अपना व्याकरण है। हिंदी का अपना छंदविधान है। हिंदी का शब्द-विधान पर्याप्त समृद्ध है और अपनी भावाभिव्यक्ति में पूर्णतः सक्षम है अतः हम अत्यल्प मात्रा में विदेशी शब्दों का प्रयोग करें और उन्हीं शब्दों का प्रयोग करें जिनको हिंदी ने सहज रूप में आत्मसात कर लिया है जो हमारी बोलचाल में सहज हो गए हैं। सच तो ये है उर्दू, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं

के वर्चस्व के कारण हिंदी की अस्मिता पर जो ख़तरा मंडरा रहा है उससे हमें बचना है।

यह बात साहित्य की सभी विधाओं के साथ-साथ ग़ज़ल में भी आत्मसात करनी चाहिए क्योंकि ग़ज़ल की भाषा विषयक दो तरह के विचार हैं-कुछ लोगों का मानना है कि यह विधा अरबी-फ़ारसी से है तो अत्यधिक मात्रा में अरबी-फ़ारसी शब्दों का या उर्दू का अत्यधिक मात्रा में प्रयोग किया जाना चाहिए।

दूसरे विचार में-क्योंकि हम हिंदी भाषा क्षेत्र से हैं या हमारी मुख्य भाषा, राष्ट्रभाषा जब हिंदी है तो हम हिंदी का ही अधिकाधिक प्रयोग करें क्योंकि ग़ज़ल भी एक साहित्यिक विधा है इसलिए हम साहित्यिक भाषा का ही प्रयोग करेंगे और हिंदी की साहित्यिक भाषा से तात्पर्य यही है कि हिंदी में तत्सम, तद्भव शब्दों की प्रधानता हो न कि उर्दू की। ग़ज़ल में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके हिंदी के प्रति सम्मान व्यक्त कर सकते हैं।

इस दृष्टि से रमेश कँवल साहब द्वारा संपादित यह ग़ज़ल-संग्रह अपने आप में अद्वितीय है तथा इसका मंतव्य भी यही है कि हिंदी का अधिकाधिक संरक्षण हो, विकास हो। हिंदी अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचे तथा विश्वव्यापी हो। हिंदी के प्रति हमारा लगाव ऐसे ही बना रहे। हिंदी का विकास-क्रम सदियों का विकास है और यह क्रम सदियों तक ऐसे ही आगे बढ़ता रहे। इस विकास-क्रम को मान्यवर रमेश कँवल साहब जैसे महान व्यक्तित्व ने इस ग़ज़ल-संग्रह के माध्यम से और आगे बढ़ा दिया है जो हिंदी ग़ज़ल विधा में मील का पत्थर साबित होगा।

कोटि कोटि आभार

सादर प्रणाम सर इस अद्वितीय योगदान के लिए

डॉ. सीमा विजयवर्गीय
मोबाइल 707 371 3013

2/84, स्कीम-10 बी,
अलवर, राजस्थान
पिन-301001

"उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती हिन्दी ग़ज़लें" एक अभिनव प्रयोग- रमेश 'कँवल'

"उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती हिन्दी ग़ज़लें"-ग़ज़ल संग्रह के लिए जब मैंने दोस्तों से ग़ज़लें भेजने का अनुरोध किया तो मेरे समक्ष अनेक चुनौतियाँ खड़ी हो गईं। मैंने उर्दू ग़ज़लें कहने के लिए बाक़ायदा उर्दू की तालीम प्राप्त की। उर्दू लिपि सीखी। और जब "उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती हिन्दी ग़ज़लें" पर काम शुरू किया तो मुझे पता चला कि हिन्दी एक स्वतंत्र भाषा नहीं है बल्कि यह देश और विदेश की कई भाषाओं का समन्वित रूप है। कुर्सी को हिन्दी में क्या लिखेंगे? (आर. पी. घायल)

ग़ज़ल ग़ज़ल होती है। ग़ज़ल की भाषा भी ग़ज़ल की एक विशेष भाषा होती है। वह न हिंदी होती है न उर्दू। ग़ज़ल को ग़ज़ल ही रहने दें। ग़ज़ल को धार्मिक नज़रिए से न देखें। (राकेश शर्मा)

ऊर्दू शब्द विहीन होकर ग़ज़ल क्यों गीतिका क्यों नहीं? ग़ज़ल ऊर्दू अदब की विधा है और मात्रापतन की विशेष अनुमति है। हिन्दी शब्दों का मात्रापतन कैसे? छंद शास्त्र मे अनुमति कदापि नहीं। (शुभचन्द्र सिंहा)

आप तो स्वयं उर्दू के शौकीन रहे हैं मित्र-हिंदी और उर्दू हिन्दुस्तान की वो दो भाषाएँ हैं जो लिखी तो विभिन्न लिपियों में जाती हैं पर बोली एक जैसे जाती हैं-विश्व की और कोई भाषाएँ ऐसी नहीं हैं। (विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ')

क्या उर्दू शब्दों से बचा जा सकता है? दैनिक जीवन में उर्दू शब्दों के उपयोग से एक दिन बचकर दिखाइए। न जाने हिन्दी-उर्दू को अलग समझना कब बंद करेंगे आप लोग। (फूल चंद गुप्ता)

रमेश कँवल जी आज जो शायरी कि दुनिया में ईज़्जत है वो उर्दू शब्दों के कारण ही है- (बेनाम गिलानी)

मेरे एक मित्र ने कहा कि यह असंभव बात है और किसी भाषा से नफरत क्यों करनी (हर्ष अदीब)

एक मित्र ने कहा कि अपने तो उर्दू में ग़ज़लें लिखते हैं और अपनी किताबों का रसमे-अजरा उर्दू अकादमी में कराते है।मारुफ़ शायर कहाते हैं (अता रहमान अता)

आपकी यह मुहिम समझ नहीं आई सर। आपकी ग़ज़लों में तो उर्दू का बहुत प्रयोग होता है फिर अचानक ग़ज़ल में उर्दू मुक्त हिंदी की पैराकारी किसलिए? ये भाषाएँ इतनी मिलीजुली हैं कि अब इनसे शब्दों को पृथक करने में ग़ज़ल की तो आत्मा ही मर जाएगी। हाँलाकि ये तमाम बातें आप बेहतर समझते हैं फिर भी यह अजीब मुहिम क्यों? (राजकुमार राज़)

इस प्रकार अनेक प्रकार के प्रश्न उठाए गए मुझ पर धार्मिक उन्माद फैलाने का भी आरोप लगा।

अब तक मैं हिन्दी को अति समृद्ध भाषा के रूप में जानता था। तो इस भाषा में बिना उर्दू-फ़ारसी के शब्दों के प्रयोग के ग़ज़लें नहीं कही जा सकती हैं?

मेरी मान्यता है कि हिदी एक समृद्ध भाषा है। हिंदी के शब्द-विधान पर ध्यान दें तो हिंदी में अवेस्ता, वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली प्राकृत अपभ्रंश, अवहट्ट देशज भाषाएँ, अरबी-फ़ारसी, अंग्रेजी, जापानी आदि विदेशी सभी भाषाओं ने अपने ढंग से योगदान दिया है,

हिन्दी भाषा में अनेक **विदेशज (आगत)** शब्द समाहित हुए हैं, जो उर्दू, फ़ारसी, अरबी, तुर्की आदि भाषाओं से आए हैं और अब सामान्य बोलचाल का हिस्सा बन गए हैं। यहाँ कुछ प्रमुख उदाहरण दिए जा रहे हैं:

अरबी मूल के शब्द

अक़्ल (बुद्धि)	असर (प्रभाव)	इमारत (भवन)
ईमान (धर्म-विश्वास)	औलाद (संतान)	क़र्ज़ (ऋण)
किताब (पुस्तक)	कुर्सी (आसन/सीट)	ख़बर (समाचार)
जहाज (नौका/विमान)	तक़दीर (भाग्य)	तारीख़ (इतिहास/तिथि)

दवा (औषधि)	दुकान (व्यापार स्थल)	नतीजा (परिणाम)
फ़ायदा (लाभ)	फ़ैसला (निर्णय)	मुसाफ़िर (यात्री)

फ़ारसी मूल के शब्द

1. बाज़ार दरवाज़ा दीवार जाम (प्याला)
2. पैग़ाम (संदेश) रंग सफ़र (यात्रा) ख़ुशबू तिजोरी
3. सराय (धर्मशाला/विश्राम स्थल) शरबत तमाशा

तुर्की मूल के शब्द

- तोप क़िला दरबार
- बाज़ उस्ताद यार

उर्दू से प्रचलित शब्द (अरबी-फ़ारसी मिश्रण से बने)

- अदब (साहित्य/सम्मान) अदा (अंग-भंगिमा) इश्क़ (प्रेम)
- मोहब्बत (स्नेह) ज़िन्दगी (जीवन) ग़ज़ल
- शायर ख़्वाब (स्वप्न)

इन शब्दों का प्रयोग इतना व्यापक है कि आज ये हिन्दी की अपनी ही धरोहर लगते हैं। भाषा की यही विशेषता है कि वह समय के साथ अन्य भाषाओं से शब्द लेकर और उन्हें आत्मसात करके और भी समृद्ध होती जाती है।

विदेशज शब्दों को विषयवार वर्गीकृत करके एक व्यवस्थित सूची तैयार करने से स्पष्ट होता है कि हिन्दी कितनी समृद्ध भाषा है

धर्म और आध्यात्मिकता

- ईमान (विश्वास) – अरबी
- दुआ (प्रार्थना) – अरबी
- दीन (धर्म) – अरबी
- औलाद (संतान) – अरबी

- तक़दीर (भाग्य) – अरबी
- इबादत (पूजा) – अरबी

समाज और प्रशासन

- दरबार (तुर्की/फ़ारसी)
- इजलास (सभा) – अरबी
- फ़ैसला (निर्णय) – अरबी
- अदालत (न्यायालय) – अरबी
- सरदार (नेता) – फ़ारसी
- मुल्क (देश) – अरबी

साहित्य और कला

- ग़ज़ल (उर्दू/फ़ारसी)
- शायर (कवि) – अरबी/फ़ारसी
- अदब (साहित्य/सम्मान) – अरबी
- अदा (अंग-भंगिमा) – अरबी
- तमाशा (मनोरंजन) – फ़ारसी
- पैग़ाम (संदेश) – फ़ारसी

व्यापार और अर्थव्यवस्था

- बाज़ार (फ़ारसी)
- दुकान (अरबी)
- तिजोरी (फ़ारसी)
- नक़द (अरबी)
- क़र्ज़ (अरबी)
- तनख़्वाह (फ़ारसी)

दैनिक जीवन

- दीवार (फ़ारसी)
- दरवाज़ा (फ़ारसी)
- कुर्सी (अरबी)
- गुलाब (फ़ारसी)
- शरबत (फ़ारसी)
- सफ़र (यात्रा) – फ़ारसी
- जहाज (अरबी)
- ख़्वाब (स्वप्न) – उर्दू

सैन्य और राजनीति

- तोप (तुर्की)
- क़िला (तुर्की/अरबी)
- मोर्चा (फ़ारसी)
- सिपाही (तुर्की/फ़ारसी)
- उस्ताद (तुर्की)

इस तरह आप देख सकते हैं कि हिन्दी भाषा में विदेशज शब्दों ने **धर्म, समाज, साहित्य, व्यापार, दैनिक जीवन और राजनीति** सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है।

तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज शब्दों को तुलनात्मक तालिका रूप में देखने पर एक ही नज़र में हन्दी की भाषिक विविधता को समझ पाएँगे।

तुलनात्मक तालिका: हिन्दी शब्दों के स्रोत

विषयवार उदाहरण

- **धर्म/आध्यात्मिकता**
  - तत्सम: पूजा, धर्म, मंत्र

    - तद्भव: पूजना, धरम
    - देशज: भजन, टोना
    - विदेशज: ईमान, दुआ, इबादत
- **समाज/प्रशासन**
    - तत्सम: सभा, न्यायालय
    - तद्भव: सबा, न्याव
    - देशज: पंचायत, चौपाल
    - विदेशज: दरबार, अदालत, मुल्क
- **साहित्य/कला**
    - तत्सम: काव्य, नाटक
    - तद्भव: काव्य- काव्य/कहानी
    - देशज: लोकगीत, नाच
    - विदेशज: ग़ज़ल, शायर, अदब
- **व्यापार/अर्थव्यवस्था**
    - तत्सम: व्यापार, धन
    - तद्भव: ब्यापार, धान
    - देशज: हाट, मंडी
    - विदेशज: बाज़ार, दुकान, तिजोरी
- **दैनिक जीवन**
    - तत्सम: गृह, जलपात्र
    - तद्भव: घर, लोटा
    - देशज: झोंपड़ी, चूल्हा
    - विदेशज: दरवाज़ा, दीवार, शरबत

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि हिन्दी भाषा ने चारों स्रोतों से शब्द लेकर अपनी अभिव्यक्ति को समृद्ध किया है।

ग़ज़ल उर्दू से आई है तो उसका फॉर्मेट उसी के अनुसार ही होगा। इसलिए अरूज़ की जानकारी भी होना ज़रूरी है। हिंदी भाषा में ग़ज़ल लिखने के लिए हिंदी छंद शास्त्र की जानकारी सोने पर सुहागा होगा।

फ़िराक़ गोरखपुरी ने एक बातचीत में कहा था कि हिंदुस्तान में ग़ज़ल को आए हुए अरसा हो गया। अब तक उसमें यहाँ की नदियाँ, पर्वत, लोक जीवन, राम और कृष्ण क्यों शामिल नहीं हैं?

"उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती ग़ज़लें" में मेरी परिकल्पना सैकड़ों साल की भाषाई गुलामी का चोला उतारने से था। अमृतकाल में सनातनी संस्कृति के उपमा-प्रतिमान, विम्ब-प्रतिबिंब हिन्दी ग़ज़ल की शोभा क्यों नहीं बढ़ा सकते।

नवीन सी चतुर्वेदी ने हिन्दी ग़ज़ल पर क्या खूब कहा है-

ओढ़कर धानी चुनर हिंदी ग़ज़ल
बढ़ रही सन्मार्ग पर हिंदी ग़ज़ल
देवभाषा की सलोनी संगिनी
मूल स्वर में है प्रवर हिंदी ग़ज़ल

मैं हिन्दी ग़ज़ल में उर्दू भाषा के प्रयोग का विरोधी नहीं हूँ। क्योंकि हिदी ने उन्हें स्वयं आत्मसात कर लिया है।

मैंने इसके पहले विभिन्न थीमों पर ग़ज़लों का संकलन सम्पादन किया है। 'अक़ीदत के फूल' में गुरु के प्रति श्रद्धा-निवेदन, 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें में प्रत्येक शायर की 5 ग़ज़लें (कुल 600 ग़ज़लें), 21 वीं सदी के इक्कीसवे साल की बेहतरीन ग़ज़लें में 4 मुसम्मन सालिम बह्रों पर कही गई ग़ज़लें, एक रुकनी अनूठी ग़ज़लें में एक रुकन में कही गई ग़ज़लें, अमृत महोत्सव की ग़ज़लें में 75 रदीफ़ों पर कही गई ग़ज़लें, 2024 की दिलकश ग़ज़लें में विभिन्न 24 बहरों में कही गई 838 ग़ज़लें शामिल हैं।

इस बार का थीम है "उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती ग़ज़लें" न कि "उर्दू के सम्मोहन से मुक्त ग़ज़लें" इसलिए ग़ज़ल में लोच, नज़ाकत, तरन्नुम, शिल्प और

कहन होनी चाहिए। इज़्ज़त, ख़ूबसूरत, किताब, दवा, जल्दी, ज़रूर, शायद, अक्सर, अंदाज़, अमीर, ग़रीब, सवाल, जवाब, अदालत, अफ़सर, क़िस्मत, दुकान आदि शब्दों का प्रयोग से बचने और भाषा की शुद्धता के चक्कर में ग़ज़ल की गेयता का सम्मान नष्ट नहीं होना चाहिए

सोमनाथ पर आक्रमण के हज़ारवें साल में "उर्दू के सम्मोहन से मुक्त होती ग़ज़लें" की नई थीम पर क़रीब 200 ग़ज़लें प्रस्तुत हैं। निस्संदेह आपको ये ग़ज़लें पसंद आएँगी और हिन्दी भाषा की श्रेष्ठता और समृद्धि का भान होगा।ये हिन्दी ग़ज़लें लंबी समय से प्रचलित 2 धारणाओं को ध्वस्त करती हैं कि हिन्दी एक खुरदरी भाषा है जिसमें बिना उर्दू शब्दों के प्रयोग के मुलायम बात कह पाना कठिन है और दूसरी कि हिन्दी ग़ज़लों में शेरियत (कविताई)का अभाव मिलता है। निश्चित ही इन ग़ज़लों में प्रयुक्त शब्दावली, विम्ब, प्रतीक, उपमेय और मुहावरे आपके मन को मुग्ध करेंगे।

धन्यवाद

फाल्गुन शुक्ल 1 संवत 2082
बुधवार, 18 फ़रवरी, 2026

रमेश 'कँवल'
878 976 1287

अंजू केशव

जन्म-24 अप्रैल
जमशेदपुर, झारखंड
मोबाइल–821 004 6398

1

विचारों का ही मंथन नित किया है
ग़ज़ल को इस तरह जीवित किया है

तुम्हारे साथ जितने पल गुज़ारे
उन्हीं को ज़िंदगी घोषित किया है

यूँ कैसे बाँटता है चाँद ठंढक
अनल जब उसने अवशोषित किया है

चलो करते हैं अब स्वीकार उसको
जो दुख क़ुदरत ने प्रस्तावित किया है

तुम्हें संसार ही लगता है दुश्मन
मन अपना इतना क्यों कुंठित किया है

हुई बदनामी हो या नाम सब कुछ
नियति ने ही अप्रत्याशित किया है

तो घबराना है क्यों आलोचना से
इसी ने आपको चर्चित किया है

2

दर पे तो आती थी क़िस्मत हम ही पर सोते रहे
इसलिए जो भी हमारा था वो सब खोते रहे

है कहानी ज़िंदगी की बस पलों की ही ख़ुशी
एक हम थे जो पलों को बोझ सा ढोते रहे

बीता बचपन फिर जवानी अब है बारी उम्र की
इस तरह उड़ते हमारे हाथ के तोते रहे

चुन रहा था वक्त हर लम्हा हमारी ज़िंदगी
और हम थे के लगाते ख्वाब में गोते रहे

है दवा हँसना समझने में बहुत देरी हुई
हम रहे बीमार शायद क्योंकि हम रोते रहे

दाग़ सारे रूह पर थे और थे नादान हम
आँसुओं से हर दफ़ा दामन ही बस धोते रहे

लहलहाई फ़स्ल है दुख की भी तो यूँ ही नहीं
बीज इसके तो हमीं छुप-छुप के थे बोते रहे

अनिल कुमार सिंह

जन्मतिथि-2 जनवरी, 1959
पटना 800013
मोबाइल-9431150967

1

फुहारें पड़ती हैं पावस की तन मन भींग जाता है
मदन मदमस्त मौसम मध्य यौवन भींग जाता है

उमड़ते हैं कभी जब आसमाँ में झूम कर बादल
तेरी यादों की बारिश में मेरा मन भींग जाता है

पिया परदेश जा बिलमे इधर पाहुन हुआ बादल
उधर दालान है सूखा पर आँगन भींग जाता है

बिरह की जेठ जैसी धूप में जलता हुआ तनमन
नयन में अश्रु उमड़ा देख सावन भींग जाता है

गए घनश्याम जब से घन नहीं बरसे कभी तब से
उमड़ते हैं नयन राधा के मधुबन भींग जाता है

बुनी उसकी चटाई बिन कोई बेटी विदा क्यों हो
लगी हो 'ठेस' दिल पर फिर भी सिरचन भींग जाता है

कोई काग़ज़ की कश्ती डूबती उतराती है जिस पल
'अनिल' आँखों में मेरी मेरा बचपन भींग जाता है

2

हमने जितने शब्द उचारे सारे अब तक छाए हैं
मीठे मीठे खारे खारे सारे अब तक छाए हैं

रौद्र करुण शृंगार हास्य वीभत्स भयानक अद्भुत वीर
शांत भक्ति वात्सल्य हमारे सारे अब तक छाए हैं

प्राप्त किया कितनों से हमने लौटाया भी कितनों को
सोच समझ या बिना बिचारे सारे अब तक छाए हैं

दिन निकले से रात ढले तक पलपलमें हर क्षणक्षण में
मुख से निःसृत साँझ सकारे सारे अबतक छाए हैं

मन्द्र मध्य तार सप्तक के कोमल शुद्ध तीव्र सुर में
लय में या बेसुरे पुकारे सारे अब तक छाए हैं

सस्वर पाठ वेद मंत्रो के आयत और पुराणों के
भाजन कीर्तन गायन प्यारे सारे अब तक छाए हैं

युद्ध प्रेम स्तुति निंदा में निकली वाणी से लेकर
क्रोध में बरसे जो अंगारे सारे अबतक छाए हैं

शब्द मेघ छितराते हैं कब दिनदिन गहराते जाते
श्याम श्वेत बादल कजरारे सारे अबतक छाए हैं

बोल तौलकर मुखसे निकलें तब हैं इनके मोल 'अनिल'
वरना फिरते मारे मारे सारे अबतक छाए हैं

अनिल गौड़

जन्म तिथि-19 दिसम्बर, 1960
थाणे, मुम्बई 401107
मोबाइल-983 975 3962

1

लड़ाई राम रावण में ठनी है
अभी बंदी जनक की नन्दिनी है

भिड़े हैं सभ्यताओं के पुरोधा
लड़ाई धर्म की ज़िद ने जनी है

हमारी बेबसी पर थूकता है
धनी कितना धनी कितना धनी है

हमारी हर गली में है अंधेरा
उधर हर राजपथ पर रोशनी है

लड़ेंगे और मरेंगे गोरा बादल
हमारी अस्मिता ही पद्मिनी है

हृदय के राज्य में तुलसी के देखो
हैं राजा राम, सीता स्वामिनी है

उसे कविता बने यह कामना है
'अनिल' की हर व्यथा उन्मादिनी है।

2

देखी जो स्वप्नलोक में खोई अनामिका
आँखों में रूप राशि है, होठों पे गीतिका

ऋतुराज आ गया है तो धरती बदल गयी
स्वागत में बन गयी है स्वयं पुष्प वाटिका

सुंदर नहीं है इससे अधिक चित्र एक भी
संवाद शुक से करती हुई एक सारिका

लो मूक हो गया है समय चीखता हुआ
दर्पण के सामने है अभी मुग्ध नायिका

खोये हुए हैं दोनों किसी और लोक में
प्रेमी हैं या कि योगी हैं क्षण है समाधि का

संगीत लय का नाम है जीवन की जीत है
ख़ुद गीत बन गयी है वो तल्लीन गायिका

जीवन जो चल रहा है वो चलता ही जाये है
कुछ भी पता नहीं है किसी अंत आदि का

3

नये समाज की ख़ातिर नई सदी के लिए
नई निगाह ज़रूरी है ज़िंदगी के लिए।

वो एक धर्म बनाना है आदमी के लिए,
जो सबके साथ चले और हो सभी के लिए

नहीं हैं कृष्ण, दुशासन है औ' सभागृह है
उपाय एक नहीं आज द्रौपदी के लिए

जो दुख की जड़ को तलाशे वो बुद्ध आज कहाँ
रुमाल बाँटते फिरते हैं हम दुखी के लिए

हृदय का दीप जलाओ न देखो बल्बों को
तुम्हारा मन जो तरसता हो रोशनी के लिए

क़दम-क़दम पे नये रास्ते निकलते हैं
पहुँच गया हूँ कहाँ चल के मैं ख़ुशी के लिए

किसी रुदन को ही कहते हो तुम 'अनिल' कविता
अजीब शब्द तलाशा है बेबसी के लिए।

4

सुन्दर और असुन्दर क्या
सच है ऊपर ऊपर क्या

धर्म जाति सब कपड़े हैं
हममें-तुममें अंतर क्या

छिलका-छिलका उतर गया
बाहर क्या था अंदर क्या

मुझ पागल से पूछो तो
होता ढाई आखर क्या

सुन्दरता को गा पाये
ऐसा है कोई स्वर क्या

पूछो एक सरोवर से
कर सकता है कंकर क्या

आँखें गहरी-गहरी हैं
तुम सचमुच हो शायर क्या

अनीता मिश्रा सिद्धि

जन्मतिथि 28 सितंबर, 1968
पटना 801503
मोबाइल–911 318 5410

1

आज कल उसका ही जग में नाम है।
जिसके सर पर कुछ न कुछ इल्ज़ाम है।।

चार पल की है मिली जब ज़िंदगी,
हो भला सबका, यही पैग़ाम है।

कर ले अब तौबा बुराई से बशर
हो रही अब ज़िंदगी की शाम है।

आज महफ़िल क्यो बड़ी सूनी लगे,
क्या मचा कोई यहाँ कोहराम है।

मांगकर देखो कोई भी चीज़ अब,
आज सारा कुछ तुम्हारे नाम है।

दोस्ती से आज बढ़कर कुछ नही,
दोस्त ही सबसे बड़ा ईनाम है।

रोज के शिकवे गिले को भूलकर,
'सिद्धि' कर दे माफ़ जो इल्ज़ाम है।

2

आप होते तो अनोखा ही नज़ारा होता।
आपके साथ तो हर ग़म भी गवारा होता।

मंज़िलें चूमतीं क़दमों के निशानात मिरे
हाथ में हाथ अगर मेरे तुम्हारा होता।

प्यार जब-जब भी गुज़रता है जहाँ में हद से
फिर वो बन जाता है पूजा ये विचारा होता।

रात-दिन रूह तड़पती न तुम्हारी ख़ातिर
गर सनम तुम ने मुहब्बत से पुकारा होता।

दिन हमारे नहीं कटते, नहीं कटती रातें
काश तुमपे न कभी दिल को यूँ वारा होता।

आपके इश्क़ में ये हाल हुआ है मेरा
जान दे देती अगर एक इशारा होता।

दर्द होता है भला जान अगर जाता तो
तू भी फिर मेरी तरह दर्द का मारा होता।

अनुराग मिश्र ग़ैर

जन्मतिथि 02 जनवरी, 1967
लखनऊ-226028
मोबाइल-8840094221

1

बेमौसम के फूल सभी हम,
इक छतनार बबूल सभी हम।

बहती रहती नदिया कल-कल,
ढहते गीले कूल सभी हम।

जिन बातों से बचना होता,
उसको देते तूल सभी हम।

कंकड़ कंकड़ शंकर लेकिन,
इन राहों की धूल सभी हम।

झेल रहे हैं वार समय का,
ओढ़े ग़ैर दुकूल सभी हम।

2

चुप सारे पदचाप मिले,
जब निर्जन में आप मिले।

नाच उठे दोनों के मन,
जब अपने आलाप मिले।

थम जाए सिहरन थोड़ी,
गर बाहों का ताप मिले।

सूँघ गया है सांप उन्हें,
जब जब मुझसे आप मिले।

शोर बहुत था सीने में,
आप मगर चुपचाप मिले।

क्यूँ शशि सा हम पाप करें,
क्यूँ गौतम का श्राप मिले।

सिलवा लेता कुछ कपड़े,
यदि तृष्णा की माप मिले।

सूरज थोड़ा ठहरे गर,
साये का परिमाप मिले।

ग़ैर वहीं गूँजी सरगम,
जिस पल दिल के थाप मिले।

अमित 'अहद'

जन्मतिथि: 23 जून, 1981
सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल-09675150538

1

तुम कहाँ हो मेरे राघव आजकल
हो गया इंसान दानव आजकल

जीत जाते हैं क्यों कौरव आजकल
हार जाते हैं क्यों पांडव आजकल

कैसा ये हैवानियत का दौर है?
मिल रहे हैं हर तरफ़ शव आजकल

हर कोई है फ़िक्र में डूबा हुआ
भूल बैठे पंछी कलरव आजकल

अपनेपन से अब कोई मिलता नहीं
बेमज़ा हैं सारे उत्सव आजकल

पेड़ से ख़ुद को समझता है बड़ा
पेड़ का हर एक पल्लव आजकल

क्या है फ़ुरसत भूल बैठा ये 'अहद'
व्यस्त है हर एक मानव आजकल!

2

जिसमें प्रेम का भाव निहित है
वो ही मानव बस जीवित है

भाग रहे सब धन के पीछे
ये सारा संसार भ्रमित है

जीत सका वो ही दुनिया को
जो मानव ख़ुद से परिचित है

अपने लालच में सब अंधे
अब रिश्तों का ये ही गणित है

ढाई आखर जो पढ़ पाए
दुनिया में वो ही शिक्षित है

जाति नहीं बस कर्म हों ऊँचे
मानव कर्मों से पंडित है

साथ 'अहद' जब ईश्वर तेरे
फिर क्यों तेरा मन चिंतित है!

अरविन्द 'असर'

जन्मतिथि 10 अगस्त, 1970
दिल्ली-110009
मोबाइल-987 132 9522

1

पतझड़ को जानबूझ के मधुमास लिख दिया,
उसने हमारी भूख को उपवास लिख दिया।

लगता है झूठ सच की ज़रा भी समझ नहीं,
चारण कथा को आपने इतिहास लिख दिया।

पूछा था उसने मुझसे सफलता का मूलमंत्र,
मैंने भी फिर जवाब में अभ्यास लिख दिया।

उसको हमारे भाग्य में लिखना था राज भी,
जिसने हमारे भाग्य में वनवास लिख दिया।

सब लोग लिख रहे थे तो मैंने भी फिर वहाँ,
साहिल की गीली रेत पे बस प्यास लिख दिया।

सब भोग और विलास पलटकर चले गए,
यौवन के दर पे मैंने जो संन्यास लिख दिया।

जिस शे'र से पहचानते हैं लोग अब मुझे,
वो शे'र तो बस मैंने अनायास लिख दिया।

मुझसे मिलन के बाद वो कहने लगे 'असर',
तुमने तो एक दिन में उपन्यास लिख दिया।

2

फ़िल्मी धुन पर भजन सोचिये,
कैसे लागे लगन सोचिये।

गंगाजल है प्रदूषित बहुत,
कैसे हो आचमन सोचिये।

पॉव उठते नहीं बोझ से,
आप मेरी थकन सोचिये।

शूल की तो प्रकृति है मगर,
फूल से भी चुभन सोचिये।

बात थी आगे बढ़ने की किन्तु,
तन है क्यों निर्वसन सोचिये।

और जितने थे सब बच गये,
बस जली है दुल्हन सोचिये।

उंगलियॉ तब जली हैं 'असर',
कर रहे थे हवन सोचिये।

अरुण कुमार आर्य

जन्मतिथि-16 मई, 1955
दानापुर कैंट, पटना
मोबाइल-943 162 0560

1

तेरा ये रूप पल में ही जादू सा कर गया
पीने से प्रेम रस मेरा मेरा जीवन सँवर गया

देखा तुझे तो तेरी छवि मन में बस गयी
तुझको गले लगाया तो जी मेरा भर गया

साहस से काम लीजिए दु:ख की घड़ी में आप
जो उल्झनों से डर गया समझो वो मर गया

लालच का रोग भूल से मन में न पालिए
ये लोभ जाने कितनों को बर्बाद कर गया

मन से बड़ा नहीं कोई चंचल है लोक में
अब तक तो था इधर ही न जाने किधर गया

काँटे बिछे हुए थे मेरे दर्द के वहाँ
यादों की उस गली में न जाना था पर गया

जिसने गँवाई जान 'अरुण' देश के लिए
माँ भारती का लाल वो समझो कि तर गया

2

अधूरा है तेरे बिन अपना जीवन
चली आ तू मेरा सूना है आँगन

कभी ये प्रेम का टूटे न बंधन
निछावर है तुझी पर अपना तन-मन

मिटेगी बरसों की अब प्यास मेरी
मिलन की रात आयी कितनी पावन

छवि सुन्दर मैं अपनी देखता हूँ
तेरे नैना प्रिये हैं मेरे दर्पण

वचन सातों निभाऊँगा मैं सजनी
पहन ले तू लगन का मेरा कंगन

रहेगी संगनी बन कर अगर तू
करूँगा अपना जीवन तुझपे अर्पण

जला कर आग में जीवन को अपना
'अरुण' तप कर बना है देख कुन्दन

अर्चना जौहरी

जन्मतिथि 25 जुलाई, 1958
मुंबई-400053
मोबाइल-986 719 3332

1

कुछ टूटे सपनो की किरचें कुछ यादों की कतरन
आज इसी की गठरी खोले बैठा मेरा ये मन

टूटे-फूटे कुछ वादे और प्यार की कुछ सौगातें
हसरत से सब देख रही है सहमी-ठिठकी बिरहन

छूटा था इक मोड पे इक दिन प्यार भरा इक लम्हा
ढूँढ रही है उस लम्हे को अब तक मन की जोगन

कुछ बातें खामोश रही जो वो भी तो है इसमें
रीती रीती कुछ मुस्काने और थोड़ी सी उलझन

धीरे-धीरे सब छूटे कुछ लेके और कुछ देके
पर उनसे गुलज़ार है अब भी ये मेरा मन आँगन

साज-सिंगार किए रहती हूँ मैं हूँ नार-नवेली
ना जाने किस मोड़ पे मुझको मिल जाएँ फिर साजन

2

कितनी अजीब बात, ये जो बात हो गई
भूली जहाँ मैं राह, वहीं रात हो गई

कुछ इस तरह से बाँट रहा है, सभी को वो
गोया ना दिल हुआ कोई ख़ैरात हो गई

उससे बिछड़ के अपने ही मैं पास आ गयी
अच्छा हुआ यूँ ख़ुद से मुलाकात हो गई

जब जब मुझे लगा कि सम्भलने लगी हूँ मैं
पैदा नई सी गर्दिश-ए-हालात हो गई

फिर ज़िन्दगी मचल उठी बनने को इक दुल्हन
फिर अश्क़ झूमने लगे बारात हो गई

अविनाश अमन

जन्मतिथि 19 जनवरी, 1978

पटना-800026

मोबाइल-787 067 8786

1

रूप कुम्हला कर मेरा दर्पण से जब निसृत हुआ
मेरा मुख मुझसे न जाने किस लिए विस्मृत हुआ

जब भी पारायण किया मैंने कभी गीता का पाठ
चित्त मेरा कर्म करने को सदा प्रेरित हुआ

एक वो जिसको तुम्हारा प्राप्त है स्पर्श सुख
एक वो मैं जो तुम्हारे दर्श से वंचित हुआ

आयेगा संकट कभी तो भान होगा ये तुम्हें
कौन है शत्रु तुम्हारा कौन जिससे हित हुआ

जैसे कोंपल कोई उगती चीर कर उर्वर धरा
प्रेम तेरा वैसे ही उर में मेरे विकसित हुआ

मुझको अपनी लेखनी पर ही सदा विश्वास है
मैं न जीवन में किसी भी अन्य पर आश्रित हुआ

2

उनको वर्षों से रही हमसे जलन
कैसे मिल जाएँ हमारे मन से मन

कुछ न कहता हूँ मैं उसके भी विरुद्ध
मेरे बारे में जो करता विष वमन

हो सके जितना भी अच्छा काम कर
सब यहीं रह जाएँगे धन और जन

मेरा जीवन क्या है कट ही जाएगा
तू अगर मेरा न बन अपना तो बन

कैसे विस्मृत ये सनातन रीत हो
प्राण जाये पर नहीं जाये वचन

व्यर्थ की चिंता कभी करता नहीं
मैं तो रहता अपनी ही धुन में मगन

जिसने मेरी लेखनी को धार दी
माता वीणा वादिनी को है नमन

अशोक 'अंजुम'

जन्मतिथि: 25 सितंबर 1966

अलीगढ़: 202002 (उत्तर प्रदेश)

मोबाइल-9258779744

1

मंच पर मुस्कान थी पर अश्क थे नेपथ्य में
क्या बताएँ ज़िन्दगी क्या-क्या सहे नेपथ्य में

तुमने मेरा हाथ क्या थामा क़यामत आ गई
कुछ जले प्रत्यक्ष में तो कुछ जले नेपथ्य में

आँख तक हमने कभी इक बूंद भी आने न दी
ज़िन्दगी भर यूँ बहुत दरिया बहे नेपथ्य में

देख कर ख़ुश हो गए तुम कुछ कलाकारों का फ़न
पारखी है कौन जाकर दाद दे नेपथ्य में

आपने उनसे मेरी नज़दीकियाँ तो देख लीं
पर कभी देखे नहीं थे फ़ासले नेपथ्य में

कर सको तो अब उन्हें मेरे हवाले कर ही दो
उम्र-भर जो मेरी ख़ातिर ख़त लिखे नेपथ्य में

2

बड़ा बुरा है हाल कबीरा
छेड़ो फिर सुरताल कबीरा।

सच के हिस्से में हैं फाँके
झूठ उड़ाए माल कबीरा।

हम मछली, हर ओर मछेरे
फैलाए हैं जाल कबीरा।

बचपन से हक माँग-माँगकर
पके हमारे बाल कबीरा।

मीठी वाणी बोल रहे थे
खिंची हमारी खाल कबीरा।

कौवे, बेढंगी बतलाते
अब हंसों की चाल कबीरा।

मजहब की दूकान खोलकर
वे हैं मालामाल कबीरा।

अशोक कुमार 'नीरद'

जन्मतिथि:-21नवंबर, 1945
अँधेरी (पूर्व), मुंबई 400059
मोबाइल-993 025 0921

1

अब नहीं बाक़ी भरोसा है किसी विश्वास पर
क्या कहें किस-किस तरह पाला पड़ा है आस पर

सिर्फ़ यह भूगोल तन का ही बदल सकती है बस
उम्र का कब ज़ोर चल पाया भला अहसास पर

कैसे-कैसे दृश्य आते हैं उभर कर सामने
नित नये प्रतिबंध पतझर के लगे मधुमास पर

जो अबाबीलें नया इतिहास गढ़ने थीं गयी
उनके पर बिखरे पड़े हैं बाज़ के आवास पर

देखकर जिसको न चाहे देखना कुछ और मन
काश नैन ईमान लाते रूप के उस रास पर

है कोई मेरी धरोहर तो वो मेरी सादगी
आम होकर भी पड़ी भारी सदा जो ख़ास पर

जल रहीं 'नीरद' कलह-नफ़रत-कपट की मिर्चियाँ
कैसे अब अंकुश लगेगा उठ रही इस ढास पर

2

आत्मा के सूखते बूटों को पानी चाहिए
जिसमें जीवन खिल उठे वो ऋतु सुहानी चाहिए

मौत का बनकर निवाला रह ना जाये आदमी
उजड़ी धरती को चुनरिया फिर से धानी चाहिए

क्लेश, ईर्ष्या, द्वेष, कुंठा में पगे इन्सान को
प्यार ही भगवान है यह लंतरानी चाहिए

छोड़कर पाखंड हिय से हिय मिले सद्भाव से
अब नहीं षड़यंत्र कोई आसमानी चाहिए

शह जिसे देनी थी उसको मात करके ख़ुश हुए
अपनी करनी पर तुम्हें तो लाज आनी चाहिए

रक्त-डूबी इस नई तहज़ीब का हम क्या करें
हमको निश्छल प्रीत की मेहँदी पुरानी चाहिए

कह रहे हो ख़ुद को जीवित कैसे 'नीरद' मान लें
हो अगर ज़िन्दा तो जीवट की निशानी चाहिए

3

गुल हुए हैं गौण चर्चित हो गया गुलदान है
पा रही तलवार से ज़्यादा महत्ता म्यान है

इस तबाही पर नहीं जाता किसी का ध्यान है
भावना का देश बरसों से पड़ा वीरान है

रास्ता ही रास्ते का काटता है रास्ता
रास्तों के फेर में राही हुआ हलकान है

कौन कैसा है बहस ज़ोरों से इस पर हो रही
कौन कब देता स्वयं के आचरण पर ध्यान है

रह गया दबकर विषय है भूमिका के भार से
गायकी पर पड़ गयी भारी बहुत ही तान है

मन है पूरब का प्रवासी बुद्धि पश्चिम-गामिनी
यह विरोधाभास अब इन्सान की पहचान है

किस तरह से कुंद 'नीरद' हो गयी है चेतना
दे सके जो धार इसको, खोजना वो सान है

4

क्या पाना था, क्या पाया है, चिंतन करने बैठा हूँ
हरियाली वालों से जुड़कर और अधिक मैं सूखा हूँ

नैन सलामत, कान सलामत, जीभ सलामत है मेरी
फिर भी अंधों-बहरों-गूँगों की महफ़िल का हिस्सा हूँ

मेरी बर्बादी का कारण मेरा चंदन होना है
या तो घिसा जाता है मुझको या तो जलाया जाता हूँ

अपनी प्यास किसे दिखलाऊँ कौन मुझे पानी देगा
जलता हूँ मैं फिर भी दुनिया की नज़रों में दरिया हूँ

रोज़ पड़ा है पाला मेरा बर्बर एक बवंडर से
पल-दो-पल हैरान हुआ हूँ लेकिन कब मैं टूटा हूँ

केवल मेरा नाम अपना है बाक़ी सब कुछ दुनिया का
ख़ुद को संबोधित करके मैं जग के दुखड़े कहता हूँ

जिसके आशीषों से 'नीरद' फिर मानवता मुस्काए
खोज में ऐसे सिद्धपुरुष की बस्ती-बस्ती फिरता हूँ

आनन्द पाण्डेय 'तन्हा'

जन्म तारीख़:-31 अगस्त, 1957

कानपुर-208011

मोबाइल-936 911 0036

1

हर किसी की जब निजी हैं मान्यताएँ,
छोड़ दें हम ही भला क्यों आस्थाएँ।

जब निराशा का अँधेरा घोरतम हो,
फिर अटल विश्वास का दीपक जलाएँ।

नेह से अभिसिक्त होते हैं वचन जब,
तब अप्रिय लगती नहीं हैं भर्त्स्नाएँ।

देव संतति हैं न भूलें हम कभी यह,
एक दिन होंगीं पराजित आपदाएँ।

प्रेम की पोथी कभी पढ़ते नहीं हैं,
यों उन्हें कंठस्थ हैं सारी ऋचाएँ।

यह सनातन धर्म है वट-वृक्ष जैसा,
अन्य धर्मों की यहाँ लिपटीं लताएँ।

देह का रूपान्तरण है मृत्यु केवल,
शोक फिर इस मृत्यु का हम क्यों मनाएँ।

2

क्यों पहनें वो लोग वसन,
जिनका बिकता नंगापन।

मुखमंडल तो उजला है,
मैला है मन का दर्पन।

पाँव समेटे बैठे हैं,
बांट लिए हमने आँगन।

मृत्यु मिले, भयभीत न हों,
सतत प्रक्रिया है जीवन।

करिये तो, प्रभु आएँगे,
स्वच्छ हृदय से आवाह्न।

साँसें शिव से चलती हैं,
राम सँभाले हैं धड़कन।

दुःख हर ले, उत्साह भरे,
ऐसा हो साहित्य-सृजन।

आराधना प्रसाद

जन्मतिथि-23 मई, 1973

कंकड़बाग़, पटना-800020

मोबाइल-725 060 6100

1

सिर्फ़ उम्मीद पर टिकी मिट्टी
कुछ नये ख़्वाब देखती मिट्टी

उड़ लो जितना यहीं पे आओगे
कह रही है ज़मीन की मिट्टी

रौंद लो कितना, ये हक़ीक़त है
एक दिन सबको रौंदती मिट्टी

मैंनें देखा है ऐसा भी मंज़र
मिट्टी मिट्टी में मिल गई मिट्टी

प्यार जिसको नहीं मिला समझो
हो गई उसकी ज़िन्दगी मिट्टी

आईना कैसे साफ़ दिखलाता
उसके चेहरे पे थी सनी मिट्टी

इक नई ज़िंदगी की चाहत में
चाक पर घूमती रही मिट्टी

2

आग ऐसी लगा गया सावन
ऐसे लहरा के आ गया सावन

तेरी ख़ुशबू लिए हवा आई
मेरी आँखों में आ गया सावन

जबसे देखा है तुमको सावन में
बस मेरे दिल को भा गया सावन

बारिशें, झूमती हवाएँ, घटा
कैसा मौसम दिखा गया सावन

जो भी आया है उसको जाना है
इसलिए फिर चला गया सावन

नाव कागज़ की, दिल हुआ पानी
मन को बच्चा बना गया सावन

खाली झूला था, मैं अकेली थी
हमसफ़र बनके आ गया सावन

आलोक यादव

जन्मतिथि: 30 जुलाई 1967
नोएडा (यू. पी.)
मोबाइल-941 273 6688

1

फिर आने का वादा करके पतझर में
हाथ छुड़ाकर चला गया वो पल भर में

सपने जिसके तुम मुझको दिखलाते थे
आँखें अब तक ठहरी हैं उस मंज़र में

मन में मेरे अब तक आशा है बाक़ी
थोड़ी जान बची है अब तक पिंजर में

छुअन मख़मली, स्वप्न सलोने, बातें सब
अब तक लिपटे वहीं पड़े हैं चादर में

दूर निगाहों की सीमा से हो फिर भी
आँखें तुमको ढूँढती रहती हैं घर में

आदि काल से सभी मनीषी सोच में हैं
कितने भेद छुपे हैं ढाई आखर में

मन में कुछ-कुछ चुभता रहता है 'आलोक'
थोड़ी सिलवट छूट गई है अस्तर में

2

पढ़ रहा हूँ वेदना का व्याकरण मैं
हूँ समर में आज भी हर एक क्षण मैं

सभ्यता के नाम पर ओढ़े गए जो
नोच फेकूँ वो मुखौटे, आवरण मैं

रच रहा हूँ आज मैं कोई ग़ज़ल फिर
खोल बाँहें कर रहा हूँ दुःख ग्रहण मैं

ये निरंतर रतजगे, चिंतन, ये लेखन
कर रहा हूँ अपनी ही वय का क्षरण मैं

पीछे-पीछे अनगिनत हिंसक शिकारी
प्राण लेकर भागता सहमा हिरण मैं

शक्ति का हूँ पुंज, एटम बम सरीखा
देखने में लग रहा हूँ एक कण मैं

ब्रह्म का वरदान! हूँ ईश्वर की ज्योति
व्योम का हूँ तत्त्व, धरती का लवण मैं

उत्कर्ष अग्निहोत्री

जन्मतिथि-27 मार्च, 1995
फर्रुखाबाद-209625 (उ०प्र ०)
मोबाइल-887 466 3158

1

प्रेम के प्रतिमान हमने ज्ञान में पहना दिये।
फूल के झुमके बनाए कान में पहना दिये।

इस जगत की सारी सुंदरता उन्हें यूँ भेंट की,
दो नयन अपने उन्हें उद्यान में पहना दिये।

यज्ञ सा होता रहा बोले बिना हमने तुम्हें,
सब वचन उस रात अनुष्ठान में पहना दिये।

जब तुम्हें पाया तो जाना एक शापित व्यक्ति को,
रामजी ने पुण्य सब वरदान में पहना दिये।

कण्टकों का मार्ग के कुछ तो पता चलता उन्हें,
पर खड़ाऊँ आपके सम्मान में पहना दिये।

2

प्रेम को पानी समय को खाद तो करते।
इस तरह वन को रुचिर प्रासाद तो करते।

क्या पता मन की विकलता दूर हो जाती,
आप हमसे दो घड़ी संवाद तो करते।

हम तुम्हारे प्राण हो जाते प्रिये पर तुम,
धड़कनों का शब्द में अनुवाद तो करते।

हम भले आते न आते ये अलग मत है,
किंतु अवसर पे हमें तुम याद तो करते।

ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'

जन्मतिथि-5 जुलाई, 1957
अहमदाबाद 382424
मोबाइल 942 833 0490

1

अलग-थलग-सा बैठा हूँ
वैसे घर का हिस्सा हूँ

आज तलक मैं बच्चा हूँ
गो बचपन से बूढ़ा हूँ

जो छुपने के काम आए
मैं घर का वो कोना हूँ

साबित रखता हूँ इज़्ज़त
मैं ख़ुद टूटा-फूटा हूँ

घर में सिमटा हूँ फिर भी
दुनिया भर में फैला हूँ

आड़े वक्त में काम आए
मैं वह खोटा सिक्का हूँ

मक्ते तक जो आ न सकी
ऐसी ग़ज़ल का मत्ला हूँ

2

मन-सरिता में करता हलचल
भाव-तरंगों का कोलाहल

दर्द में औरों के जो बहता
होता है पावन वो दृगजल

उतरीं नभ से भोर की परियाँ
छनकाती किरनों की पायल

चहक रही है पौंछ के उषा
रजनी के नैनों का काजल

दिल मेरा भी छलनी बहुत था
उनका ही तन नहीं था घायल

गर्त मिले कितने उसमें भी
दिखने में जो राह थी समतल

तुम सच बोलो, मैं सच बोलूँ
आओ खेलें पागल-पागल

कविता विकास

जन्मतिथि-28 फरवरी
सेक्टर 121, नोयडा यूपी
मोबाइल–943 132 0288

1

घटा काली है छायी आसमानों में
जगी उम्मीद है फिर से किसानों में

उड़ेंगी बेटियाँ भी पंख फैला कर
करो मत बंद घर के क़ैदख़ानों में

बचेगी सृष्टि यह उनकी बदौलत ही
भरी संभावना है नन्हीं जानों में

मिला कर कंधे से कंधा चलो यारो
रखा क्या है भला आपस के तानों में

यूँ ही मत छोड़ दो इन नौनिहालों को
दख़ल भी दो कभी इनके फसानों में

वहीं मिलती है टूटन और तन्हाई
है शोहरत और दौलत जिन घरानों में

उन्हीं गीतों में रमता है ये मन 'कविता'
महक माटी की आती जिन तरानों में

2

जीवन से दिलदारी रख
साथ सभी के यारी रख

गिरने का मत रोना रो
कोशिश अपनी जारी रख

अपनी सीमा में रह तू
चाह कभी मत भारी रख

मज़बूरी कितनी भी हो
फिर भी तू ख़ुद्दारी रख

नर्म मिज़ाज मधुर वाणी
आँखों में मनुहारी रख

अब तो जिम्मेदारी ले
मत हरदम लाचारी रख

भीड़ सघन हो पर 'कविता'
आगे अपनी बारी रख

कालजयी घनश्याम

जन्मतिथि: 01 जुलाई, 1964
नई दिल्ली-110 086
मोबाइल–981 013 7967

1

जो रक्खे शक्ति का हथियार होगा
वो अपनी भूमि का हक़दार होगा

ख़ुशी से देश पर जब हो निछावर
वो वीरों के लिए त्यौहार होगा

सदा ख़ुद्दारी की राहों पे चलना
किसी के वास्ते दुश्वार होगा

वतन से है नहीं अनुराग जिसको
समझ लो आदमी ग़द्दार होगा

ज़ुबां पर गर लगा ताले किसी के
यक़ीनन प्यार में लाचार होगा

समर्पित करने को दिल चाहता है
मगर क्या उनको ये स्वीकार होगा

बिना 'घनश्याम' के कैसे कहो तो
मेरा सपना भला साकार होगा

2

वो समाया है इस क़दर मुझमें
जैसे उसका हो अपना घर मुझमें

प्रीत अपनी प्रकट मैं कर लेता
हौसला होता कुछ अगर मुझमें

मन की मानूँ या मान लूँ दिल की
द्वन्द् चलता है रात भर मुझमें

लब पे सच बात आ नहीं पाती
कोई डर कर गया है घर मुझमें

मेरा दिल तो बहुत ही नाज़ुक है
इक सुख़नवर का है सफ़र मुझमें

दिल से ईमानदारी का जज़्बा
कब नहीं आता है नज़र मुझमें

मुझको 'घनश्याम' करता है बेकल
सैर करता है रात भर मुझमें

किरण सिंह

जन्मतिथि-28 दिसम्बर, 1967
पटना-800014
मोबाइल-943 089 0704

1

घटा छाई हैं नयनों में, हृदय की शुष्क हैं नदियाँ।
बरसता है नहीं सावन, नहीं खिल पा रहीं कलियाँ।

बनाओ बिगड़ी सब मेरा, अगर तुम सत्य हो शिव तो।
भरो विश्वास मन में फिर से, लौटा कर मेरी ख़ुशियाँ।।

उगे चंदा हमारे घर, हमें दो ढेर सारे वर।
रहे मजबूत रिश्तों की हमारी प्यारी सी कड़ियाँ।

हृदय की हर लो हर पीड़ा, बजाकर प्रेम की वीणा।
कि गूंजे गीत मन आँगन, सभी गुलज़ार हों गलियाँ।

मनाये मन सदा होली, सजाये दीप दीवाली।
निराशा के तिमिर में फिर, झरे आशा की फुलझड़ियाँ।

असम्भव को करो सम्भव, रचें इतिहास हम भी नव।
पिरोकर वर्ण अक्षर को, बनायें काव्य की लड़ियाँ।

सितारे भाग्य के चमकें, 'किरण' यूँ ही सदा दमके।
खिले मुस्कान अधरों पर, भरी हो आस से अँखियाँ।।

2

इश्क़ का रिश्ता वे भी निभाते रहे,
ख़्वाबों में ही सही आते-जाते रहे।

मैं तो सच के सहारे टिकी रह गई,
झूठ को थाम वे डगमगाते रहे।

दिल के हालात को ही मैं लिखती रही.
वे समझ प्रेम का गीत गाते रहे।

मेरे हिस्से में आई उदासी मगर,
साथ मेरे सभी मुस्कुराते रहे।

यूँ ही कटते रहे दिन उम्मीदों तले,
ख़्वाब आँखों में सजते-सजाते रहे।

मैंने उनपे यक़ीं खुद से ज्यादा किया,
वे मगर हर घड़ी आज़माते रहे।

मैं किरण हूँ बिखर के भी खिलती रही,
सूर्य सा वे हमेशा तपाते रहे।

कुलदीप शर्मा

जन्मतिथि 17 नवंबर, 1955

ऊना हिमाचल प्रदेश

मोबाइल-701 840 2984

1

इतनी गहरी हलचल कैसी कैसा हाहाकार नदी
किस पीड़ा से उद्वेलित है तेरा घर संसार नदी

तेरे पानी में ठहरा है एक मुसव्वदा संसद का
तेरे तट पर आ बैठी है गिरी हुई सरकार नदी

मैं तेरे दुःख ना जानू तू मेरे आँसू देखे ना
लिखना मेरा बेमक़सद, तेरा बहना बेकार नदी

काई, तलछट, तिनके पत्ते, मिटटी लाशें लेकर यूँ
कहाँ चली हो, किसको देगी ये सारे उपहार नदी

शहरों ने तेरी सूरत को इतना है विद्रूप किया
लौट के आ बस्ती में फिर से तेरा करूं श्रृंगार नदी

तिल सी नाव तेरे चेहरे पर फिर से लौटके आई है
इस के लिये दुआएँ कर तू इसकी नज़र उतार नदी

पर्वत की ऊँची चोटी से सपना लिए समुन्दर का
पल पल बढ़ते देखा तेरे सपने का विस्तार नदी

कल कल करती शोर मचाती आते जाते पूछ रही
उस बस्ती का हाल कि जिसमे जीना है दुश्वार नदी

2

बहरों की बैठक में तेरा रोना सब बेकार गया
जीता हो कानून भले पर सच बेचारा हार गया

ऊँचे दाम सुखों के, जेबें अरमानों की फटी हुई
कई दिनों के बाद कबीरा फिर से बीच बाज़ार गया

इक चुटकी भर नमक उठाकर खुले ज़ख़्म में डाल दिया
अच्छा हुआ कि यार पुराना अपना क़र्ज़ उतार गया

बूढ़ी माँ की आँखों में जो बसा हुआ था बरसों से
बेटा देखो इक पल में ही उस सपने को मार गया

इस रस्ते से जाने वाले चले गये तो चले गये
हरिया, किसनू, शेरू निकले पिछले कल जगतार गया.

वह होता तो कहता चल उठ तू क्यों गुमसुम बैठा है
उसकी याद में बैठे बैठे यह पूरा इतवार गया

बिछड़े यार से मिलने की थी दिल में तमन्ना बरसों से
जिस दिन मिलने गया तो पाया वो तो कब का यार गया

केशव शरण

जन्म 23-08-1960
सिकरौल, वाराणसी 221002
मोबाइल-941 529 5137

1

उसे पाया न जिसका पात्र हूँ मैं
बहुत कह लो अभागा पात्र हूँ मैं

अलग से कुछ मुझे कहना नहीं है
तुम्हारे नाटकों का पात्र हूँ मैं

बनाना काम अपना है उन्हें कुछ
बुरा था आज अच्छा पात्र हूँ मैं

वही जिसने मुझे ख़ाली किया है
बताता है कि छूँछा पात्र हूँ मैं

मुझे अब कौन माँजेगा बता दो
तुम्हारा एक जूठा पात्र हूँ मैं

नशा या स्वाद बेहतर हो न लेकिन
डिजाइन से अनोखा पात्र हूँ मैं

किसी भी रोज़ मुझको फेंक सकते
नया पाकर कि टूटा पात्र हूँ मैं

2

न रहने से तुम्हारे कम सुहाना
चमन ये और ये मौसम सुहाना

लगा जैसे कि सावन आ गया है
नयन गीले हुए तो ग़म सुहाना

कई तस्वीर लेंगे वो हमारी
लगाते ज़ख़्म पर मरहम सुहाना

भले है लक्ष्य निश्चित, पथ अनिश्चित
सफ़र किस दम बुरा किस दम सुहाना

रहा इस मोड़ की पहचान बनकर
मगर वो कट गया शीशम सुहाना

महीना चल रहा मधुमास का ये
सुनाई दे न सुर पंचम सुहाना

तुम्हारे दूर रहने से न होता
हमारा घूमना संगम सुहाना

कृष्ण सुकुमार
जन्मतिथि: 15 अक्टूबर, 1954
रुड़की-247667 (उत्तराखंड)
मोबाइल-991 788 8819

1

जाने कितने ऐसे अवसर चूक गये
जिनको जी सकते थे बेहतर, चूक गये

अक्सर छोटी-छोटी बातों को लेकर
बनते-बनते कितने ही घर चूक गये

हिस्से में आये दुःख को रटते-रटते
आते सुख की अनदेखी कर चूक गये

अलमारी की बंद किताबों-जैसे हम
खुद को पढ़ने वाले अक्षर चूक गये

शिष्ट नहीं हैं आज परस्पर बिलकुल हम
रिश्ते-विश्ते, आदर-वादर चूक गये

संकोची-मन के हम इतने दुर्बल थे
चुप्पी साधे भीतर-भीतर चूक गये

जाते-जाते दो-इक बातें कहनी थीं
टूटे-फूटे भर्राये स्वर चूक गये

2

टूटने के बाद की संभावना
शेष रख संवाद की संभावना

कोलाहल में खो नहीं जाती कभी
एक अनहद नाद की संभावना

यह हवा, ये फूल, ख़ुशबू, तितलियाँ
सर्वथा आह्लाद की संभावना

मर चुकी संवेदना, अनुभूतियाँ
किस से है फरियाद की संभावना

हिचकियाँ आयीं मुझे तो फिर जगी
उसको मेरी याद की संभावना

हर तरफ़ टूटन, घुटन, संत्रास है
हर घड़ी अवसाद की संभावना

एक बच्चे में पिता के वास्ते
एक दृढ़-बुनियाद की संभावना

गरिमा सक्सेना

जन्मतिथि-29 जनवरी, 1990
बैंगलोर-560064
मो-769 492 8448

1

देखकर स्वाधीनता इन तितलियों की,
भीगती हैं आँखें अक्सर खिड़कियों की।

आजकल वो बेक़रारी है न बाक़ी,
जान थी जो कल हमारी चिट्ठियों की।

रोटियाँ तक क्यों कमाकर दे न पायीं,
उम्र बीती जा रही है डिगरियों की।

काग़ज़ी फूलों से उनका वास्ता है,
क्या ज़रूरत है उन्हें इन वादियों की।

मोतियों की चाह उनको खींच लाई,
फ़िक्र उनको है नहीं इन सीपियों की।

एक चिंगारी जला देगी ये जंगल,
जब करेगी वह सवारी आँधियों की।

ये हज़ारों दीप हो जाएँगे रौशन,
है ज़रूरत जल रही कुछ तीलियों की।

2

रोज़ ढलकर भी नहीं इक पल ढला सूरज।
घाटियों से चोटियों तक फिर चला सूरज।

ठान बैठे बैर मुझसे आज कुछ जुगनू,
देखकर हैरान हैं मुझमें पला सूरज।

रौशनी हर ज़िन्दगी में भरने की ख़ातिर,
रोज़ तपती भट्टियों में है जला सूरज।

बादलों की ओट में कैसे थे बहकावे,
गुम गया क्यों, आज वादे से टला सूरज।

रोशनी पाकर गुमां में चाँद चिल्लाया,
है नहीं औक़ात कुछ, है क्या भला सूरज।

हसरतें नभ की हुईं देखो सुहागन-सी,
सुब्ह उसके सिर पे किसने है मला सूरज।

उल्लुओं को कब उजाला भा सका 'गरिमा'
आँख में उनकी सदा से ही खला सूरज।

चाँद मुंगेरी

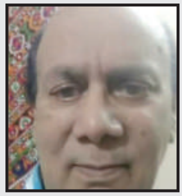

जन्मतिथि-11मई, 1950
बोकारो स्टील सिटी, झारखंड
मोबाइल 920 409 3040

1

जीवन के पथ पर हम दौडें, ले इच्छा उत्थान की
आओ कोई राह-निकालें, हम अपने सम्मान की

उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम, जन-जन पूछे प्रश्न यही
कब तक भर पाएगी खाई, निर्धन और धनवान की

बच्चा-बच्चा पूछ रहा है, विचलित हो संसार से
और करेंगे कब तक पूजा धरती के भगवान की

गिरवी उनके हाथ रहेगा सुख अपना कब तक कहो
कीमत और चुकानी होगी क्या अपने मुस्कान की

श्रम का यह फल मीठा होगा अब भी आशा शेष है
आएगी अपने घर किरणें मिहनत के वरदान की

'चाँद' तुम्हीं से पूछ रहा है, बस इतना बतला दो तुम
कब तक बात सहोगे ऐसे तुम अपने अपमान की।

2

बिम्ब अम्बर के मरने लगे
आह! तारे भी भरने लगे

धर्म, कैसे निभाएँगे वे
जो वचन से मुकरने लगे

स्वप्न की बात कैसे करें
स्वप्न से लोग डरने लगे

पाके आदेश नित आप का
आदमी घास चरने लगे

दोष-दृष्टि का अब देख लो
दीप पानी से जरने लगे

क्या हुआ हारकर आप क्यों
बात मृत्यु की करने लगे

याद करते हुए कर्म को
बनके हम 'चाँद' तरने लगे

छाया शुक्ला
जन्मतिथि-16 दिसंबर, 1963
शिवपुर वाराणसी-221003
मोबाइल-800 949 3787

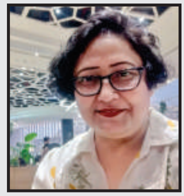

1

मिट गए जो देश के सम्मान पर
प्रश्न अब मत कीजिए अवधान पर

जगमगाता ही रहे नक्षत्र सा
देश अपना सूर्य के अवसान पर

रात दिन जो सरहदों पर हैं खड़े
सिर झुकाएँ आप उस श्रमदान पर

बारिशें आतप नहीं जिनको खले
तर्जनी क्यों उठ रही अवदान पर

एक ख़त लिख दो वतन के वास्ते
ध्यान सबका ही रहे उत्थान पर

दौर कैसा आ गया है देखिए
उंगलियाँ उठतीं हैं बस सुल्तान पर

बन सको 'छाया' बनो उस शख़्स की
घर बनाया आज जो दिनमान पर

2

दाता जीवन भर देता है
अवसर और हुनर देता है

सबकी बातें सुनता रहता
ख़ाली झोली भर देता है

खुले बदन जीने वालों को
कम से कम चादर देता है

उसकी कृपा हुई है जब जब
सुंदर कहन असर देता है

रस्ते नज़र नहीं आते जब
सीधी एक डगर देता है

निशि की चूनर पर कारीगर
चाँद सितारे धर देता है

नन्हा दीपक भी आँधी को
प्रभु मन से टक्कर देता है

ज्वाला सांध्यपुष्प

जन्मतिथि: 5 मार्च, 1955

पटोरी, समस्तीपुर-848504

मोबाइल 926 275 7523

1

सब पुराने जब बिछुड़ते जा रहे हैं।
कैसे-कैसे यार मिलते जा रहे हैं।

कौन रक्खे ध्यान अब इन जुगनुओं पर
अनगिनत जब चांद उगते जा रहे हैं।

क्या मिलेगा लाभ अब अपने पिता से
बच्चे ही जब दूर होते जा रहे हैं।

रख न पाऊँ धैर्य इस दुनिया में रहते
रात-दिन जब सब बदलते जा रहे हैं।

शीशे-सा दिल तोड़ तुझको क्या मिलेगा
माँ-पिता क्यों आज रोते जा रहे हैं।

मरने के भी बाद मिलना जब न होगा
सोच हम भी क्यों उलझते जा रहे हैं।

आँखें भर जाएँगी सुन मेरी कथाएँ
सब सयाने पंछी उड़ते जा रहे हैं।

2

नदी बची न ही किनारा बचा।
वहाँ कहाँ हिंदू हमारा बचा।

जताते दुख अभाव में अपनी वे
मगर मेरा कहाँ सहारा बचा।

न बच सकी किसी की इज्जत कहीं
न तो कोई बूढ़ा बेचारा बचा।

रो-रो के हाल है बुरा आज भी
न माँ का लाडला ही प्यारा बचा।

पतंग जाएगी किधर कट के अब
न भूमि आसमान सारा बचा।

बहा के ले गई किधर यह नदी
न पटना ही बचा न आरा बचा।

ऐसे अंधेरे में वो रहेंगे किधर
इधर-उधर न कोई तारा बचा।

ज़ाहिद अबरोल

जन्मतिथि-20 दिसम्बर, 1950

ऊना-174303; हिमाचल प्रदेश

मोबाइल 981 664 3939

1

रात को रात तभी समझे जब नींद ने हम को घेरा बाबा
अपनी नींद से जब जागे हम तब ही हुआ सवेरा बाबा

सब से बड़ी माया तो हम को यह तेरा भगवान लगे है
सोचो तो यह नूर, अगर देखो तो घोर अँधेरा बाबा

दांत भी तोड़े और कमर के सरे बल भी निकाल दिये हैं
मन को सांप समझ कर ख़ुद तू बन गया एक सपेरा बाबा

दुनिया का तुम मोह भुला कर रब के मोह में डूब गये हो
एक भँवर से क्या बच निकले, दूजे ने आ घेरा बाबा

जंगल जंगल घूम आये हो सहरा सहरा भटके हो तुम
फिर कहते हो अपने अंदर ही भगवान का डेरा बाबा

ज़िहन से जो हर सोच उड़ा दे, जड़–चेतन का भेद मिटा दे
हम को भी बतलाओ कहाँ है ऐसा रैन बसेरा बाबा

'ज़ाहिद' दर्स की अंधी रहें अंधे रहबर, अंधे राही
एक ही बात को रटते जाओ, क्या तेरा क्या मेरा बाबा

2

आँख झपकते ही साजन ने जीवन का मुख मोड़ दिया
किस आलम में हम को पकड़ा, किस आलम में छोड़ दिया

अपने और पराये का क्या भेद हमें समझाते हो
अपना पराया देखने वाली आँख को कब का फोड़ दिया

क्या ज्ञानी क्या अज्ञानी सब एक ही नाम को रटते हैं
जब भी उनका हाथ किसी ने बीच भँवर में छोड़ दिया

मेरी अना मेरी राहों में कांटे बन कर बिखरी है
जब भी मुझ को नींद आई है इसने मुझे झंझोड़ दिया

लाख कहो दीवाना हमको अपना हठ नहीं छोड़ेंगे
दिल के टूटे जाम में हमने अपना ख़ून निचोड़ दिया

यास के बादल घेर चुके थे 'ज़ाहिद' दिल की नगरी को
तेरी इक मुस्कान ने पगली उनका रुख़ भी मोड़ दिया

डॉ. आनन्द किशोर

जन्मतिथि: 4 दिसम्बर, 1962
दिल्ली-110053
मोबाइल–892 074 7891

1

पास किसके साफ़ मन है।
आपका क्या आकलन है।

आपके आने से पहले,
ख़ुश्बुओं का आगमन है।

जो हुई ग़लती है मुझसे,
दरअसल वो आदतन है।

वो सुनेंगे क्या किसी की,
पास जिनके ख़ूब धन है।

मिट गया है प्यार दिल से,
हो गया कैसा चलन है।

नफ़रतों का है धुआँ जो,
घेरता दिल का चमन है।

छोड़कर जिस पल गए तुम,
आज भी उसकी चुभन है।

आज का 'आनन्द' इन्सां,
हो रहा ख़ुद में मगन है।

2

लगता है कुछ ज़रूर होना है।
उसकी आँखों में जादू टोना है।

खाने से पहले ये याद रखो,
पहले तो हाथों को धोना है।

खेलेगा बच्चा या तोड़ेगा,
हाथों में गर कोई खिलौना है।

जो दें फल फूल हमेशा छाया,
ऐसे ही पौधों को बोना है।

सुख दुख की छाया आनी जानी,
इस छाया में पाना खोना है।

दौलत प्यार की जिसे मिले समझो,
उसके भाग्य में चाँदी सोना है।

मेहनत जो नहीं करते हैं 'आनन्द',
उनकी क़िस्मत में बस रोना है।

डॉ. आरती कुमारी

जन्मतिथि-25 मार्च, 1977
मुजफ्फरपुर, बिहार-842001
मोबाइल-8084505505

1

प्रेम की भावना रखो मन में
फूल खिलते हैं जैसे उपवन में

राम जैसे न बन सको लेकिन
तुम लगाओ न ध्यान रावन में

पल में मिट जाएगा ये सूनापन
डाल दो, चार दाने आँगन में

तुम भी रम जाओ इस तरह मुझमें
जैसे मीरा रमी है मोहन में

सच है जप तप तो मन से होता है
बावरे क्या लगा है आसन में

2

स्वप्न है परिदृश्य बदले प्रेम ही आधार हो
मिट सकें ये दूरियाँ आशा भरा उद्गार हो

शोषितों को वंचितों को हक़ मिलें उनके सभी
हर दिशा में हर विधा में उनका भी अधिकार हो

हाशिये पर जो खड़े हैं मन में कड़वाहट लिए
उनको हो मुखपृष्ठ हासिल उनका भी उद्धार हो

न्याय के गलियारे में मत बैठो पट्टी बाँधकर
झूठ के पर्दे हटें सच्चाई का विस्तार हो

पिस रही घर और दफ़्तर में जो चक्की सी सदा
ऐसी नारी जाति का सम्मान हो श्रृंगार हो

डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

जन्मतिथि 10 जनवरी, 1961
काँठ रोड, मुरादाबाद-244105
मोबाइल: 992 737 6877

1

सत्य में और झूठ में इतना ही बस अंतर मिला
एक सीमाओं में, इक सीमाओं से बाहर मिला

मैंने पूछा क्या है जीवन, उसने बतलाया कि मृत्यु
इक कठिन-से प्रश्न का कितना सरल उत्तर मिला

दोष था प्रारब्ध का या थी कमी विश्वास की
जो मेरा प्रतिबिंब था, वो ही मुझे छूकर मिला

मैं तुम्हारे रूप की सज्जा करूँगा एक दिन
व्यस्तताओं से तनिक-सा भी अगर अवसर मिला

अपने हाथों से बनाये जिसने कितने ही भवन
क्या विवशता है कि वो ही आदमी बेघर मिला

2

फूल का, गंध का, रंग का, रास का
हर तरफ़ सिर्फ़ मौसम है उल्लास का

जो न मन को लुभाए, न मस्तिष्क को
क्या करे कोई ऐसे अमलतास का

देवता मानकर उसको पूजूँगा मैं
पल मिला यदि कोई आत्मविश्वास का

बहती नदिया भी थी, ठहरा सागर भी था
अर्थ समझा न कोई मेरी प्यास का

अब तो आकर हृदय से लगा लो प्रिये
बीत जाए न मौसम ये मधुमास का

'नाज़' उनकी कथाएँ भी दुहराइए
पृष्ठ जो बन गए आज इतिहास का

डॉ. गीता विश्वकर्मा 'नेह'

जन्मतिथि-12 जून, 1969
जिला-बालोद, छत्तीसगढ़, 491223
मोबाइल-9926623854

1

धारणा सफल विफल बना लिया स्वभाव ने।
बोधगम्यता ग्रहण किया कहाँ लगाव ने।।

सत्य को परख सका न मंद चित्त भ्रम विवश।
ऊपरी विवाद में फँसा दिया दुराव ने।।

लक्ष्य तक पहुँच गया विचारवान की समझ।
तर्क दे गया नया वहीं कुशल प्रभाव ने।।

बात घात गात कर कुटिल कुचाल चल रहा।
लो बहा दिया उसे प्रपंच के बहाव ने।।

नीति न्याय इसलिए बना समाज के लिए।
संगठन सुदृढ़ रहे कहा सदा उठाव ने।।

बढ़ सका कभी नहीं निराश व्यक्ति आज तक।
हर समय भ्रमित किया मनोदशा दबाव ने।।

बुद्धि को सजग रखा न कष्ट विघ्न से डरा।
दे दिया शिखर उसे प्रयत्न के चुनाव ने।

'नेह' भावना रखी, तटस्थ कर्म धैर्य धर।
तो उसे सभी दिया सुयोग के खिलाव ने।।

2

कितने रहस्य गोपन गतिमान पुतलियों में।
जैसे छुपी कलाएँ चालाक उँगलियों में।।

सुंदर लगे सितारे उस व्योम टिमटिमाते।
शशि सूर्य भी लुभाते छुप ओट बदलियों में।।

अलिवृंद गीत गाकर नव पुष्प को खिलाते।
होता नहीं असर पर रंगीन तितलियों में।।

कृत्रिम जलाशयों का या कुंड काँच का हो।
दिखता नहीं कभी भय तैराक मछलियों में।।

अद्भुत प्रकाश लड़ियाँ रमणीक मृत्यु कारक।
विद्युत प्रवाह फैला है प्राण बिजलियों में।।

है फेफड़ा श्वसन हृद मुख ग्रास मुख्य नलिका।
रहती सदा सुरक्षित सब ग्रंथि पसलियों में।।

अखरोट चार काजू बादाम और पिस्ता।
सब विद्यमान रहते फल बीज गुठलियों में।।

तरुणी कुलाँच भरती निज 'नेह' से सुवासित।
उन्मुक्त हो लहरती रहती बुलंदियों में।।

डॉ. ज़ीनत एहसान क़ुरैशी

जन्मतिथि: 21 जनवरी, 1970
अंधेरी, वेस्ट मुंबई-400102
मोबाइल 922 122 2223

1

हमारे पास आईना रखा है
चले आओ जो चेहरा देखना है

नहीं आती हैं क्यों यादें तुम्हारी
तुम्हारी याद को क्या हो गया है

चमन में आग अपनों ने लगाई
हमारा आशियाना जल रहा है

बता देता है हर एक बात मुझको
मेरे अंदर से कोई बोलता है

झुका है मेरा दिल सच्चाइयों पर
मगर झूठों के आगे कब झुका है

किताबें पढ़ती हूँ तो तेरा चेहरा
किताबों से हमेशा झांकता है

हवेली बिक गई है उनकी ज़ीनत
सलामत पर हमारा झोपड़ा है

2

हमें मालूम है वो बेवफ़ा है
मगर ये दिल उसी का हो गया है

मेरे आँगन में कितनी रौशनी है
तेरी यादों का एक मेला लगा है

बसा है मेरी हर एक साँस में तू
मेरी धड़कन में तू ही गूंजता है

ना जाने मुझसे मिलने आयेगा कब
मेरी आँखें हैं, तेरा रास्ता है

मेरी नींदें मना लायी हैं उसको
मेरे सपनों में फिर वो आ रहा है

जुदाई की बड़ी लंबी हैं रातें
मगर इसमें मज़ा भी आ रहा हैं

हैं ज़ीनत आज दर्दो-ग़म हमारे
यही तो प्यार का तोहफ़ा मिला है

डॉ. दिनेश त्रिपाठी शम्स

जन्मतिथि-03 जुलाई, 1975
जिला-सिद्धार्थनगर-272153, उ.प्र.
मोबाइल-955 930 4131

1

व्यवस्था में रद्दो-बदल चाहते हैं,
हम अपनी समस्या का हल चाहते हैं।

उन्हें मत सुनाओ किताबों की बातें,
जो अहसास का एक पल चाहते हैं।

तुम्हारी ये दौलत तुम्हीं को मुबारक,
हम अपने पसीने का फल चाहते हैं।

न मेहनत न जज़्बा न 'बेचैनी' दिल में,
सभी किंतु होना सफल चाहते हैं।

है दरकार हमको सुखद 'आज' की हम-
नहीं कल्पनाओं का 'कल' चाहते हैं।

हमीं ने बनाया कठिन ज़िंदगी को,
हमीं ज़िंदगी को सरल चाहते हैं।

सभी को है होना अमर पी के अमृत,
अकेले हैं शिव जो गरल चाहते हैं।

2

सारे रूपक सारे बिंब विधान अधूरे हैं
तेरे सम्मुख सबके सब उपमान अधूरे हैं।

भक्त अधूरे होते हैं जैसे भगवान बिना,
भक्तों के बिन वैसे ही भगवान अधूरे हैं।

खुद से ही प्रारंभ न होता हो बदलाव अगर,
युग परिवर्तन के सारे अभियान अधूरे हैं।

अभी-अभी तो आए ही हो लो चल पड़े अभी
अभी न जाओ अभी मेरे अरमान अधूरे हैं।

घर में घर के जैसा कुछ भी लगता नहीं मुझे,
बिना तुम्हारे घर के सब सामान अधूरे हैं।

तेरे बदन की ख़ुशबू मुझमें ऐसी है पैबस्त
इत्र, अगर, परफ्यूम, धूप, लोबान अधूरे हैं।

जिनमें प्यार मुहब्बत वाले फूल न शामिल हों,
रिश्तों के वे सारे ही गुलदान अधूरे हैं।

डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह 'त्यागी'

जन्मतिथि-21 जनवरी, 1955

समस्तीपुर, बिहार

मोबाइल 911 357 4997

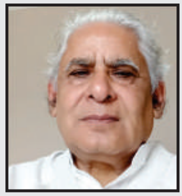

1

जो गिरे हैं उन्हें उठाया कर।
इस तरह पुण्य कुछ कमाया कर।

क़र्ज़ जिसका भी हो चुकाया कर।
फ़र्ज़ अपना सदा निभाया कर।

सब हँसे यह प्रयास करना तू,
पर किसी को नहीं रुलाया कर।

हाय लग जायगी तुझे उसकी,
मत किसी को कभी सताया कर।

याद सबकी सदा प्रशंसा रख,
हो जो अपमान भूल जाया कर।

काम हो जो अगर नहीं कोई,
बैठ बच्चों को ही पढ़ाया कर।

ख़र्च लगता न मुस्कुराने में,
ख़ूब त्यागी तू मुस्कुराया कर।

2

हर किसी इंसान में होती हैं कुछ अच्छाइयाँ।
आप पर है ढूँढते हैं कितनी उसमें ख़ूबियाँ

भूल तो वो ही करेगा जो करेगा काम कुछ,
जो करेगा कुछ नहीं वह क्या करेगा ग़लतियाँ।

ज्ञात है जिसको यहाँ पर यार झुकने की कला,
क्या बिगाड़ेगी भला उसको कभी ये आँधियाँ।

आज मेरी, आपकी कल, फिर किसी कल और की,
एक की बनकर नहीं रहतीं कभी भी कुर्सियाँ।

जब न वो दिन रह सकें तो ये टिकेंगे क्यों भला
हौसला रखिए जो घेरें ग़म की काली बदलियाँ

जानलेवा है अदाएँ हुस्न की मत पूछिए,
सीधे-सादे दिल पे अक्सर कौंधती हैं बिजलियाँ

अब अकेला पन मुझे है काट खाने दौड़ता
मार देंगी एक दिन 'त्यागी' मुझे तन्हाइयाँ।

डॉ. नलिन

जन्मतिथि 18 जनवरी, 1948
कोटा...324005 राजस्थान
मोबाइल 941 399 7457

1

फूल हैं तो तितलियाँ हैं
नित नदी से लहरियाँ हैं

देखते काँटे रहे यदि
सिसकियाँ ही सिसकियाँ हैं

जा रहा वह कर्मपथ पर
सामने तो भित्तियाँ हैं

हँस रहे हैं किन्तु उनकी
सब उजागर करनियाँ हैं

जो रहीं भरती कुलाँचें
अब कहाँ वे हिरनियाँ हैं

रक्त बहता है गली में
बन्द होतीं खिड़कियाँ हैं

है बुझा सा मन 'नलिन' का
पर कहीं तो बत्तियाँ हैं

2

ये जो मोती पाए हैं
जा गहरे में लाए हैं

मरहम क्या देंगे हमको
घाव नहीं वे खाए हैं

दूरी एक हाथ की है
वह भी पाट न पाए हैं

घूमे हैं हम नगर नगर
रहने जंगल धाए हैं

पीछा क्यों न छोड़ते दिन
जिनको छोड़े आए हैं

हम तो यों ही आ निकले
आप बड़े घबराए हैं

समझे नहीं नलिन को वे
सजधज मिलने आए हैं

डॉ. पुरुषोत्तम 'यक़ीन'

जन्मतिथि-21 जून, 1957
हिण्डौन, ज़िला-करौली-322234
मोबाइल-941 493 9574

1

धन-शक्ति जिन के पास है
जन-शक्ति उन की दास है

परिधान जिस का है धवल़
वो आदमी बस ख़ास है

रक्तिम क्षितिज है दृष्टिगत
किस भोर का आभास है

बदले हुए परिवेश में
बिखरा हुआ इतिहास है

डिग्री लिए फिरते रहो
तुम को मिला बनवास है

चिपके अधर अब खोल दे
कुछ बोल दे, क्या प्यास है

चाहो जहाँ चर लो 'यक़ीन'
चहुँ ओर कितना घास है

2

नदिया की कल-कल, छल-छल में
डूब गए दुख निर्मल जल में

दूर गगन में जड़े सितारे
मोती गहरे सागर तल में

नींद से जागी श्यामल गोरी
द्युति चमकी काले बादल में

प्यासे जीवन में दुख बरसे
सावन आया है मरुथल में

आँसू खारे, खारा सागर
कितना मीठा जल बादल में

शतदल से दुर्गन्ध न आये
अपितु सुगन्ध नहीं दलदल में

जो भी मानें आप 'यक़ीन' अब
होती है कुछ बात ग़ज़ल में

डॉ. पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'

जन्म तिथि: 5 सितंबर
पटना
मोबाइल-834 048 4896

1

यूँ स्वयं के पक्ष में तकरार करना चाहिए,
किन्तु चर्चा में सहज व्यवहार करना चाहिए।

खींचिए टाँगें परस्पर एक दूजे की मगर,
जो उचित हो, श्रेष्ठ हो स्वीकार करना चाहिए।

हों भले मतभेद पर मनभेद में परिणत न हों,
सर्वदा यह नीति अंगीकार करना चाहिए।

छल प्रपंचों में रहे हों लिप्त जिनके भी क़दम,
उनकी संगति का सदा परिहार करना चाहिए।

जब कभी निर्बल के अधिकारों का होता हो हनन,
हर तरह उस कृत्य का प्रतिकार करना चाहिए।

जागते सोते रहें हर पल वो अपने सामने,
स्वप्न जो देखें उन्हें साकार करना चाहिए।

नींव का मजबूत होना प्राण है निर्माण का,
दृढ़ सदा हर कार्य का आधार करना चाहिए।

2

वही साथ दिल से निभाना भी चाहे,
वही प्यार अपना भुलाना भी चाहे।

नई रीति है आजकल प्यार की भी,
लुभाना भी चाहे सताना भी चाहे।

सँजोए हैं जो स्वप्न अंतर में उसने,
छुपाना भी चाहे बताना भी चाहे।

पलक पे बिठाता रहा प्रेम से जो,
वही दृष्टि से क्यों गिराना भी चाहे।

है पिंजरे में पर उड़ना भूला नहीं है,
ये पंछी सभी को जताना भी चाहे।

बताकर कि है प्रेम का मार्ग दुष्कर,
क़दम साथ मिलकर बढ़ाना भी चाहे।

मेरी भाग्य से यदि है आशा तो इतनी,
गिराए अगर तो उठाना भी चाहे।

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

28 अक्टूबर, 1940

ग़ाज़ियाबाद-201016

मोबाइल-976 000 7838

1

यह हुआ क्या चमत्कार है
कौन-सा आया त्योहार है

फूल-कलियों पे आठो पहर
ढीठ भँवरों का गुंजार है

हो चली स्निग्ध क्यों चाँदनी
सिंधु में भी उठा ज्वार है

वन-वधू आज किसके लिए
कर रही साज-श्रृंगार है

खिल उठीं सारी अमराइयाँ
पंछियों में मची रार है

क्यों विरहिणी थिरकने लगी
मन में कैसा ये संचार है

'जीत' ऋतुराज हैं आ रहे
पिक ने भेजा समाचार है

2

हम कहें कैसे अपनी व्यथा
दुख-भरी है हमारी कथा

मिल गये आप अच्छा हुआ
मर गये होते हम अन्यथा

वह मुझे देगा धोखा कभी
स्वप्न में भी तो सोचा न था

रात के साथ ही ढल चली
रातरानी की अंतर्कथा

घृत मिले भी तो कैसे मिले
रात-दिन हमने पानी मथा

खेलना दिलसे फिर तोडना
प्यार की अब यही है प्रथा

'जीत' होती है बस धैर्य की
आपदा-काल में सर्वथा

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह

जन्मतिथि 22 जुलाई, 1940
राजेन्द्र नगर, पटना
मोबाइल-886 304 5716

1

बीत गया जो वो मौसम दो
ज़्यादा ख़ुशियाँ थोड़े ग़म दो

सुख का सेज सजाना है तो
स्वच्छ हवा जल शुद्ध न कम दो

पर्यावरण के हित में बच्चो!
सीख बड़ों को तुम हरदम दो

बरसों से चोटिल है काया
ज़ख़्म भरे ऐसा मरहम दो

शीशमहल की चाह किसे है
रहने को छप्पर बम बम दो

सूखी नदियाँ सूखे पोखर
प्यास बुझाने को शबनम दो

सुख की चाह मुझे भी 'मेहता'
और नहीं अब आँखें नम दो

2

पग पग पर हैवान मिलेंगे
मुश्किल से इन्सान मिलेंगे

मन्दिर के आगे होंगे सब
मतलब के हनुमान मिलेंगे

जंगल का रकबा घटने पर
पथरीले मैदान मिलेंगे

ग्लोबल तापन भू पर आफ़त
तेजस में दिनमान मिलेंगे

धरती पर उन्चास पवन हैं
सागर में तूफ़ान मिलेंगे

मौसम थोड़ा साथ निभाना
बादल भी हलकान मिलेंगे

'मेहता' को रहना सचेत है
संगम पर शैतान मिलेंगे

डॉ. राकेश जोशी

जन्मतिथि-9 सितंबर, 1970
देहरादून, उत्तराखंड-248140
मोबाइल–941 115 4939

1

जब अँधेरों से कहीं मैं मिलके आता हूँ
देर तक उस दिन मैं बच्चों को पढ़ाता हूँ

मैं नदी को रोज़ छूकर देखता हूँ, सच
और फिर जंगल को मैं जंगल बनाता हूँ

मैं तुम्हारे ही लिए सपने नहीं बोता
रोटियाँ अपने लिए भी मैं उगाता हूँ

कारख़ानों का धुआँ जब याद आता है
लौटकर घर पर मैं फिर चूल्हा जलाता हूँ

मैं कभी तुमसे किए वादे निभाता था
आजकल अपने लिए पैसे कमाता हूँ

अब भी कचरे की तरह फेंके गए हैं जो
मैं उन्हीं के गीत लिखता, गुनगुनाता हूँ

इक नई दुनिया को धरती पर बुलाने को
गिट्टियाँ ढोता हूँ मैं सड़कें बिछाता हूँ

2

जब कभी दरबार लिखना
ख़ूब अत्याचार लिखना

आदमी को हर कहानी
में बहुत लाचार लिखना

आँख में आँसू दिखें तो
बीच में दीवार लिखना

बुझ चुके सपनों की बातें
लिख के फिर अंगार लिखना

पाँव में बेड़ी लिखो जब
हाथ में तलवार लिखना

भूल जिसको वो गए हैं
है बहुत बीमार लिखना

जब भी लिखना सीखना तुम
इक नया संसार लिखना

डॉ. विकास सोलंकी

जन्म तिथि-04 फरवरी 1983

परबत्ता, खगड़िया-851216

मोबाइल-990 505 9156

1

हो रहा है पाप का कुछ इस तरह पंजीकरण
पुण्य का कोई नया मिलता नहीं अब उद्धरण

फूल को भी फूल कहना हो रहा मुश्किल यहाँ
सोचता हूँ सत्य का कैसे करूँ मैं अनुसरण

धर्म के पाखण्ड में सबकुछ उलझ कर रह गया
सभ्यता तो चाहती है सभ्य सब का आचरण

क्या पता किस भेष में रावण कहाँ मिल जायेगा
खींच दी थी जो लखन ने रेख का कर संवरण

चीख़कर कल कह गई थी आत्मा इक गिद्ध की
साँस रहते हो नहीं सकता कभी सीता हरण

देश की इज्ज़त लगी थी दाव पर जब सोचिए
इक गिलहरी कर गई थी सेतु का पुष्टिकरण

सत्य को जिसने जिया है आग पर चलकर यहाँ
माँगती दुनिया उसी से आज भी स्पष्टीकरण

2

प्रश्न मेरे सामने तो आज भी इक यक्ष है
सोचता हूँ क्यों युधिष्ठिर द्रोण का प्रतिपक्ष है

तोड़ देंगे आज मानक जो गढ़ा इतिहास ने
लक्ष्य अर्जुन-सा हमारा भीम जैसा वक्ष है

पूछता हूँ प्रश्न जब भी उत्तरों की खोज में
मौन रहता है हमेशा जो सभा अध्यक्ष है

साधना के ताप में तपता रहा हूँ उम्र भर
भेदना मैं चाहता हूँ मीन का जो अक्ष है

भोग रोटी साग का जिसने लगाया भाव से
प्रेम की अवधारणा में कौन अब समकक्ष है

कुछ नहीं मैं कर सका हूँ ख़ास बातें आज तक
क्या छिपाता ज़िन्दगी को सब यहाँ प्रत्यक्ष है

डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'

जन्मतिथि-17 अप्रैल 1949

गुरुग्राम-122101: हरियाणा

मोबाइल-981 116 9069

1

सताती है बहुत लड़की मुझे दो चोटियों वाली,
सितारे जिसके आँचल में ज़बाँ है मोतियों वाली।

ग़ज़ब ढाता है वो उसका चमन में सैर को आना,
कुलाँचे भर ग़ज़ाला सी ठसक से तितलियों वाली।

वो बिफरी बाघनी-सी बन के जब हुँकार भरती है,
दहल जाती हैं सारी बिल्डिंगें वो गुम्बदों वाली।

गुलाबों में गुलाबों-सी शराबों में शराबों-सी,
थिरकती उसके यौवन से डगर पगडण्डियों वाली।

इशारों ही इशारों में हज़ारों तंज कसती है,
लगामें कस के रखती है मेरी वो बंदिशों वाली।

वो जोबन से दहकती है वो अंगारे सी जलती है,
गरजती है, कड़कती है, किरण वो बिजलियों वाली।

'शलभ' की करवटों में, ख़ल्वतों में और ख़्वाबों में,
बसी है रूह में लड़की अभी दो चोटियों वाली।

2

किसी के प्यार में पागल उड़ी तितली पकड़ लेना,
मचलती उसके होंठों से कोई सिसकी पकड़ लेना।

बरसते पानी में मिलने वो तुमसे आ रही हो तो,
उसे आग़ोश में भर कर जरा छतरी पकड़ लेना।

तुम्हारे पास आकर फिर किसी की याद जो आये,
धड़कते दिल से फिर महबूब की हिचकी पकड़ लेना।

जो उतरे ताल में चन्दा तो फिर जाने नहीं देना,
रिदाएँ भर के ज़ालिम की सभी चाँदी पकड़ लेना।

ये शीशे ता-क़यामत तक भी पढ़ पाते नहीं सीरत,
हथेली खोलने से पहले ही मुट्ठी पकड़ लेना।

तुम्हारे हुस्न की ज़ीनत हमें जीवन से प्यारी है,
हंसी रुख़सारों की, आँखों की, हर शोख़ी पकड़ लेना।

जकड़ लेती दरख़्तों को मुहब्बत अपनी बाहों में,
हवा आये बने आँधी 'शलभ' आँधी पकड़ लेना।

डॉ. शिवओम अम्बर

जन्मतिथि 23 सितंबर, 1952

फर्रुखाबाद–209625

मो-941 533 3059

1

अथक अविराम अक्षर-साधना है,
हमारी ज़िन्दगी नीराजना है।

सियासत सर्जना है शूलवन की,
कला विग्रहवती शुभकामना है।

अधर पर काँपती वो मुस्कराहट,
प्रणय के ग्रन्थ की प्रस्तावना है।

उसे उपलब्धि में परिणत करेंगे,
हमारे पास जो संभावना है।

विचारें सूक्ष्मता से तो लगेगा,
अभीप्सा मुक्ति की भी वासना है।

कभी थी चाँदनी की रूपगाथा,
ग़ज़ल अब अग्नि की आराधना है।

2

आक्षितिज जो भी प्रत्यक्ष है।
इन्द्रधनुषों के समकक्ष है।

इष्ट है द्रोह शिव का उसे,
दर्प ही दिग्भ्रमित दक्ष है।

राग है रामगिरि का शिखर,
गीत प्रति पल विकल यक्ष है।

पक्ष प्रतिपक्ष के पोषको,
सत्य निरपेक्ष निष्पक्ष है।

दर्द हर रंग का है यहाँ,
मेरा दिल इक सभाकक्ष है।

डॉ. संगीता नाथ

जन्मदिन-03 फ़रवरी, 1963
धनबाद, झारखण्ड-826001
मोबाइल-943 116 8918

1

सच्चाई से आँख मिलाना सबके बस की बात नहीं,
पर जीवन का सच झुठलाना सबके बस की बात नहीं।

सरहद पर दिन रात खड़े जाँबाजों का जज़्बा अतुलित,
हँसते हँसते प्राण लुटाना सबके बस की बात नहीं।

जीवन की पथरीली राहें मंजिल भी अंजान यहाँ,
दूर क्षितिज तक दौड़ लगाना सबके बस की बात नहीं।

आज भरोसे का होता जब क़त्ल यहाँ हर एक घड़ी,
दिल से दिल का फ़र्ज़ निभाना सबके बस की बात नहीं।

अपनी अपनी डफली सबकी राग सभी के अपने हैं,
और किसी की बीन बजाना सबके वश की बात नहीं।

जीवन की हर एक कहानी खट्टी मीठी होती है,
स्वाद चखे बिन उम्र बिताना सबके वश की बात नहीं

बहुत अँधेरा फैला माना इक अनहद सूनापन है,
क्यों लगता है दीप जलाना सबके बस की बात नहीं।

2

आइना ख़ुद सँवरने लगा देखिए,
रूप इंसां बदलने लगा देखिए।

आह उर में दबी रह गई इस तरह।
दर्द यूँ सब पिघलने लगा देखिए।

प्रेम की राह सुनसान होने लगी,
दिल भी पाषाण बनने लगा देखिए।

रात आई शरद की लिए चाँदनी,
चाँद कैसे निखरने लगा देखिए।

हमक़दम बन चला राह में साथ जो,
वो छुड़ा हाथ चलने लगा देखिए।

बस उसी के लिए जो नहीं मिल सका,
बावरा मन बहकने लगा देखिए।

चाँदनी रात सा वक़्त था जो कभी,
बन अमावस गुज़रने लगा देखिए।

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

जन्मतिथि-3 नवंबर, 1972
अलवर, राजस्थान-301001
मोबाइल-707 371 3013

1

दुनिया में इसकी गूँज हो, आकाश में परचम रहे
मेरे वतन में गंगा-यमुना का वही संगम रहे

जाने कहाँ पर खो गई ख़ुशबू हमारे शहर की
है आरज़ू पहले-सा वो महका हुआ मौसम रहे

सब नीम-पीपल कट गए हैं गुलमुहर के शहर में
आबो-हवा बदली हुई, बरगद न अब शीशम रहे

दादी सुनाती थी कभी मिसरी सरीखी लोरियाँ
वो प्यार का लहजा बड़ों का हममें भी क़ायम रहे

आँगन में खिलती धूप में जुड़ते सभी थे प्यार से
खाटों पे वो पसरी हुई दोपहर भी हरदम रहे

इतने दिमाग़ी हो गए हम भूल बैठे प्यार को
चाहत यही बस प्यार से लबरेज़ ये आदम रहे

हम तो सभी हैं इक समंदर की ही लहरें अनगिनत
बहते रहें हम साथ ही जब तक कि दम में दम रहे

2

चाँद, सूरज, दीप बनकर हर घड़ी लड़ती रही
इन अँधेरों से सदा ये रोशनी लड़ती रही

पर्वतों का, घाटियों का, साथ तो छूटा मगर
सागरों के पास जाने तक नदी लड़ती रही

दर्द तो देकर गए सच्चाइयों के रास्ते
झूठ से फिर भी पिता की सादगी लड़ती रही

पर उसे मिल ही न पाई एक चाहत की नज़र
प्रेम की चाहत में चाहत बावरी लड़ती रही

छोड़कर पल्ला जो आगे बढ़ गई शृंगार का
फिर समय को धार देकर शायरी लड़ती रही

था बहुत संघर्ष लेकिन, दसमुखों के सामने
राम के दिल में जली वो रोशनी लड़ती रही

इक समस्या ख़त्म होती दूसरी थी सामने
आख़िरी दम तक यूँ ही बस ज़िंदगी लड़ती रही

3

बासंती रुत में जब, मन मधुमास हुआ
अलंकार-छंदों का नव्य प्रयास हुआ

पर्वत ने झुककर जब मुझसे बातें की
मुझको भी अपनेपन का अहसास हुआ

झरनों के मीठे-मधुरिम गीतों को सुन
मेरा मन भी पलभर को रक्कास हुआ

पीली सरसों - फूल - नदी - तितली - बादल
सबसे ही मिल ख़ूब हास-परिहास हुआ

चित्र अनूठे देखे जब भी क़ुदरत के
उस बेजोड़ चितेरे का आभास हुआ

उस नीरवता में अपने को खोज रहा
ध्यान-साधना में कोई, अहसास हुआ

क्षण के सच को बाँधा जब-जब शब्दों ने
गीत-ग़ज़ल या फिर कोई इतिहास हुआ

4

कहाँ मैं भूल पाता, याद आती है मेरी मिट्टी
यहाँ परदेस में कितना रुलाती है मेरी मिट्टी

निकल आया हूँ घर से दूर माँ के कुछ सपन लेकर
सुनाकर लोरियाँ मुझको बुलाती है मेरी मिट्टी

ये दिन तो उलझनों में जैसे तैसे बीत जाता है
मगर हर शाम यादों में सताती है मेरी मिट्टी

वो घर-देहरी, वो आँगन, बाग़ गलियाँ, वो सभी साथी
सभी के रूप में कितना लुभाती है मेरी मिट्टी

वो माँ की रोटियों में एक मोटी-सी परत घी की
मुझे जब याद आती तो रुलाती है मेरी मिट्टी

उसी मिट्टी की ख़ुशबू को यहाँ लेकर चला आया
सभी को प्यार बाँटू मैं, सिखाती है मेरी मिट्टी

तू फैलाना मेरी ख़ुशबू जहाँ के कोने-कोने में
यही तो जागते-सोते बताती है मेरी मिट्टी

मैं छूकर आसमाँ इक रोज़ घर को लौट जाऊँगा
न जाने क्यों मुझे फिर-फिर बुलाती है मेरी मिट्टी

डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा

जन्मतिथि 16 फरवरी
बुद्धा कालोनी, पटना-8000001
मोबाइल-834 078 5305

1

तारे छिपने लगे, डर गये भोर से
चाँद चलता बना सूर्य के ज़ोर से

आँधियों में शजर जो नहीं झुक सके
वो उखड़ कर गिरे भूमि पर शोर से

पंख फैला दिखाएँ लुभावन छटा
देखिए नृत्य मोहक किसी मोर से

सूर्य और चंद्रमा की कशिश ही तो है
ज्वार भाटा उठे सिंधु में कोर से

पीपलों बरगदों पेड़ पौधों से ही
स्वच्छ वायु मिले हमको चहुँ ओर से

2

तेरी चाहत भली भली होगी
तेरी सुहबत में हर ख़ुशी होगी

सारथी बन के तुम जो साथ रहो
मेरे चेहरे पे ताज़गी होगी

तेरे बिन हमनवा यक़ीन करो
ज़िंदगी मे नहीं ख़ुशी होगी

देश के दुश्मनों सँभल जाओ
वरना मुश्किल में ज़िन्दगी होगी

कह रही है सुधा मेरे दिलबर
तुम से रौशन मेरी गली होगी

डॉ. सुनीता सिंह 'सुधा'

जन्मतिथि-9 फ़रवरी, 1978
हिसार, हरियाणा 125001
मोबाइल-967 161 9238

1

जब कोई अफ़साना पढ़ना
हर चेहरे पर चेहरा पढ़ना

तनहाई की परछाईं में
बैठ के अपना साया पढ़ना

आवाज़ों के घेरे में तुम
सीखो अब तो लहजा पढ़ना

भूल गया हूँ अब मैं तुमको
भूल गया हूँ लिखना पढ़ना

इक दिन मेरे प्यार का क़िस्सा
लोगों पन्ना-पन्ना पढ़ना

दुख की रैन में नम आँखों से
उनका टूटा सपना पढ़ना

आपाधापी में फ़ुरसत से
ख़ुद को थोड़ा-थोड़ा पढ़ना

2

सबको ही बहलाती कुर्सी
अपना रंग दिखाती कुर्सी

दौड़ रहे हैं मंदिर-मस्जिद
कसरत ख़ूब कराती कुर्सी

ख़्वाब में आकर ललचाए
आपस में लड़वाती कुर्सी

पैसे से हासिल है डिग्री
कितनों को अब भाती कुर्सी

सड़को से संसद तक वादे
ख़ूब उन्हें नचवाती कुर्सी

नौकर अफ़सर खींचे-ताने
भाव बहुत अब खाती कुर्सी

कुर्सी-कुर्सी अब सब रटते
पैसा, रुतबा लाती कुर्सी।

लक्ष्मी प्रसाद बडोनी

उपनाम-दर्द गढ़वाली
जन्मतिथि-23 अक्टूबर, 1965
देहरादून (उत्तराखंड)-248005
मोबाइल-945 548 5094

1

मेरे भीतर शोर मचाता सन्नाटा है।
लेकिन बाहर यार बला का सन्नाटा है।

दिल की धड़कन साफ सुनाई देती है अब,
कितना अच्छा कितना प्यारा सन्नाटा है।

मेरी कोई बात लगी क्या दिल पर यारो,
महफ़िल में क्यों इतना पसरा सन्नाटा है।

दहशत दंगे गुंडागर्दी पत्थरबाजी,
देखो कारोबार ही उनका सन्नाटा है।

उनकी मंशा ही दहशत थी सो फैल गई,
सच पूछो तो उनकी मंशा सन्नाटा है।

'दर्द' सियासत से हमको कोई बैर नहीं,
इसने सोच-समझकर पाला सन्नाटा है।

2

हाल जो तुमने पूछा होता।
दुख अपना भी हल्का होता।

हम क्यों फिरते मारे-मारे,
घर जो अपना घर सा होता।

घाव हमें यूँ देने वालो,
दर्द हमारा समझा होता।

चलते हम भी साथ तुम्हारे,
हमसे भी तो पूछा होता।

साथ हमारे तुम जो होते,
पास हमारे क्या-क्या होता।

घुट-घुट कर जीने से यारो,
मर जाते तो अच्छा होता।

लौट चले आते हम मुड़कर,
तुमने 'दर्द' पुकारा होता।

दिनेश सिंदल

जन्मतिथि-11 मई 1956
जोधपुर (राज.)-342008
मोबाइल-774 294 4505

1

न आनी की न जानी की ख़बर है
हमें बस ज़िंदगानी की ख़बर है

कहाँ है रास्ता मंज़िल कहाँ है
नदी को बस रवानी की ख़बर है

जिसे प्रस्तावना में छोड़ आए
उसे पूरी कहानी की ख़बर है

हमारे हाथ है मिसरा उला बस
नहीं मिसरा ए सानी की ख़बर है

हुई गर शाम तो ढलना पड़ेगा
क्या सूरज को जवानी की ख़बर है

मिलेंगे फूल या कांटे मिलेंगे
हमें बस बाग़बानी की ख़बर है

सुनेगा क्यों ग़ज़ल 'सिंदल' तुम्हारी
जिसे बस लाभ-हानी की ख़बर है

2

सच के मुंह पर ही ताला है सच पूछो तो
कैसा ये गड़बड़ झाला है सच पूछो तो

सूरज को कहता काला है सच पूछो तो
आँखों में उसके जाला है सच पूछो तो

आज मुझे अनदेखा करता फिरता है जो
वो मेरा देखा भाला है सच पूछो तो

उजले उजले भाषण देगा चौराहों पर
कर आया जो मुंह काला है सच पूछो तो

उसकी रक्षा की ख़ातिर लड़ना मुझको है
यूँ वो मेरा रखवाला है सच पूछो तो

गंगा से मिलकर वो गंगा-सा पावन है
किंतु अकेले में नाला है सच पूछो तो

तेरे घर का रास्ता मुश्किल हमको 'सिंदल'
रस्ते में इक मधुशाला है सच पूछो तो

दिलीप समदर्शी

जन्म तिथि 05 फ़रवरी, 1970
बथनाहा, जिला अररिया-854316
मोबाइल–870 902 2692

1

कांच जैसे ही टूटा बिखरना पड़ा,
ग़म के दरिया में हम को उतरना पड़ा।

आह निकले, बहे अश्क भी आँख से
दर्द की हद से हम को गुज़रना पड़ा।

इस तरह टूटे हम फिर जुड़े ही कहाँ,
ज़िंदगी की दरारों को भरना पड़ा।

बेरहम संग-दिल के लिए भी हमें,
राह में फूल बन कर बिखरना पड़ा।

सब से इंसाफ हो जग सुरक्षित रहे,
इसलिए युद्ध अपनों से करना पड़ा।

फ़लसफ़ा ज़िंदगी का कठिन है बहुत,
औरों के हित में हमको सँवरना पड़ा।

2

मुस्कुराने की अभी फ़ुरसत नहीं है,
दिल लगाने की कोई चाहत नहीं है।

देख कर हैरान उनकी बेरुख़ी हूँ,
अब तो मुझसे ही उन्हें उलफ़त नहीं है।

दिन न चाहत के न राहत के रहे अब,
पर किसी से तो मुझे नफ़रत नहीं है।

जो मुहब्बत के लिए क़ुर्बां हुए हैं,
उनकी ख़ातिर ही कोई मोहलत नहीं है।

मैं हूँ इक गुमनाम शायर इस जहाँ में,
मेरे हिस्से में कोई शोहरत नहीं है।

ढूँढ लीजे आप 'समदर्शी' कहीं भी,
इस मुहब्बत से बड़ी दौलत नहीं है।

दुर्गेश कुमार 'शाद'

जन्मतिथि-12 अक्टूबर, 1980
इंदौर-452016 (मध्य प्रदेश)
मोबाइल-932 923 3344

1

जब ख़त पीले हो जाते हैं,
और नशीले हो जाते हैं

हम अपनी पर आ जाएँ तो,
पर्वत ढीले हो जाते हैं

सुनकर मेरे दुख की बातें,
पत्थर गीले हो जाते हैं

थोड़े दिन में शीशों जैसे,
हम नोकीले हो जाते हैं

छूने दो आसमान इक दिन,
बच्चे टीले हो जाते हैं

जब-जब ओढ़ी चुप्पी हमने,
होंठ कँटीले हो जाते हैं

गाँवों में हम हर्षित होकर,
छैल-छबीले हो जाते हैं

2

जब-जब सच मैं बोला था,
धरती-अम्बर डोला था

उस बेला तू नव-वय थी,
साल मेरा भी सोला था

झूठी बात को समझा सच,
मैं भी कितना भोला था

था जीवन का सत्य यही,
ये शरीर इक चोला था

आस्तीन में चढ़ बैठा,
आख़िरकार सपोला था

विष-सूली दी भेंट उसे,
जब कोई सच बोला था

दर्पण दोस्त बना था जब,
अपने बीच अबोला था

द्रौपदी साहू

जन्म तिथि-9 अगस्त 1990

बिलासपुर, छत्तीसगढ़-495001

मोबाइल–882 702 0265

1

मन के भीतर उथल पुथल है।
नैनों का उद्गार सजल है।।

नियति मनुज की जो देखूँ तो
मन होता जाता घायल है।

लक्ष्य हीन जीवन यह सारा
निष्फल बीत रहा हर पल है।

कब क्या होगा किसे पता है,
भाग्य सदा रहता ओझल है।

सुख-दुख आते-जाते जैसे,
रात अँधेरी, दिवस धवल है।

प्रेम पूर्ण शब्दों की माला
लगती जैसे एक ग़ज़ल है।

एक बूँद ही नेह, हृदय को
करती गंगा सी निर्मल है।

राजा हो या रंक सभी की,
मृत्युलोक में मृत्यु अटल है।

2

प्यास बहुत है जीने की।
हालत ख़स्ता सीने की!

करे बहाना चिंता का,
आदत मदिरा पीने की।

मुजरिम आज दुआ चाहे,
मक्का और मदीने की।

फूँक रहा बैठे-ठाले
पूरी आय महीने की।

सेज फूल की क्या समझे
कीमत कभी पसीने की!

दिशा भँवर की ओर हुई,
क्यों मल्लाह, सफ़ीने की!

शान शहीदों की होती,
जैसे चमक नगीने की!

धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'

जन्मतिथि 7 जुलाई, 1964
गायघाट वाराणसी-221001
मोबाइल 893 506 5229

1

मैं जो इतना सरल नहीं होता
मेरे हिस्से गरल नहीं होता

मैं न होता कभी सफल इतना
जो शुरू में विफल नहीं होता

हर कोई शिव तो हो नहीं सकता
पेय सबका गरल नहीं होता

कुछ तो कमज़ोरियाँ रहीं होंगी
यूँ तो कोई विफल नहीं होता

प्रेम की झील यूँ सरसती नहीं
जो विरह का कमल नहीं होता

अश्रु आँखों में और अधर पे हँसी
ऐसा अभिनय सरल नहीं होता

'आज' होता न यूँ अहम 'साहिल'
आगे पीछे जो 'कल' नहीं होता

2

यूँ नहीं मरती प्रबल सम्भावना
आप जो करते सही आलोचना

भाव है बाक़ी न कोई भावना
मर चुकी कबकी यहाँ संवेदना

लिख रहा हूँ ज़िन्दगी पर मैं निबंध
पर न अब तक बन सकी प्रस्तावना

मानता हूँ स्वाति का है मेघ वो
तू भी चातक बन जा, मत कर याचना

रास्ता सुनसान, है सर्दी की रात
और उस पर हर तरफ़ कोहरा घना

उनको मेवा, दूध, फल, मिष्ठान्न, घी
औ'हमें रोटी-नमक या गुड़-चना

क्या प्रशंसा भी कभी होगी मेरी
या सदा होगी मेरी आलोचना

पुष्प, दीपक, है, न है नैवेद्य ही
कर रहा हूँ फिर भी 'साहिल'अर्चना

नवीन सी चतुर्वेदी

जन्मतिथि 1 जनवरी 1969
कांदिविली पूर्वी, मुंबई 400101
मोबाइल-996 702 4593
ब्रजगजल प्रवर्तक एवं बहुभाषी शायर

1

धवल मुखचन्द्र पर जब श्याम कुन्तल नृत्य करते हैं
तो यों लगता है ज्यों लहरा के बादल नृत्य करते हैं

सभा सावन सजाये और पावस हो पखावज पर
गगन कहता है तत् तत् थेइ जल थल नृत्य करते हैं

सरोवर में कभी हंसों के जोड़े का प्रणय देखो
हृदय जिनके हों निश्छल वे ही निर्मल नृत्य करते हैं

कोई संकल्प कर ले तो असम्भव कुछ नहीं प्रियवर
यहाँ चरणों से वंचित शीश के बल नृत्य करते हैं

पतंजलि जैसा जब कोई धरा पर जन्म लेता है
मगन हो जाते हैं बरगद औ पीपल नृत्य करते हैं

भले अमृत गटक कर भी जगत उलझा रहे लेकिन
जगत के मित्र शिव पी कर हलाहल नृत्य करते हैं

2

प्रीत में हर बात को विपरीत कहते हैं
मन चुराता है उसे मनमीत कहते हैं

जो हृदय को भा गया सुन्दर वही है बस
छाछ हो तो भी उसे नवनीत कहते हैं

हो भले अन्तर पै अन्तर्मन में हो पल-पल
हम विरह को भी मिलन का गीत कहते हैं

भीड़ की सुनिए नहीं सुनिए तो बस मन की
लोग तो अनरीत को भी रीत कहते हैं

क्लान्त मन जब शान्त हो कर ध्यान धरता है
हम रसिक उस मौन को संगीत कहते हैं

बाँटकर अमृत स्वयं विषपान कर लेना
शंभु के प्रेमी इसी को जीत कहते हैं

प्यासा अंजुम

जन्मतिथि: 29सितंबर, 1949.
जम्मू-180016.
मोबाइल-941 910 1315

1

वो नया विश्वास लिखने आएगा।
फिर नई इक आस लिखने आएगा।।

उसने गीता में किया वा'दा तो है।
फिर नया इतिहास लिखने आएगा।।

छुप गया है जो गुफाओं में कहीं।
रौशनी की रास लिखने आएगा।।

सो रहा है जो धरा की कोख में।
जगते ही मधुमास लिखने आएगा।।

तुम भी मर्यादा में रहना सीख लो।
वो भी तब बनवास लिखने आएगा।।

तुम उसे पहचान लेना ध्यान से।
वो तुम्हारे पास लिखने आएगा।।

वो तो ले अवतार 'अंजुम' एक दिन।
जब करेगा वास लिखने आएगा।।

2

खो गए हैं कितने राही रास्तों की भीड़ में।
ढूंढते फिरते हैं ख़ुद को उलझनों की भीड़ में।।

जा रहे हैं किस दिशा में मुक्त हो कर भाव से।
अर्थ मिटते जा रहे हैं अक्षरों की भीड़ में।।

लुप्त होती आस्थाएँ सच कहाँ स्वीकारती।
इष्ट कितने हो गए हैं मन्दिरों की भीड़ में।।

कितना व्याकुल है ये मानव सोच भी कुंठित हुई।
कौन से रस्ते पे जाए साधुओं की भीड़ में।।

क्या लिखा किसने लिखा कैसे छपा किसने पढ़ा।
मर गए हैं कितने लेखक पुस्तकों की भीड़ में।।

पदवियाँ उपलब्धियाँ कैसे मिलीं मत पूछिए।
हो गए साधन मुखर हैं साधकों की भीड़ में।।

लक्ष्य से भटके हुए शब्दों का 'अंजुम' क्या करें।
कौन अंकित कर गया हैं पत्थरों की भीड़ में।।

पवन शर्मा

जन्म तिथि-25 सितंबर, 1961
भादरा, राजस्थान-335501
मोबाइल-968 054 1071

1

चौका-आँगन रोज़ बुहारे
चंचल चित को कौन सँवारे

ख़ुद से ख़ुद जब मिलते हैं हम
हो जाते फिर वारे-न्यारे।

दोष भला क्या है क़िस्मत का
बोयें-काटें भाग्य हमारे।

मिलते हैं अब मतलब से ही
रहते थे जो साथ हमारे।

सब अपने जैसे दिखते हैं
क्या पूछें फिर ज़ात बता रे।

रोज़ मिलाता है तलपट तो
साँसों का भी जोड़ घटा रे।

2

कहीं मलमल।
कहीं वल्कल।

कहीं जल जल,
कहीं जल छल।

कहीं धन-बल,
कहीं छल-बल।

कहीं सूखा,
कहीं दलदल।

जले हैं दिल,
नहीं दमकल।

डरे घर भी,
नहीं हलचल।

'पवन' कैसे
बहे निर्मल।

3

सुनो भगवन।
है चंचल मन।

किया अर्पित
तुम्हें तन-मन।

कहो कैसे
कटे बन्धन।

पुराना कब
हुआ नूतन।

वहीं विषधर
वहीं चन्दन

खिले कैसे
भला उपवन।

पूर्णिमा सुमन

जन्मतिथि-28मई

सुदामडीह, धनबाद-828126

वाट्सएप-793 903 7709

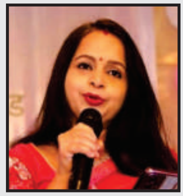

1

दिखाता जो हमें अस्तित्व का गुलशन समय ही है,
मिले जिससे हमें हर सांस का बंधन समय ही है।

किसी की याद में आँखों से जो बहता, वही पावन,
हृदय की राह में साँसों का ये चंदन समय ही है।

मिलेगा क्या हमें इस दौड़ती दुनिया के मेलों में,
कठिन जो हाथ की रेखा का है अर्जन समय ही है।

किसी के वास्ते उल्लास का नर्तन नज़र आए,
किसी की आँख का बहता हुआ क्रंदन समय ही है।

जहाँ के शोर में भी मौन की गहराई जो ढूँढे,
वही एकांत का चुपचाप सा गुंजन समय ही है।

पुरानी याद की उस धूप के साये में जो तपता,
झुलसते पाँव का जलता हुआ आँगन समय ही है।

अमिट है शक्ति इसकी, ये झुका देता पहाड़ों को,
धरा के वक्ष पर चलता हुआ शासन समय ही है।

'सुमन' जो भी लिखा तक़दीर की पाती पे है तेरी,
उसे साकार करने का प्रखर दर्शन समय ही है।

2

कठिन राहें न हों जिसमें, भला वो भी सफ़र कैसा।
न टकराए जो तूफ़ां से, उसे लहरों का डर कैसा।।

मिले आसानी से मंज़िल, तो फिर उस का मज़ा क्या है।
जो तपने से ही डर जाए, तो कुंदन का हुनर कैसा।।

वही है शौक़-ए-आज़ादी, जो पिंजरे को गिरा डाले।
गगन को छू न जो पाए, परिंदे का वो पर कैसा।।

दिए की लौ तो वो ही है, जो आँधी में भी जलती हो।
हवाओं से जो बुझ जाए, वो मिट्टी का असर कैसा।।

उसी का नाम दुनिया को हमेशा याद रहता है।
जो औरों के न काम आए, भला वो भी बशर कैसा।।

मोहब्बत में अगर दिल को, न मिल पाए सुकूँ इक पल।
न आए याद में आँसू, तो लोचन नामाबर कैसा।।

खिले जो धूप में हँस कर, वही असली 'सुमन' होगा।
खिज़ाँ में ही जो मुरझाए, गुलिस्तां का अस़र कैसा।।

प्रीति सुमन

जन्मतिथि-4 नवम्बर
सीतामढ़ी, बिहार-843324
मोबाइल-898 733 2733

1

कबतक किनारे किनारे चलेंगे
तूफ़ान के डर से हारे चलेंगे

मुझको कहीं का न छोड़ेंगे इक दिन
कबतक ये झूठे सहारे चलेंगे

जब छोड़ जाएँगे सब साथ मेरा
तब साथ मेरे सितारे चलेंगे

पढ़ना किताबों में अब हमको तुम भी
क़िस्से हज़ारों हमारे चलेंगे

आएँ न आएँ ख़ुदा हैं वो मेरे
हम तो उन्हें ही पुकारे चलेंगे

मंज़िल मिले न मिले हमको 'प्रीति'
हम हाथ थामे तुम्हारे चलेंगे।

2

साँसें टूट रही हैं तन में
तुम बिन क्या रक्खा जीवन में

काजल बिंदिया टीका ज़ेवर
सारे जा लिपटे साजन में

उस घर को घर कैसे बोलें
माँ ना हो जिस घर आँगन में

रातें बिस्तर तकिया चादर
सब के सब सिमटे दुल्हन में

बस इक बादल ही ना रोया
मैं भी रोयी हूँ सावन में

ख़ुशबू बनकर तुम महकोगे
मेरे मन के इस मधुवन में

संशय अनबन खेल और धोखा
प्रीति रह न सकी उलझन में

बनवारी लाल 'ख़ामोश'

जन्मतिथि-3 अप्रैल, 1954
चूरू, राजस्थान-331001
मोबाइल-941 360 5170

1

सभी देवताओं के गण ढूँढ़ियेगा
गले ना मिलेंगे, चरण ढूँढ़ियेगा

सिरा तो कहीं से पकड़ना पड़ेगा
सदी खो गई हो तो क्षण ढूँढ़ियेगा

अमर कोई दुनिया में रह कब सका है
बिखरते हुए अपने कण ढूँढ़ियेगा

जो औरों को उपदेश देते हैं बढ़कर
न उनके कभी आचरण ढूँढ़ियेगा

कहाँ जाइयेगा, कहाँ पाइयेगा
कहाँ अपने खोये ये क्षण ढूँढ़ियेगा

नई शोध का नाम देकर हज़ारों
किताबों में बस उद्धरण ढूँढ़ियेगा

कहीं भी सुरक्षा न कानून दे तो
कोई राजनैतिक शरण ढूँढ़ियेगा

उठा कर अंगुलियाँ व्यवस्था पे 'ख़ामोश'
लगे हाथ अपना मरण ढूँढ़ियेगा

2

सफल घरेलू जीवन-गाथा के नायक थे बाबूजी
अति संवेदनशील, सहज, साधक, चिंतक थे बाबूजी

पास उनके लोगों का दिन भर आना जाना रहता था
लोग खिंचे आते थे जैसे इक चुम्बक थे बाबूजी

बहुत कुशलता से निपटाते झगड़े-झंझट, वाद-विवाद
सब सहमत हो जाते, ऐसे निर्णायक थे बाबूजी

शब्दों की हर एक वर्तनी शुद्ध-सरल कर लेते थे
सम्बन्धों की हर पुस्तक के संपादक थे बाबूजी

दलित, दुखी मन के हर पंछी को बरगद-से लगते थे
न्याय के हित में अंगद जैसे अधिनायक थे बाबूजी

बीच बुज़ुर्गों में उनका तो एक अलग ही रुतबा था
बच्चों से बतियाते तब तब इक बालक थे बाबूजी

अपने सुख-दुख छोड़ सभी का ध्यान बराबर रखते थे
मानव, पशु क्या पौधों तक के अभिभावक थे बाबूजी

घर में पसरा सन्नाटा तक सांस नहीं लेता अब तो
घर की सारी गतिविधियों के संचालक थे बाबूजी

उनके रहते समझ ना पाया, अब जाकर मैं समझा हूँ
किस लायक ये दुनिया है और किस लायक थे बाबूजी

बाबा बैद्यनाथ झा

जन्म-तिथि-03 अगस्त, 1955
पूर्णियाँ, बिहार-854301
मोबाइल-754 387 4127

1

मूल्य दे आप दर्शक जुटाते रहे।
वाहवाही उन्हीं से कराते रहे।

छन्द का ज्ञान बिल्कुल नहीं आपको,
मंच पर विज्ञ खुद को कहाते रहे।

अन्य की आप पढ़ते ग़ज़ल गीतिका,
आज मैंने लिखी यह बताते रहे।

वाक-चातुर्य में आप तो हैं निपुण,
अन्य को निज प्रशंसा सुनाते रहे।

हो रही आपकी मात्र आलोचना,
ढीठ बन मंच पर आप जाते रहे।

एक सम्मान मिलने लगे श्रेष्ठ को,
तब अड़ंगा वहाँ पर लगाते रहे।

आप 'बाबा' कहें क्या मिला आजतक,
व्यर्थ ही आप जीवन गँवाते रहे।

2

उपकार ले लिया तो, उसको न है भुलाना।
अवसर कभी मिले तब, ऋणभार है चुकाना।

दुख दे रहा स्वजन हो, षड़यंत्र भी करे पर,
विपरीत हाल में भी, कर्तव्य है निभाना।

जीना नहीं सरल है, इस पंकमय जगत में,
खिल कर कमल सदृश है, सबको हमें दिखाना।

पीढ़ी नयी भ्रमित है, सद्ज्ञान की कमी से,
उसमें सुधार कर है, भ्रम-जाल से बचाना।

अभ्यास साधना से, कुछ ज्ञान जो मिला है,
मन स्वच्छ रख हमें है, इसको सदा लुटाना।

सौभाग्य से मिली है, अति दिव्य योनि नर की,
गोविन्द को न 'बाबा', क्षण मात्र भूल जाना।

भूपेन्द्र सिंह 'होश'

जन्मतिथि: 6 अक्टूबर 1946

लखनऊ–226016

मोबाइल-735 571 6884

1

लक्ष्य बस मानस पटल पर झिलमिलाते रह गए
कर्महीनों को सुअवसर मुँह चिढ़ाते रह गए

जो प्रगति-पथ पर चले बढ़ते रहे पहुँचे वही
वह नहीं, जो मार्ग के पत्थर हटाते रह गए

लक्ष्य निर्धारित करें तो कर्म से पाएँ उसे
लोग केवल मूर्ति पर लड्डू चढ़ाते रह गए

स्वप्न यदि देखें उन्हें साकार भी करते रहें
लाभ क्या यदि मात्र सपनों को सजाते रह गए

है बिना कर्तव्य के अधिकार का दावा ग़लत
कब उन्हें कुछ भी मिला जो गिड़गिड़ाते रह गए

है अगर सामर्थ्य अत्याचार का प्रतिरोध हो
व्यर्थ है यदि मौन रहकर तिलमिलाते रह गए

ज्ञान बौद्धिक प्राप्ति है उत्थान है उत्कर्ष है
लोग बस अज्ञान-वश रटते-रटाते रह गए।

2

नेह करुणा शान्ति यद्यपि सभ्यता का सार है,
शत्रु यदि शठ हो तो अंतिम लक्ष्य फिर संहार है।

लोग मिल जुल कर ख़ुशी बाँटें परस्पर प्यार हो,
प्रेम-युत चिन्तन हमारे देश का आधार है।

है हमारा दिल बड़ा है सोच भी अपनी बड़ी,
जो अतिथि बन कर है आया सर्वदा स्वीकार है।

है प्रबल इच्छा कि जो दुश्मन हैं वो साथी बनें,
मान्यता अपनी यही है विश्व इक परिवार है।

हर घड़ी रक्षा को तत्पर है किसान इस देश का,
हल है कंधे पर अगर तो हाथ में तलवार है।

देश पर संकट पड़ा जब भी तो ये देखा गया,
बच्चा-बच्चा देश पर मिटने को भी तैयार है।

'होश' ने देखा है इस जग में सनातन के सिवा,
लिप्त भौतिकता व हिंसा में सकल संसार है।

महेश कुमार कुलदीप

जन्मतिथि-09 जनवरी, 1980

बाड़मेर, राजस्थान-344001

मोबाइल-907 993 7636

1

मौन की अभिव्यंजना किसको समझ आई यहाँ
प्रीत की अवधारणा किसको समझ आई यहाँ

निज मनोरथ साधते सब स्वार्थ के वशीभूत हैं
पर-हृदय की वेदना किसको समझ आई यहाँ

अर्थ के जंजाल में उलझा हुआ है प्रति मनुज
शून्य की परिकल्पना किसको समझ आई यहाँ

जो हृदय में है उसी को खोजते बाहर हैं हम
स्व से स्व की साधना किसको समझ आई यहाँ

नेह चुपके से सभी के द्वार पर आता रहा
किंतु उसकी याचना किसको समझ आई यहाँ

भीड़ में भी जो अकेलेपन की पीड़ा से है त्रस्त
उस मनुज की भावना किसको समझ आई यहाँ

मृत्यु की प्रस्तावना का नाम जीवन ही तो है
और यह प्रस्तावना किसको समझ आई यहाँ

2

आने वाले प्रतिक्षण का खुलकर अभिनंदन करता हूँ
भीतर क्रंदन है पर ऊपर सुख का मंचन करता हूँ

कुछ ऐसे भी प्रेम की गरिमा में संवर्धन करता हूँ
प्रेम-नगर के सब नियमों का मन से पालन करता हूँ

इनको आँसू कहकर मेरे दुख का मत अपमान करो
भाव-नदी के जल से मेरी आँखें पावन करता हूँ

सबकी आँखों का काँटा बनने को इतना है पर्याप्त
झूठ का खंडन सच का मैं पुरजोर समर्थन करता हूँ

मुझमें भी कुछ कमियाँ हैं तो तुझमें भी कुछ कमियाँ हैं
अंतर इतना सा है मैं प्रतिदिन संशोधन करता हूँ

हार मान लेता हूँ उसकी जीत सुनिश्चित करने को
सबको लगता है मैं डर कर आत्मसमर्पण करता हूँ

अनदेखी कर लंबित रखता है फिर ठुकरा देता है
जब भी उसके दिल के दफ्तर में आवेदन करता हूँ

महेश जोशी 'अनल'

जन्मतिथि 1 फ़रवरी, 1965
खरगोन (म.प्र.)-451001
मो. 942 405 5551

1

होगा अगल-बगल में पानी।
ढूँढो तो मरुथल में पानी।

जीवन दर्शन बड़ा अनूठा,
पल में पत्थर पल में पानी।

नीचे से ऊपर बहता है,
यादों के जंगल में पानी।

पूछ रही है प्यास धूप से,
कब आएगा नल में पानी।

इतनी आग बढ़ी सूरज में,
सूख गया बादल में पानी।

आँसू होंगे मगरमच्छ के,
आया नहीं ग़ज़ल में पानी।

आसमान में हुए धमाके,
काँपा सागरतल में पानी।

2

रख नहीं पाई नियंत्रण अपनी लहरों पर नदी।
कैसे रखती फिर सुरक्षित रेत का इक घर नदी।

औपचारिकता ही जल की शेष है व्यवहार में,
पत्थरों के साथ रहकर हो गई पत्थर नदी।

याद रखकर लक्ष्य अपना भूल के सारी व्यथा,
अनवरत, अविराम बहती ही रही झर-झर नदी।

तीव्रता ने प्यास की जब भी पुकारा है उसे,
मेरी आँखों में उपस्थित हो गई हंसकर नदी।

यात्रा यूँ है कठिन पर कोई क्षण तो आएगा,
मुस्कुराएगी किसी दिन आँसुओं में तर नदी।

उनके होठों पर अचानक आ गई मुस्कान क्यूँ,
कह गई है कान में क्या बात इतराकर नदी।

है नमी निश्चय ही सूखी रेत के नीचे 'अनल'
इक तेरे भीतर नदी है इक मेरे भीतर नदी।

मीना भट्ट सिद्धार्थ

जन्मतिथि-30 अप्रैल, 1953
जबलपुर म. प्र.-482008
मोबाइल-797 416 0268

1

मेरी पूजा मेरी निष्ठा ईश के समकक्ष है
प्रेम मेरी साधना है, कामना प्रत्यक्ष है

अब परीक्षा कौन देगा कौन इतना दक्ष है
ढूँढ़ता कौन्तेय सा ज्ञानी अभी भी यक्ष है

नृत्य करती हैं सभा में जब कभी निर्लज्जता
चीर देता भीम तब-तब कौरवों का वक्ष है

टोकता था नीति के विपरीत जो हर बात पर
वक़्त की है मार अब चुप वो सभा अध्यक्ष है

पीठ पीछे वार हमने कब किया है दोस्तो
जो भी करते काम वह सब देख लो प्रत्यक्ष है

आजकल कर्तव्य कोई भी निभाता है कहाँ।
बेसुरों सा चीख़ता रहता यहाँ प्रतिपक्ष है

जब कभी भी हाथ में सत्ता मिली धृतराष्ट्र के
द्रोपदी निर्वस्त्र होती मौन रहता कक्ष है

2

बैठा इस उर के भी अंदर कौन है
दे सका इसका भी उत्तर कौन है

रखता सीने में जो पत्थर कौन है
आँसुओं का खारा सागर कौन है

इस जहाँ में बोल ईश्वर कौन है
माँ से बढ़कर या बराबर कौन है

छोड़ देते साथ दुख में अपने ही
संग चलता भी निरंतर कौन है

पल में रब देता हमें उसकी सज़ा
पाप से होता भयंकर कौन है

जो भला सोचे भी औरों के लिए
इस जहाँ में यार अम्बर कौन है

है वही शिव और वही है शक्ति भी
सोचिये उनसे भी सुंदर कौन है

रमा प्रवीर वर्मा

जन्मतिथि: 2 अक्टूबर, 1975
नागपुर, महाराष्ट्र (440024)
मोबाइल–966 541 2860

1

अम्बर की नगरी में काले, काले छाते हैं बादल।
केश घटाओं के बिखरे हैं, या मदमाते हैं बादल।।

कैसे तेवर दिखलाते हैं, उमड़ घुमड़ कर शोर मचा।
शायद खोज ख़बर धरती की, लेने आते हैं बादल।।

सूखे ताल तलैया को औ, सूखी सी अमराई को।
मुरझाए से पौधों को फिर से सरसाते हैं बादल।।

सूरज के सँग आँख मिचौली, चंदा के सँग बरजौरी।
और सितारों पर भी अपनी, धाक जमाते हैं बादल।।

कब आएँगे, कब बरसेंगे, पूछ रही प्यासी धरती।
धूप छाँव का खेल दिखा कर, हमें सताते हैं बादल।।

मेघदूत बन आती बूँदे, ले संदेशा सावन का।
बाँच बाँच पाती बरखा की, खूब सुनाते हैं बादल।।

रिमझिम रिमझिम पड़े फुहारें, ठंडी ठंडी पुरवाई।
डलते जब सावन के झूले, कजरी गाते हैं बादल।।

2

भीनी सी महक आज इधर है बसंत की
आहट हवा की है या लहर है बसंत की

कलियाँ खिली खिली सी सभी फूल बन गईं
बागों पे नज़र चारों पहर है बसंत की

घुलने लगे हैं रंग हवाओं में प्यार के
फागुन का असर है या नज़र है बसंत की

झरते हुए पत्तों नें कहा बात सुन ज़रा
पतझड़ के बाद ही तो भोर है बसंत की

कुछ देर क्यूँ न हम भी बिताएँ बहार में
कितनी सुहानी देखो डगर है बसंत की

जादू है या नशा या हवाओं का खेल है
लेकर हवा भी आई ख़बर है बसंत की

ये रुत पढ़ा रही है हमें पाठ प्यार के
तब ही तो सबको इतनी कदर है बसंत की

रमेश 'कँवल'

जन्मतिथि-25 अगस्त, 1953
पटना-800014
मोबाइल 878 976 1287

1

मुफ़्त मिली पहचान नहीं हूँ
मुंह मांगा वरदान नहीं हूँ

साख़ है मेरी अपने दम पर
ग़ैरों का एहसान नहीं हूँ

चहल-पहल है शाम की मुझसे
रात कोई सुनसान नहीं हूँ

लोग भरोसा कर लेते हैं
सरकारी ऐलान नहीं हूँ

झुंझलाऊँ आईने पर ही
इतना भी नादान नहीं हूँ

ठेस लगे, एहसास नहीं हो
इतना भी बेजान नहीं हूँ

लोग समझ पाये नहीं मुझको
मैं भी 'कँवल' आसान नहीं हूँ

2

प्रश्न हूँ मैं, हल नहीं हूँ
रास्ता समतल नहीं हूँ

जीन्स में जाती हूँ दफ़्तर
रेशमी आँचल नहीं हूँ

बंद बोतल का हूँ पानी
शुद्ध गंगा जल नहीं हूँ

ब्लैक में मिल जाउंगी मैं
शॉप में पागल! नहीं हूँ

भावनाओं में बहो मत
दिल में हूँ, हलचल नहीं हूँ

कौन बुलडोज़र से उलझे
योगियों का बल नहीं हूँ

कौन समझाए 'कँवल' को
मैं ध्वनि करतल नहीं हूँ

रवि खण्डेलवाल

जन्मतिथि 14 सितंबर, 1951
इंदौर-452005
मोबाइल 769 790 0225

1

जीवन दाता मात-पिता हैं औ' उनके संस्कार गुरू
जीवन नैया खेने के हित, जीवन की पतवार गुरू

घोर हताशा और निराशा जीवन में जब घर करती
उम्मीदों का, आशाओं का करता है संचार गुरू

अक्षर ज्ञान बढ़ाना हो या लोकाचारी का कौशल
हर कौशल का ज्ञान प्रदाता शिक्षा का आधार गुरू

सीधे सच्चे प्रश्नों को हल कर लेता हर इक मानव
बिगड़ी बात बनानी हो तो याद आता हर बार गुरू

सत्कर्मों पर करता है यदि बढ़ कर ख़ूब प्रशंसा 'रवि'
दुष्कर्मों पर आग बबूला हो, देता फटकार गुरू

2

रुचि नहीं निकले कभी हल
ध्येय है टूटे मनोबल

वार्ता पर वार्ता हो
और फिर मिलते रहें कल

बात में तो सादगी है
किंतु मन में है भरा छल

है बुरा जो सामने, हाँ
वक़्त ये भी जाएगा टल

क्या हुआ गर हल न निकला
चल नई कोशिश करें कल

आज मन अच्छा नहीं है
हो सके तो आइए कल

ठौर यह काबिल न तेरे
चल कहीं अब और 'रवि' चल

राजकान्ता राज

15 जनवरी

पटना-800023

मोबाइल-930 824 5361

1

सच की राहों पर चलती हूँ
दीपक जैसा मैं जलती हूँ

मैं तो हूँ इक जल की धारा
कल-कल कर अविरल बहती हूँ

ठोकर वाली राहों पर मैं
सोच-समझ कर ही चलती हूँ

झटका लगता जब संकट का
बन पर्वत सहती रहती हूँ

मैं तो हूँ भारत की बेटी
झाँसी से रिश्ता रखती हूँ

2

मैं जिसे याद में बसाती हूँ
बात उसकी अभी सुनाती हूँ

जिनकी आँखें हैं मस्त लब पे हँसी
मैं उन्हीं कृष्ण को रिझाती हूँ

रात, दिन सुब्ह शाम ख़ुश हो कर
कृष्ण के गीत गुनगुनाती हूँ

मैं न राधा न बन सकी मीरा
बन सिया राम संग निभाती हूँ

है लगी आस मिलने की कान्हा
तुम को कुटिया में मैं बुलाती हूँ

राजमूर्ति सौरभ

जन्मतिथि-10 सितंबर, 1958
प्रतापगढ़, उ0प्र0-230402
मोबाइल-700 793 0595

1

पंछियों का देरतक कलरव रहा,
भोर में कितना सरस उत्सव रहा।

तुम रहे जबतक हृदय के कक्ष में,
साथ में सुख का विपुल वैभव रहा।

शीश पर वात्सल्य की छाया रही,
स्नेह से सिंचित सुखद शैशव रहा।

वीर लोहा मानने को थे विवश,
पार्थ के हाथों में वह लाघव रहा।

हम हैं भारतवर्ष में पैदा हुए,
सर्वदा इस बात का गौरव रहा।

आगया कोई लिए संजीवनी,
प्राणदायी प्रेम का आसव रहा।

आपका जाना विकलता दे गया,
आँसुओं की शक्ल में विप्लव रहा।

2

कठघरे में सच खड़ा है, कुछ ख़बर है आपको,
झूठ उसपर हँस रहा है, कुछ ख़बर है आपको।

जुर्म का क़द बढ़ गया है, कुछ ख़बर है आपको,
न्याय औंधे-मुँह पड़ा है, कुछ ख़बर है आपको।

जिस तरफ़ नज़रें उठाओ आदमी ही आदमी,
आदमीयत लापता है, कुछ ख़बर है आपको।

रोशनी की भीख सूरज माँगता है दर-बदर,
जुगनुओं ने ये कहा है, कुछ ख़बर है आपको।

और तो हर चीज़ मँहगी है यहाँ इस दौर में,
ख़ून सस्ता हो गया है, कुछ ख़बर है आपको।

3

कुछ लालच कुछ डर बैठा है,
कुर्सी पर अफ़सर बैठा है।

चारा डाले जाल बिछाये,
दफ़्तर का दफ़्तर बैठा है

मालिक बैठा है धरती पर,
गद्दी पर नौकर बैठा है।

शीश झुकाये था जो कल तक,
आज वही तनकर बैठा है

उस रस्ते से बचकर जाना,
उसपर तो अजगर बैठा है।

बारी जब आयी लड़ने की,
छुट्टी लेकर घर बैठा है।

चेह्रा उड़ा–उड़ा सा क्यों है,
तू ऐसा क्या कर बैठा है।

4

किया है पहले उसने श्रम निरंतर,
कोई पहुँचा है तब जाकर शिखर पर।

हृदय रखना हमारा तुम सँजोकर,
तुम्हारे पास रखता हूँ धरोधर।

वो आदर चाहता है क्यों किसी से,
किया करता है जो सबका अनादर।

उसे प्यासा रखा है बादलों ने,
शिकायत फिर करे किससे सरोवर।

बना रक्खा है सुन्दर ताना-बाना,
अरे मकड़ी है ये या कोई बुनकर।

भला क्यों कोसते हो ठोकरों को,
सिखाती हैं हमें चलना सँभलकर।

कभी भरता नहीं मन क्या मिलन से,
युगों से बाँह फैलाये है सागर।

राजेन्द्र तिवारी

जन्म तिथि-02 मार्च, 1960
कानपुर-208006 उत्तर प्रदेश
मोबाइल-638 668 0768,

1

पर्वत के हिम शिखर से उतरी सज-धज कर अलबेली धूप
फूलों संग गलबहियाँ करती, कलियों के सँग खेली धूप

सतरंगी चादर में लिपटी जैसे एक पहेली धूप
जाने क्यों जलती रहती है छत पर बैठ अकेली धूप

भोर लगे शिशु की किलकारी सबको आनन्दित करती
पग-पग बढ़ती, सबको लगती अल्हड़, शोख़ नवेली धूप

छाया आगे-पीछे नाचे ख़ुद से दूर न होने दे
जैसे मुद्दत बाद मिली हो बिछुड़ी कोई सहेली धूप

मुखिया के लड़के सी दिन भर मनमानी करती घूमे
आँगन-आँगन ताके-झाँके फिर चढ़ जाय हवेली धूप

दिन भर जो ध्वजवाहक बनकर चहुँदिशि ध्वज फहराती है
सूरज सिद्ध तपस्वी लगता सेवा करती चेली धूप

शायद कोई चाँद-सितारे रख दे उसके हाथों पर
कब से दर-दर घूम रही है खोले यार! हथेली धूप

2

इतना अभिनय ठीक नहीं है
हर पल संशय ठीक नहीं है

ईश्वर से डरना है, लेकिन
दुनिया से भय ठीक नहीं है

माँगो लेकिन सोच-समझकर
सबसे अनुनय ठीक नहीं है

धन और प्रेम लुटाने को हैं
इनका संचय ठीक नहीं है

लगता है उसकी बातों से
उसका आशय ठीक नहीं है

सरगम कैसे साध सकोगे
यदि जीवन-लय ठीक नहीं है

ख़ुद को सर्वोपरि समझे हो
तो यह निर्णय ठीक नहीं है

राजेन्द्र राज

जन्मतिथि 20जनवरी, 1959
सूर्यगढ़ा, लखीसराय-811106
मोबाइल 985 238 1812

1

नाम हिन्दी का बढ़ाना है उचित
शीश चरणों में झुकाना है उचित

पुष्प मुरझाए नहीं विश्वास के
झंझावातों से बचाना है उचित

वेद उपनिषद पढ़ें निर्विघ्न हम
राग भक्ति के सुनाना है उचित

सूर तुलसी और मीरा के भजन
प्रेम धूनी को रमाना है उचित

विश्व में इसकी ही जय-जय कार हो
राम ध्वज कर में उठाना है उचित

आती है गंगा हिमालय से यहाँ
स्वच्छ धारा में नहाना है उचित

ये सुगंधित और शीतल तन करे
लेप चंदन का लगाना है उचित

देव ऋषि मुनियों की भाषा में हमें
एकता-संदेश गाना है उचित

2

जानें कितनी दफ़ा चोट सहते रहे
जीने के नाम पर रोज़ मरते रहे

दुःख के मौसम बहारों को छलते रहे
वक्त मस्ती के छत पर टहलते रहे

कोई दरवेश अपने ख़यालों में था
हम अदीबों की संगत में पलते रहे

रोने का वक्त हमको मिला ही नहीं
अपनी फ़ितरत के वश में थे हँसते रहे

सुर्ख़ मेंहदी हथेली पे रचती रही
मस्त आँखों में काजल भी सजते रहे

सब्र का जाम थामे रहे हाथ में
महफ़िलों में पियाले छलकते रहे

इस सदी में मुहब्बत का दस्तूर हो
अपनी आँखों में ये ख़्वाब पलते रहे

राहुल शर्मा

जन्मतिथि-07 नवंबर, 1973
मुरादाबाद-244001
मोबाइल–975 855 6426

1

टूटे सपनों को बुझी आस को रँगना है मुझे
और फीके पड़े उल्लास को रँगना है मुझे

मैं हूँ वासंती हवा रंग हैं सारे मुझमे
सरसों टेसू को अमलतास को रँगना है मुझे

कौन सा रंग है बेहतर मेरे रँगरेज़ बता
एक बेरंग से विश्वास को रँगना है मुझे

सात रंगों से अलग रंग की मुझको है तलाश
अबकी होली में किसी खास को रँगना है मुझे

नाम है भक्ति मेरा खुद मे अलग रंग हूँ मै
सूर को मीरा को रैदास को रँगना है मुझे

मैं चितेरा हूँ मेरा काम बहुत बाकी है
भूख गढ़नी है अभी प्यास को रँगना है मुझे

चाहता हूँ कि इन्हें दूर से पहचान सकूँ
पीर को दर्द को संत्रास को रँगना है मुझे

2

हमसे आकर पूछो क्या हैं पीड़ा की परिभाषाएँ
भावुकता मन की चंचलता आशाएँ और इच्छाएँ

स्वार्थ द्वेष पाखंड निराशा भय आडंबर कुंठाएँ
कितनी सिमट गई हैं अपने जीवन की मर्यादाएँ

आप सतर्क करेंगे इनसे आने वाली पीढ़ी को
पुनरावृत्ति अवश्य करेंगी बीत चुकी दुर्घटनाएँ

देख लिया है नग्न हमें अब दुनिया भर के लोगों ने
तब किस-किस से दृष्टि घुमाएँ और किस-किस से शर्माएँ

इन लोगों में से ही कुछ है जो चोरी करवाते हैं
किनको पहरे पर बैठा दें किन से कह दे सो जाएँ

मेरे पास नहीं है तुमको देने को हीरे मोती
मेरी बस ये ही पूंजी है गीत कहानी कविताएँ

रीना धीमान 'स्वर्ण'

जन्मतिथि-1अगस्त, 1977
सी वुड्स, नवी मुंबई 400 706 (महाराष्ट्र)
मोबाइल: 966 335 5575

1

क्यों किसी बात पे मैं अपनी सफ़ाई दूँगा,
हक़ में सच के ही खड़ा तुमको दिखाई दूँगा।

अपने हिस्से की भी रोटी वो है देती मुझको,
माँ के हाथों में ही अपनी मैं कमाई दूँगा।

तेरी ख़ुशबू से महकता ही रहेगा आलम,
इश्क़ तू चाहे सज़ा दे, मैं दुहाई दूँगा।

ऐ फ़लक! तेरी उदासी से हुआ हूँ वाक़िफ़,
क़ैद से आज परिंदों को रिहाई दूँगा।

राह मेरी है अँधेरों से घिरी तो क्या है,
चाँद हूँ मैं तो फ़लक पे ही दिखाई दूँगा।

तू बुलाए न बुलाए मुझे-मर्ज़ी तेरी,
तेरे सीने में धड़कता मैं सुनाई दूँगा।

हसरतों से तुझे पाला है बड़ी चाहत से,
बोल, बेटी! तुझे कैसे मैं विदाई दूँगा।

2

उर के धागे बांधे गिरधारी तुमसे,
जग बिसरा जुड़ बैठी मतवारी तुमसे।

तुम आते चढ़ते-ढलते सूरज चंदा,
करते सरगोशी मिल बनवारी तुमसे।

रातों पर, नीदों पर भी पहरा तेरा,
सपनों में भी की हिस्सेदारी तुमसे।

सौंधी सी ख़ुशबू महकाती मन उपवन,
खिलती है पुष्पों की फुलवारी तुमसे।

साँसे आईना मन के उदगारों का,
आँसू ठहरे हैं बन अधिकारी तुमसे।

आशाओं को बांधे मीलों की दूरी,
कहदें कैसे दिल की लाचारी तुमसे।

व्याकुल मन ये मेरा है कुछ हारा सा,
जग जीता है मैंने पर हारी तुमसे।।

रेखा भारती मिश्रा

जन्मतिथि–25 फ़रवरी, 1984
कदमकुआँ, पटना–800003
मोबाइल–930 816 2129

1

तुमसे मेरी ज़िंदगी का वास्ता रह जाएगा
दिल को दिल से जोड़ता हर एक सिरा रह जाएगा

तोड़ लोगे सारे बंधन आज मुझसे तुम मगर
याद के संग में गुज़रता रास्ता रह जाएगा

भूल जाओगे हमारी बात यह आसान है
पर तुम्हारे दिल में कुछ-कुछ अनकहा रह जाएगा

पास बैठो, खोल दो, गांठें जो दिल में है पड़ी
गर नहीं खोलोगे तो दिल में गिला रह जाएगा

इस ज़हाँ में मिल न पाएँगे चलो यह मान ले
पर सितारों के ज़हाँ में वास्ता रह जाएगा

मिट भी जाएगा अगर नामो-निशाँ संसार का
दास्तां अपनी रहेगी, वो ख़ुदा रह जाएगा

इश्क़ में हम तुम अमर है, जान जाएँगे सभी
बाद अपने, आशिक़ों का क़ाफ़िला रह जाएगा।

2

अनगिनत चाह बो गईं आँखें
ख़्वाब कितने पिरो गईं आँखें

ज़िंदगी के कुछ एक रंगों में
आज हमको डुबो गईं आँखें

जब सजा आसमां सितारों से
चाँद के पार खो गईं आँखें

भूली गलियाँ सभी वो बचपन की
याद आयीं तो रो गईं आँखें

बालपन के सभी खिलौने वो
देख बेहाल हो गईं आँखें

खिल गयी जब सुगंध यादों की
ओढ़ खामोशी खो गईं आँखें

बीते लम्हों को जी न पायी तो
चाहतों संग सो गईं आँखें

वंदना बाजपेयी

जन्म तिथि–20मई, 1970
निर्माण विहार, दिल्ली-110092
मोबाइल–981 835 0904

1

हौसला रख ले ज़रा इक बार तू
ज़िंदगी की जंग यूँ ना हार तू

भेजता है इस जहाँ में वो हमें
योजना उसकी न कर बेकार तू

आज जो है कल ना होगा जान ले
क्यों अभी से ले रहा है भार तू

क्यों लड़ाई ठानता है सोच तो
मान जा अब सीख भी ले प्यार तू

हर निराशा के सदा पीछे खड़ी
देख ले आशा किरण एक बार तू

भाग्य की चट्टान माना है कठिन
कर्म की शमशीर से कर वार तू

चुन लिया जब राह को तो लौट मत
'वंदना' कर राह को तैयार तू

2

प्रेम कहते हो जिसे वो प्रेम होता है नहीं
जाग्रति है प्रेम बंधु स्वप्न होता है नहीं

वासना को दे रहा जो प्रेम का तू नाम है
देह तक अटका रहे वो मन भिगोता है नहीं

एक दो फिर तीन, प्रेमी की बढ़े गिनती सदा
प्रेम का अंकुर कभी मन बीच बोता है नहीं

मानते हम है निभाना आजकल मुश्किल ज़रा
पर बता क्या टूटकर तू चैन खोता है नहीं

ढूँढता है जब किसी को ख़ुद अधूरा मान कर
दो अधूरों के मिलन से पूर्ण होता है नहीं

राम-सीता कृष्ण राधा की सुनी है क्या कथा
दूर हों या पास पर विश्वास खोता है नहीं

चेतना अपनी जगाकर ढूँढ भीतर है छिपा
'वंदना' मन में लगाती हाय गोता है नहीं

वसंत जमशेदपुरी

8 दिसम्बर, 1957
जमशेदपुर, झारखंड-831012
मोबाइल-933 480 5484

1

सुबह-सुबह कोयल का गाना, अच्छा लगता है।
प्रियजन से मिलना-बतियाना, अच्छा लगता है।।

रजनीगंधा, जुही, चमेली, शेफाली महके।
उपवन में भँवरों का आना, अच्छा लगता है।।

उसकी गलियों में गुल चुनना, कौन नहीं चाहे।
दामन में ख़ुशबू भर लाना, अच्छा लगता है।।

कलियों-सा मुस्काना उसका, शहदीली बातें।
बात-बात पर खिल-खिल जाना अच्छा लगता है।।

आँखों में मधु की मादकता, रूप सुराही-सा।
यौवन की मदिरा छलकाना, अच्छा लगता है।।

करे इशारे रह-रह मुझको, चूड़ी की खन-खन।
नजर मिला कर नजर चुराना, अच्छा लगता है।।

मन में लड्डू फूटें फिर भी, होठों पर ताले।
पलकें नीची कर शरमाना, अच्छा लगता है।।

2

हर अँधेरी वीथिका को जगमगाना चाहता हूँ।
गीत कोई प्रीति का मैं गुनगुनाना चाहता हूँ।।

प्रीति हो तो राधिका-सी कुछ न चाहा श्याम से।
प्रीति की यह रीति ही सबको सिखाना चाहता हूँ।।

दूर तुम मुझसे रहो स्वीकार यह मुझको नहीं।
जिस तरह भी हो जुगत मैं पास आना चाहता हूँ।।

पुष्प की नगरी सुसज्जित बीच में हो घर हमारा।
है यही सपना जिसे तुमको बताना चाहता हूँ।।

हो अगर सूरत मनोहर देवबाला-सी सुगढ़ हो।
झील-से उसके नयन में डूब जाना चाहता हूँ।।

चंद्रिका की यामिनी में मेघ छलकाए अमिय-रस।
थाम कर बाँहे तुम्हारी मैं नहाना चाहता हूँ।।

हो नहीं कुछ लोभ, हिंसा या तनिक विद्वेष ही हो।
एक ऐसा ही जगत् सुनलो बसाना चाहता हूँ।।

विज्ञानव्रत

1

उसको कुछ कहना था और
लेकिन वो कह बैठा और

वो जो मुझमें रहता और
होता मेरा लहजा और

मैंने उसको समझा और
लेकिन वो कुछ निकला और

हम दोनों मजबूर हुए
उसको ठौर न मुझको और

आख़िर सब पहचानेंगे
रक्खूँ अपना चेहरा और

2

अब वो मेरा गहना है
साथ हमेशा रहना है

दरिया होकर जान लिया
सहराओं में बहना है

देखो उसकी आँखों में
उसको भी कुछ कहना है

मेरे जैसा दिखने को
उसने मुझको पहना है

मुझको जो पहचान मिली
क्या उसमें ही रहना है

3

बोये तो थे सन्नाटे
पर जाने क्यों शोर उगे

मुझसे जितनी बार छिपे
वो मुझको हर बार दिखे

यों वो मेरे पास रहे
लेकिन सबको दूर लगे

उनको ढूँढ़ सकोगे क्या
जिनके सिर्फ़ निशान बचे

भाव बहुत खाते थे जो
वो सारे बे भाव बिके

4

जब तू मिला
मैं खो गया

तेरे बिना
कुछ भी न था

सब-कुछ मिला
बस तू न था

मेरे लिये
तू ही बचा

अब तो मुझे
अपना बना

शबला अरोरा (शालू)

जन्मतिथि 29 अप्रैल, 1976

दिल्ली-110060

मोबाइल 931 114 2869

1

जीवन ये मेरा कृष्ण नें आसान कर दिया
वीरान ज़िंदगी को गुलिस्तान कर दिया

दिल जो भरे हुए थे कभी नफ़रतों से अब
उनको तो राधे श्याम ने जजमान कर दिया

हमने झुकाया सर तेरे चरणों में इक ही दिन
दर्शन करा के हमको तो जी-दान कर दिया

सारी हदें तो प्रेम में मीरा ने पार कीं
जीवन ही सारा तुझपे तो बलिदान कर दिया

रो रो के कान्हा कान्हा ही मैं अब पुकारती
सुन हो गई हूँ तेरी ये एलान कर दिया

तूने बचा के लाज़ निभाया वचन था जब
छोटी सी साड़ी को ही बड़ा थान कर दिया

यूँ ठाठ बाठ देख के हैरान सब हुए
तूने मेरे शरापों को वरदान कर दिया

2

दिल लगा मैं बैठी हूँ अपने भोले शंकर से
डर नहीं लगा उनके रूप उस भयंकर से

नौका बाँध ली मन की अपने शिव के लंगर से
पार हो ही जाएँगे भव के इस समुन्दर से

देखलो मेरा सीना चीर कर जो चाहो तो
थोड़ा तो भरोसा कर चाहती हूँ अंदर से

देख लेंगे जो होगा प्रीत तुझसे कर ली है
दूर दूर क्यूँ बैठा दूरियाँ ये किस डर से

सिर्फ भांग पीने से कोई शिव नहीं बनता
ज़हर पीना पड़ता है छान कर समुंदर से

नीलकंठ कहलाए विष पिया समुन्दर से
सीख लो जगत-हित का भाव मेरे शंकर से

भस्म तन लगाए जब साधना करे दिगंबर
ज्योति फूट पड़ती है मेरे उस धुरंधर से

सर सजाया चन्द्रमा मेरे प्यारे शंकर ने
मिल रही थी शीतलता देख ऐसे चंदर से

नाम जप से क्या होगा भाव भी ज़रूरी है
भक्ति खिल न पाएगी सिर्फ़ बाहरी स्वर से

संजीव प्रभाकर

जन्मतिथि 3 फ़रवरी, 1980
गाँधीनगर 382021 (गुजरात)
मोबाइल–908 213 6889

1

इस बात को लेकर दुखी है इन दिनों अंतःकरण,
उसकी बहुत अवहेलना करने लगा है आचरण।

गंभीरता संलग्नता प्रतिबद्धता जिनमें नहीं
वे आजकल आदर्श हैं, वे आजकल हैं उद्धरण।

सहमी हुई दुबकी हुई रहने लगी है शिष्टता,
कुछ इस तरह का इन दिनों है बन गया वातावरण।

कैसे नहीं जाएँ ठगे इस बात से अनभिज्ञ हैं,
निर्लज्जता ओढ़े हुए है आवरण पर आवरण।

उन बिन्दुओं का आजकल औचित्य भी संदिग्ध है,
जिन बिन्दुओं पर उन दिनों अनसन हुआ था आमरण।

2

आकलन भी नहीं कर सके हम, कर सके क्या नहीं कर सके हम,
जोड़ते हम किसे क्या घटाते चार ही दिन मिले थे अधिकतम।

कुछ नये क़र्ज़ कुछ थे पुराने जिनको आना पड़ा था चुकाने,
बन पड़ा हमसे जितना जहाँ तक फ़र्ज़ पूरा किया हर यथाक्रम।

वो जो था तो हसीं ज़िन्दगी थी उसके होने से मिलती ख़ुशी थी,
साथ लेकर गया वो इन्हें भी सालती है यही बात हरदम।

कोई लौटा नहीं जो बताता किसलिए सृष्टि है और क्या है
झूठ सच से परे एक मिथ्या एक विभ्रम कि है एक सम्भ्रम?

पाँच तत्त्वों से मिलकर बना है पाँच तत्त्वों में फिर जा मिलेगा,
देह चैतन्य है चेतना से देह है चेतना का उपक्रम।

सत्यभामा सिंह 'ज़िया'

जन्मतिथि 1-7-1960
थाने मुंबई महाराष्ट्र-421301
मोबाइल-800 713 0204

1

मुश्किलों से गुज़र गया कब का
सरहदें पार कर गया कब का

दोस्त मनमीत था मेरा लेकिन
प्यार उसका ठहर गया कब का

पीठ पीछे बुरा किया जिसने
मेरे दिल से उतर गया कब का

मौन रहकर गुज़ारा जीवन तो
ख़ौफ़ का वह नगर गया कब का

ज़िंदगी धुंध से भरी सब की
रोशनी का नगर गया कब का

रिश्ते बे मौत मर रहे हैं अब
साँप का ज़हर भी गया कब का

धूप में जल रहा ज़िया जीवन
छाँव वाला शजर गया कब का

2

पत्थर पे लिखा हर्फ़ मिटाया नहीं जाता
ख़ुद्दार परिंदे को लुभाया नहीं जाता

है धर्म हमारा कि बड़ों का करें आदर
मकतब में सबक़ पर ये सिखाया नहीं जाता

जलते ही दिया दूर करे तीरगी जग की
इंसान में वो ख़्याल बताया नहीं जाता

संसार में माँ बाप को भगवान समझिए
संतान को ये पाठ पढ़ाया नहीं जाता

चर्चा न मुहब्बत की सरे-आम भले हो
ये इश्क़ ज़माने से छुपाया नहीं जाता

ख़ुदगर्ज 'ज़िया' घूमते धनवान के पीछे
ख़ुद्दारों को पैसों से झुकाया नहीं जाता

सत्यम भारती

जन्मतिथि 11 दिसम्बर, 1996
बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश, 203001
मोबाइल-867 705 6002

1

चुप हैं सब यह हाल देखकर
मंहगी होती दाल देखकर

उत्तर की चाहत थी उसको
लौटा सिर्फ़ सवाल देखकर

मछली कितनी तड़पी होगी
सूख रहा यह ताल देखकर

देश बहुत विचलित होता है
हर दिन नया बवाल देखकर

टूट रही है अपनी हिम्मत
महंगाई की चाल देखकर

2

ज़िन्दगी भर हाथ वे मलते रहे
ले नहीं पाए जो सच्चे फैसले

वे गये तो लोग यों कहने लगे
हम सभी के यार थे कितने भले

जब सिंकदर भी न कुछ ले जा सका
धन जमा करते हैं हम फिर किसलिए

आजतक जनता रही गुमराह ही
फिर बताओ किस तरह मंज़िल मिले

कौन बदलेगा जहाँ को दोस्तों
हम बदलना ही नहीं जब चाहते

सत्यम् दुबे 'शार्दूल'

जन्मतिथि 15 अगस्त, 1995
प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश-230302
मोबाइल-879 594 0431

1

तुम्हारे मौन का जो व्याकरण है,
हमारी साधना का उद्धरण है।

शिथिल हैं प्राण, ऊर्जा स्रोत मद्धिम,
अभी तो ध्यान का पहला चरण है।

मनाकर थक गये हैं मंत्र अगणित,
हृदय फिर भी तुम्हारी ही शरण है।

नहीं दिखते कभी तुम स्वप्न में भी,
दृगों पर क्यों ग्रहण का आवरण है।

घिरे हैं मेघ बारिश है निरंतर,
दुखों से हो रहा अब संतरण है।

2

क्या ज़रूरी है किसी के पक्ष की बातें करें,
सच को जो सच कह दे उस अध्यक्ष की बातें करें।

काम जिसके देखते ही इक निमिष में जल गया,
आइए मिल बैठ हम उस अक्ष की बातें करें।

पाण्डु-पुत्रों की पिपासा शांत होगी जल मिला,
पर लगा प्रश्नों का अंकुश यक्ष की बातें करें।

जिसके कारण यज्ञ में अपमान शिव का था हुआ
क्यों भला हम अजमुखी उस दक्ष की बातें करें?

द्रौपदी-धृतराष्ट्र सुत संवाद जो कारण बना,
युद्ध के कुरुक्षेत्र लघु उस कक्ष की बातें करें।

सौ सवा सौ या सहस्रों की यहाँ बुनियाद क्या,
लक्ष से जो लड़ गया उस वक्ष की बातें करें।

सविता राज

18 जून 1981
अतरदह, मुजफ्फरपुर-842002
मोबाइल-748 821 8363

1

आकाश हमारा हो जाता।
हर एक सितारा हो जाता।।

दुख में तो सिर्फ अकेले हैं।
कोई तो सहारा हो जाता।।

हर सपना जो पूरा कर दें।
वो वक्त हमारा हो जाता।।

फिर टूट नहीं सकता है वो।
जब प्यार दुबारा हो जाता।।

यह जान तुम्हारी हो जाती।
ये दिल भी तुम्हारा हो जाता।।

2

कहानी सभी की वही की वही है।
जहाँ ज़िंदगी है वहीं बेबसी है।।

हमें तो सभी ने हमेशा सताया।
हमारे लिए बस यही बेकसी है।।

कहें भी किसी से दिली हाल कैसे।
अभी आँसुओं में ज़रा सी नमी है।।

किसी को भला चैन कैसे मिलेगा।
यहाँ हर किसी में तो कुछ कुछ कमी है।।

उजड़ने लगी बस्तियाँ अब दिलों की।
बहारों में भी आजकल खलबली है।।

सुभाष पाठक 'ज़िया'

15 सितंबर, 1990
शिवपुरी मध्यप्रदेश 473660
मोबाइल 887 835 5676

1

भागता दौड़ता रहता जीवन यहाँ
है समय किसको जो देखता मन यहाँ

ये मुसीबत है कैसी मुसीबत कहो
जनवरी भीगती, सूखा सावन यहाँ

सोंधी सी क्यों आयेंगी अब ख़ुशबुएँ
देखिए हो गए पक्के आँगन यहाँ

हो गईं आज मैली वो नदियाँ सभी
फ़ाइलों में जिन्हें कहते पावन यहाँ

आ रहे हैं मेरे राम वनवास से
और घर में नहीं है बिछावन यहाँ

2

हमने मस्तिष्क खोया है मन खो दिया
कश्तियाँ तो चढ़े संतुलन खो दिया

धूप के डर से जो तान लीं चादरें
अपने सर से हम ने गगन खो दिया

बढ़ गया है चलन झूठ का आजकल
और सच का सभी ने चलन खो दिया

भूख की प्यास की दर्द की मार से
खेल की उम्र में बालपन खो दिया

जब किनारों से लहरें मिलीं प्यार से
तो किनारों ने अपना बदन खो दिया

बढ़ रही हैं दरें रोज़ महंगाई की
सब्र का प्यार का सब ने धन खो दिया

सुभाष मित्तल सत्यम्

जन्मतिथि-4 सितंबर, 1948
अहमदाबाद-380008 गुजरात
मोबाइल-979 940 3003

1

भूमि पर का गगन है पिता।
सुत सुता का सपन है पिता।

बाल-द्रुम पालता पोस्ता,
सींचता जो चमन है पिता।

जो जगा दे अलस नींद से,
इक वही जागरण है पिता।

धूप सा यदि तपे तो कभी,
मेघ-जल संघनन है पिता।

विषमयी सोच की शुद्धि को,
कर्म शुभ का हवन है पिता।

लाड़ली की विदा के समय,
धैर्य-हिम का गलन है पिता।

भाव को शब्द देता हुआ,
इक सही व्याकरण है पिता।

गीतिका माँ है यदि प्यार की,
भक्ति का इक भजन है पिता।

2

तृप्ति जल सब पी रही है।
प्यास प्यासी जी रही है।

इस गणित बिगड़े हुए में,
भूल अपनी भी रही है।

प्यास के बल तैरती सी,
जल भरी नगरी रही है।

जल कहीं टब में बदलता,
रिक्त कहीं मटकी रही है।

है पराया दूर पानी,
पास तृष्णा ही रही है।

मोह जल में भीग कर भी,
फैमिली प्यासी रही है।

क्या गगन को है पता भू
घाव कैसे सी रही है।

छूटती तृष्णा न सत्यम्,
जो बहुत महंगी रही है।

सुरेंद्र कुमार सैनी

जन्मतिथि:2 नवंबर, 1950

रुड़की (उत्तराखंड)-247667

मोबाइल-790 619 1781

1

दिल को मत भरमाया कर
सच से आँख मिलाया कर

बिन बैसाखी के भी तू
अपने पाँव बढ़ाया कर

फूलों से तो खेला, अब
काँटों से टकराया कर

सबको चहकाया तूने
ख़ुद को भी महकाया कर

सागर से डरता है तो
नाविक पास न जाया कर

थोड़ा अवसर मिलने पर
ख़ुद से भी बतियाया कर

दुनिया में आया है तो
ग़म से मत घबराया कर

2

कोई अब मुझको क्या जलाएगा
राख में आग क्या लगाएगा

फूल सूखा जो आज डाली पर
उसको मधुमास क्या खिलाएगा

दीप को अब भला बिना बाती
किस तरह से कोई जलाएगा

आज दुनिया में जो भी आया है
कल वो वापस ज़रूर जाएगा

जिसने तोड़ा है प्यार का नाता
वो वफ़ा क्या मुझे सिखाएगा

हर ख़ुशी तेरे साथ थी मेरी
बाद अब तेरे, ग़म सताएगा

देखना ही पड़े यहाँ सब वो
वक़्त जो भी हमें दिखाएगा

3

खदानों में नहीं मिलता, ख़ज़ानों में नहीं मिलता
वो सच्चे प्यार का मोती, दुकानों में नहीं मिलता

जिसे रविदास ने पाया, कबीरा ने जिसे गाया
वो मंदिर, मठ व गुरुद्वारों, अज़ानों में नहीं मिलता

चढ़ाई में थकन तो है, मगर उल्लास पग-पग पर
शिखर छूने का वो जज़्बा, ढलानों में नहीं मिलता

सियासत झूठ, नफ़रत, दुश्मनी के जाल बुनती है
मगर इसका कोई चर्चा, बयानों में नहीं मिलता

गुज़ारिश साहिबे-मसनद, नहीं सुनता, न कर शिकवा
दया, करुणा भरा आलम, मचानों में नहीं मिलता

बहाया ख़ून कितने बेगुनाहों का, मुकुट ख़ातिर
कभी क़िस्सा ये भाटों के तरानों में नहीं मिलता

अभी का खोखलापन, मतलबीपन और बोझिलपन
पुराने वक़्त के बूढ़े, फसानों में नहीं मिलता

4

बड़ी ज़िल्लत उठाने जा रहा हूँ
हया उनको सिखाने जा रहा हूँ

सदन में बैठ जो करते दलाली
उन्हें दर्पण दिखाने जा रहा हूँ

जिन्हें मिलने से दिल क़तरा रहा है
गले उनको लगाने जा रहा हूँ

हमारे गाँव की माटी है चंदन
तिलक उसका लगाने जा रहा हूँ

न फिर ये बोल पाये सच कभी भी
ज़ुबां अपनी कटाने जा रहा हूँ

यक़ीनन ही मुझे नफ़रत मिलेगी
वतन पे जां लुटाने जा रहा हूँ

कँटीली राह चलकर आज ख़ुद को
सचाई से मिलाने जा रहा हूँ

सोनिया वर्मा

जन्मतिथि-20 अक्टूबर
रायपुर (छत्तीसगढ़)-492099
मोबाइल 835 780 3400

1

अपना सपना तोड़ रहे हैं अपने हाथों से
पापा ऐसा करते आए कितने सालों से

अपने सारे दर्द भुला कर हँसते मुस्काते
सबको ख़ुश कर देते हैं वो अपनी बातों से

राहें हरदम रौशन करतीं अनुभव की सीखें
जब-जब दुनिया देखेंगे हम इनकी नज़रों से

दो पल का सुख दे पाए क्या उनको जीवन में?
हमें जिन्होंने रोज़ बचाया झंझावातों से

जीवन जीना उनकी ख़ातिर दूभर होता है
जिनके बच्चे प्यार दिखाएँ बस तस्वीरों से

सारे बच्चे नालायक़ हों कैसे संभव है
पलकों पर रखते लेकिन कुछ, जाना ख़बरों से

तेरा-मेरा, इसका-उसका क्या-क्या सीख लिया
जब-जब, जो-जो गुज़रा है इन झिलमिल नगरों से

2

पल-पल बीते सारे दिन
खट्टे मीठे हारे दिन

यादों में ही ज़िंदा हैं
जाने कितने प्यारे दिन

मन की जब आवाज़ सुनी
ख़ुद के साथ गुज़ारे दिन

तेरे भरोसे काटे हैं
हमने सारे खारे दिन

सुख की चाहत में बीते
दुखिया के अँधियारे दिन

हिम्मत अपनी क़ायम रख
बन जाएँगे सहारे दिन

पेड़ बचा लो वरना सब
काटेंगे अंगारे दिन

आँखों-आँखों में कटते
सब के सब दुखियारे दिन

सपने हमको प्यारे हैं
तू जाकर सुस्ता रे दिन

हिमकर श्याम

जन्मदिन: 16जनवरी, 1973
मोराबादी, राँची: 834008,
मोबाइल-860 317 1710

1

कैसा ये निष्ठुर समय है पूछ मत
टूटती साँसों की लय है पूछ मत

उफ़ किये बिन सह रहे हैं यातना
पीर से आहत हृदय है पूछ मत

मौन साधे सब खड़े इस भीड़ में
झाँकता आँखों से भय है पूछ मत

ताक़ पर सब कायदा-कानून है
हर तरफ़ फैला अनय है पूछ मत

मूल मुद्दों पर बहस होती नहीं
धर्म अब चर्चित विषय है पूछ मत

स्वार्थ लिप्सा छल कपट हावी हुआ
सभ्य जन की हार तय है पूछ मत

मन के पन्नों पर वही रावण मिला
आवरण बस राममय है पूछ मत

2

जड़ों से दूर हैं लेकिन वहीं फिर लौट जाना है
उसी मिट्टी से नाता है, जहाँ घर है, घराना है

हमेशा छाँव देता है थकन से चूर राही को
हमारे गाँव के रस्ते में जो पीपल पुराना है

सुलझ जाती है हर गुत्थी, हरिक ताले की है चाबी
बढ़े-बूढ़ों की गठरी में जो अनुभव का ख़ज़ाना है

न आँगन हैं, न अमराई, न रिश्तों में है गरमाहट
न चिड़ियों की चहक आती, न रखता कोई दाना है

दिखावा है, छलावा है, प्रदूषित है हवा पानी
मिलेगी शुद्धता कैसे मिलावट का ज़माना है

कभी ढारस बँधाना है, कभी है पोंछना आँसू
दिखे जो भी मुसीबत में उसी के काम आना है

यही है रीत दुनिया की करे क्यों व्यर्थ पछतावा
यही जीना है, मरना है, यही खोना है, पाना है

3

पीर की लंबी कहानी हो गई
टीस दिल की थी बतानी हो गई

धार शब्दों की हुई है कुंद-सी
और कुछ कमज़ोर बानी हो गई

मैं तो तप कर भी न कुंदन बन सका
उम्र भर की इक निशानी हो गई

चल रहा हूँ चिलचिलाती धूप में
छाँव तो बस आनी-जानी हो गई

पहली बारिश क्या हुई बरसात की
पानी-पानी राजधानी हो गई

लोग अपने थे, अपरिचित हो गये
किस क़दर दुनिया सयानी हो गई

सुन रहा था बात इतनी ध्यान से
याद सब कुछ मुँह-ज़बानी हो गई

4

क्या यहाँ कुछ बदलने वाला है
या इसी ढब से चलने वाला है

अब तो पक्षी भी नीड़ को लौटे
और सूरज भी ढलने वाला है

फैलते बढ़ते शहर का नक़्शा
गाँव कितने निगलने वाला है

आ गया है चुनाव का मौसम
रंग गिरगिट बदलने वाला है

ज़िक्र क्या इस अंधेरगर्दी का
ख़ून किसका उबलनेवाला है

जाल पसरा है मोह माया का
कौन बच के निकलने वाला है

सुन रहा हूँ वसंत की आहट
रुख़ हवा का बदलनेवाला है

हीरालाल यादव हीरा

जन्मतिथि 25 जुलाई, 1973
मालाड पूर्व, मुंबई 400097
मोबाइल-982 140 0100

1

दिल जुड़ा किससे है और किससे जुदा, याद नहीं
कौन दुश्मन है यहाँ, कौन सगा, याद नहीं

रूबरू आना तेरा, होश का उड़ना मेरे
कुछ भी महबूब मुझे इसके सिवा याद नहीं

याद इतना है कि अपनों की ये सौगातें हैं
किसने कितना है किया दर्द अता, याद नहीं

क्या गँवाया है ज़माने में ये है याद मगर
जग में हासिल हमें क्या-क्या है हुआ याद नहीं

क्या पढ़ाएँगे वफ़ाओं का सबक़ औरों को
आपको ख़ुद ही अगर रस्म ए वफ़ा याद नहीं

हमसफ़र बनने को ईमान बना था लेकिन
दूर कितनी वो मेरे साथ चला याद नहीं

बेशुमार आए थे हमदर्दी जताने वाले
ज़ख़्म सीने का किया किसने हरा याद नहीं

है गिनाने में लगी मेरी ख़तायें 'हीरा'
पाप दुनिया को मगर ख़ुद का किया याद नहीं

2

छोड़ हर बात पे औक़ात से बाहर होना
इतना आसाँ नहीं क़तरे का समंदर होना

संग-दिल तुम को है बनना तो बनो तुम लेकिन
मुझको मंजूर नहीं मोम से पत्थर होना

देख कर औरों की ख़ुशियों को हसद रखना क्यों
सबका इक जैसा तो मुश्किल है मुक़द्दर होना

ये अलग बात है हो पाते हैं कुछ ही लेकिन
चाहते सब ही हैं संसार में बेहतर होना

हर घड़ी लाड़ से अपने न बिगाड़ें इनको
मन में बच्चों के ज़रूरी है ज़रा डर होना

पहले कर देना मेरी जग से विदाई तब ही
मेरे महबूब किसी और का दिलबर होना

जीत आई ही नहीं रास मुझे जीवन में
चाहता मैं भी था दुनिया में सिकंदर होना

ग़ज़लकार मित्रों के शहर और मोबाइल नंबर

क्रमांक	नाम	शहर	मोबाइल नंबर
1	अंजू केशव	जमशेदपुर	821 004 6398
2	अनिल कुमार सिंह	पटना	943 115 0967
3	अनिल गौड़	थाणे, मुम्बई	983 975 3962
4	अनीता मिश्रा सिद्धि	पटना	911 318 5410
5	अनुराग मिश्र ग़ैर	लखनऊ	884 009 4221
6	अमित 'अहद'	सहारनपुर	967 515 0538
7	अरविन्द 'असर'	दिल्ली	987 132 9522
8	अरुण कुमार आर्य	पटना	943 162 0560
9	अर्चना जौहरी	मुंबई	986 719 3332
10	अविनाश अमन	पटना	787 067 8786
11	अशोक 'अंजुम'	अलीगढ़	925 877 9744
12	अशोक कुमार 'नीरद'	अँधेरी (पूर्व), मुंबई	993 025 0921
13	आनन्द पाण्डेय 'तन्हा'	कानपुर	936 911 0036
14	आराधना प्रसाद	पटना	725 060 6100
15	आलोक यादव	नोएडा (यू. पी.)	941 273 6688
16	उत्कर्ष अग्निहोत्री	फर्रुखाबाद-209625	887 466 3158
17	ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'	अहमदाबाद	942 833 0490
18	कविता विकास	नोएडा (यू. पी.)	943 132 0288
19	कालजयी घनश्याम	नई दिल्ली	981 013 7967
20	किरण सिंह	पटना	943 089 0704
21	कुलदीप कुमार	ऊना, हिमाचल प्रदेश	701 840 2984
22	केशव शरण	सिकरौल, वाराणसी	941 529 5137
23	कृष्ण सुकुमार	रुड़की (उत्तराखंड)	991 788 8819
24	गरिमा सक्सेना	बैंगलुरु	769 492 8448

25	चाँद मुंगेरी	बोकारो स्टील सिटी	920 409 3040
26	छाया शुक्ला	शिवपुर, वाराणसी	800 949 3787
27	ज्वाला सांध्यपुष्प	पटोरी, समस्तीपुर	926 275 7523
28	ज़ाहिद अबरोल	ऊना, हिमाचल प्रदेश	981 664 3939
29	डॉ. आनन्द किशोर	दिल्ली-110053	892 074 7891
30	डॉ. आरती कुमारी	मुज़फ्फ़रपुर	808 450 5505
31	डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'	मुरादाबाद	992 737 6877
32	डॉ. गीता विश्वकर्मा 'नेह'	बालोद, छत्तीसगढ़	992 662 3854
33	डॉ. ज़ीनत एहसान क़ुरैशी	अंधेरी, वेस्ट मुंबई	922 122 2223
34	डॉ. दिनेश त्रिपाठी शम्स	सिद्धार्थनगर यू.पी.)	955 930 4131
35	डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह 'त्यागी'	समस्तीपुर	911 357 4997
36	डॉ. नलिन	कोटा, राजस्थान	941 399 7457
37	डॉ. पुरुषोत्तम 'यक़ीन'	हिण्डौन, करौली- राज.	941 493 9574
38	डॉ. पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'	पटना	834 048 4896
39	डॉ. ब्रह्मजीत गौतम	ग़ाज़ियाबाद यू. पी.	976 000 7838
40	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	पटना	886 304 5716
41	डॉ. राकेश जोशी	देहरादून, उत्तराखंड	941 115 4939
42	डॉ. विकास सोलंकी	खगड़िया, बिहार	990 505 9156
43	डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'	गुरुग्राम, हरियाणा	981 116 9069
44	डॉ. शिव ओम अम्बर	फर्रुखाबाद- 209625	941 533 3059
45	डॉ. संगीता नाथ	धनबाद, झारखण्ड	943 116 8918
46	डॉ. सीमा विजयवर्गीय	अलवर, राजस्थान	707 371 3013
47	डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा	बुद्धा कालोनी, पटना	834 078 5305
48	डॉ. सुनीता सिंह 'सुधा'	हिसार, हरियाणा	967 161 9238
49	दर्द गढ़वाली	देहरादून, उत्तराखंड	945 548 5094
50	दिनेश सिंदल	जोधपुर, राजस्थान	774 294 4505
51	दिलीप समदर्शी	बथनाहा, अररिया	870 902 2692

52	दुर्गेश कुमार 'शाद'	इंदौर, मध्य प्रदेश	932 923 3344
53	द्रौपदी साहू	बिलासपुर, छत्तीसगढ़	882 702 0265
54	धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'	गायघाट, वाराणसी	893 506 5229
55	नवीन सी चतुर्वेदी	कांदिविली पूर्वी, मुंबई	996 702 4593
56	प्यासा अंजुम	जम्मू -180016	941 910 1315
57	पवन शर्मा	भादरा, राजस्थान	968 054 1071
58	पूर्णिमा सुमन	सुदामडीह, धनबाद	793 903 7709
59	प्रीति सुमन	सीतामढ़ी, बिहार	898 733 2733
60	बनवारी लाल 'ख़ामोश'	चूरू, राजस्थान	941 360 5170
61	बाबा बैद्यनाथ झा	पूर्णियाँ, बिहार	754 387 4127
62	भूपेन्द्र सिंह 'होश'	लखनऊ - 226016	735 571 6884
63	महेश कुमार कुलदीप	बाड़मेर, राजस्थान-3	907 993 7636
64	महेश जोशी 'अनल'	खरगोन, मध्य प्रदेश	942 405 5551
65	मीना भट्ट सिद्धार्थ	जबलपुर, मध्य प्रदेश	797 416 0268
66	रमा प्रवीर वर्मा	नागपुर, महाराष्ट्र	966 541 2860
67	रमेश 'कँवल'	पटना, बिहार	878 976 1287
68	रवि खण्डेलवाल	इन्दौर, मध्य प्रदेश	769 790 0225
69	राजकान्ता राज	शिवपुरी, पटना, बिहार	930 824 5361
70	राजमूर्ति सौरभ	प्रतापगढ़, उ. प्र.	700 793 0595
71	राजेन्द्र तिवारी	कानपुर, उत्तर प्रदेश	638 668 0768
72	राजेन्द्र राज	सूर्यगढ़ा, लखीसराय	985 238 1812
73	राहुल शर्मा	मुरादाबाद -244001	975 855 6426
74	रीना धीमान 'स्वर्ण'	सीवुड्स, नवी मुंबई	966 335 5575
75	रेखा भारती मिश्रा	कदमकुआँ, पटना	930 816 2129
76	वंदना बाजपेयी	निर्माण विहार, दिल्ली	981 835 0904
77	वसंत जमशेदपुरी	जमशेदपुर, झारखंड	933 480 5484
78	विज्ञानव्रत	नोएडा उ. प्रदेश	981 022 4571

79	शबला अरोरा (शालू)	दिल्ली	931 114 2869
80	संजीव प्रभाकर	गाँधीनगर, गुजरात	908 213 6889
81	सत्यभामा सिंह 'ज़िया'	थाने मुंबई महाराष्ट्र	800 713 0204
82	सत्यम भारती	बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश	867 705 6002
83	सत्यम् दुबे 'शार्दूल'	प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश	879 594 0431
84	सविता राज	मुजफ्फरपुर- 842002	748 821 8363
85	सुभाष पाठक ज़िया	शिवपुरी मध्यप्रदेश	887 835 5676
86	सुभाष मित्तल सत्यम्	अहमदाबाद, गुजरात	979 940 3003.
87	सुरेंद्र कुमार सैनी	रुड़की, उत्तराखंड	790 619 1781
88	सोनिया वर्मा	रायपुर, छत्तीसगढ़	835 780 3400
89	हिमकर श्याम	रांची झारखंड	860 317 1710
90	हीरालाल यादव हीरा	मलाड पूर्व मुंबई	982 140 0100

ग़ज़लकार मित्रों की जन्मतिथियाँ

ग़ज़लकार मित्रों को जन्मदिन की बधाई दीजिए		
क्रमांक	**जन्मतिथि**	**शायर का नाम**
1	15 जनवरी	राजकान्ता राज
2	16 फरवरी	डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा
3	28 फरवरी	कविता विकास
4	24 अप्रैल	अंजू केशव
5	28मई	पूर्णिमा सुमन
6	5 सितंबर	डॉ. पूनम सिंह श्रेयसी
7	20 अक्टूबर	सोनिया वर्मा
8	4 नवम्बर	प्रीति सुमन
9	22 जुलाई 1940	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह
10	28 अक्टूबर, 1940	डॉ. ब्रह्मजीत गौतम
11	17 अगस्त, 1943	विज्ञानव्रत
12	21नवंबर, 1945	अशोक कुमार 'नीरद'
13	6 अक्तूबर, 1946	भूपेंद्र सिंह 'होश'
14	18 जनवरी, 1948	डॉ. नलिन
15	4 सितंबर, 1948	सुभाष मित्तल सत्यम्
16	17 अप्रैल 1949	डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'
17	29 सितंबर, 1949	प्यासा अंजुम
18	11मई, 1950	चाँद मुंगेरी
19	2 नवंबर, 1950	सुरेंद्र कुमार सैनी
20	20 दिसम्बर 1950	ज़ाहिद अबरोल
21	25 सितम्बर, 1952	डॉ. शिव ओम अम्बर
22	16 जनवरी, 1973	रवि खण्डेलवाल
23	30 अप्रैल, 1953	मीना भट्ट सिद्धार्थ

24	25 अगस्त, 1953	रमेश ‘कँवल’
25	3 अप्रैल, 1954	बनवारी लाल ‘ख़ामोश’
26	15 अक्टूबर, 1954	कृष्ण सुकुमार
27	21 जनवरी, 1955	डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह ‘त्यागी’
28	5 मार्च, 1955	ज्वाला सांध्यपुष्प
29	16 मई, 1955	अरुण कुमार आर्य
30	03 अगस्त, 1955	बाबा बैद्यनाथ झा
31	17 नवंबर, 1955	कुलदीप शर्मा
32	11 मई 1956	दिनेश सिंदल
33	21 जून, 1957	डॉ. पुरुषोत्तम ‘यक़ीन’
34	5 जुलाई, 1957	ऋषिपाल धीमान ‘ऋषि’
35	31 अगस्त, 1957	आनन्द पाण्डेय ‘तन्हा’
36	8 दिसम्बर, 1957	वसंत जमशेदपुरी
37	25 जुलाई, 1958	अर्चना जौहरी
38	10 सितंबर, 1958	राजमूर्ति सौरभ
39	2 जनवरी, 1959	अनिल कुमार सिंह
40	20जनवरी, 1959	राजेन्द्र राज
41	02 मार्च, 1960	राजेन्द्र तिवारी
42	1 जुलाई, 1960	सत्यभामा सिंह ‘ज़िया’
43	23 अगस्त, 1960	केशव शरण
44	19 दिसम्बर, 1960	अनिल गौड़
45	10 जनवरी, 1961	डॉ. कृष्णकुमार ‘नाज़’
46	25 सितंबर, 1961	पवन शर्मा
47	4 दिसम्बर, 1962	डॉ. आनंद किशोर
48	03 फ़रवरी, 1963	डॉ. संगीता नाथ
49	16 दिसंबर, 1963	छाया शुक्ला

50	01 जुलाई, 1964	कालजयी घनश्याम
51	7 जुलाई, 1964	धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'
52	1 फ़रवरी, 1965	महेश जोशी 'अनल'
53	23 अक्टूबर, 1965	दर्द गढ़वाली
54	25 सितंबर 1966	अशोक 'अंजुम'
55	02 जनवरी, 1967	अनुराग मिश्र ग़ैर
56	30 जुलाई 1967	आलोक यादव
57	28 दिसम्बर, 1967	किरण सिंह
58	28 सितंबर, 1968	अनीता सिद्धि
59	1 जनवरी 1969	नवीन सी चतुर्वेदी
60	12 जून, 1969	डॉ. गीता विश्वकर्मा 'नेह'
61	21 जनवरी, 1970	डॉ. ज़ीनत एहसान क़ुरैशी
62	05 फ़रवरी, 1970	दिलीप समदर्शी
63	20मई, 1970	वंदना बाजपेयी
64	10 अगस्त, 1970	अरविन्द 'असर'
65	9 सितंबर, 1970	डॉ. राकेश जोशी
66	3 नवंबर, 1972	डॉ. सीमा विजयवर्गीय
67	16 जनवरी, 1973	हिमकर श्याम
68	23 मई, 1973	आराधना प्रसाद
69	25 जुलाई 1973	हीरालाल यादव हीरा
70	7 नवम्बर, 1973	राहुल शर्मा
71	03 जुलाई, 1975	डॉ. दिनेश त्रिपाठी शम्स
72	2अक्टूबर, 1975	रमा प्रवीर वर्मा
73	29 अप्रैल, 1976	शबला अरोरा (शालू)
74	01अगस्त, 1977	रीना धीमान 'स्वर्ण'
75	25 मार्च, 1977	डॉ. आरती कुमारी

76	19 जनवरी, 1978	अविनाश अमन
77	9 फ़रवरी, 1978	डॉ. सुनीता सिंह 'सुधा'
78	9 जनवरी, 1980	महेश कुमार कुलदीप
79	3 फ़रवरी, 1980	संजीव प्रभाकर
80	12 अक्टूबर, 1980	दुर्गेश कुमार 'शाद'
81	जून 1981	सविता राज
82	23 जून, 1981	अमित 'अहद'
83	04 फरवरी 1983	डॉ.विकास सोलंकी
84	25 फ़रवरी, 1984	रेखा भारती मिश्रा
85	29 जनवरी, 1990	गरिमा सक्सेना
86	9 अगस्त 1990	द्रौपदी साहू
87	15 सितंबर, 1990	सुभाष पाठक ज़िया
88	27 मार्च, 1995	उत्कर्ष अग्निहोत्री
89	15 अगस्त, 1995	सत्यम् दुबे 'शार्दूल'
90	11 दिसम्बर, 1996	सत्यम भारती

मुहब्बतों का शायर: रमेश 'कँवल'

नाम : रमेश प्रसाद, बि.प्र.से. (से.नि.)

जन्म तिथि : 25 अगस्त, 1953

धर्मपत्नी : श्रीमती मंजू प्रसाद
(परिणय 22 जून1978)

अदबी ख़िदमात : 'कँवल' शाहाबादी नाम से पहली ग़ज़ल परवाज़, लुधियाना से अगस्त 1972 में प्रकाशित हुई।

प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह :

- लम्स का सूरज (उर्दू), सावन का कँवल (हिंदी) 1997 में
- शोहरत की धूप (हिंदी) 2013 में, रंग-ए–हुनर (उर्दू) 2016 में
- स्पर्श की चांदनी: काव्य संग्रह (ग़ज़ल नज़्म) 2019 में
- इतराती बलखाती ग़ज़लें: ग़ज़ल संग्रह 2024
- अमृत काल की आधुनिक ग़ज़लें: ग़ज़ल संग्रह 2024

सम्पादन 2020 में

- अक़ीदत के फूल: (ग़ज़ल नज़्म) 2020

संपादन 2021

- 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें: 600 ग़ज़लों का संकलन

संपादन-2022

- 21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें
- एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें

सम्पादन 2023

- अमृत महोत्सव की ग़ज़लें 75 रदीफ़ों पर ग़ज़लें
- क्या सुनाएँ हाले-दिल-हफ़ीज़ बनारसी हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों का संग्रह
- आज फूलों में ताज़गी कम है-हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों का संग्रह
- वंदन! शुभ अभिवंदन! देव स्तुति की कविताओं का संग्रह

  सम्पादन: 2024
- 24 बह्रों में 2024 की दिलकश ग़ज़लें

अन्य पुस्तकों में शामिल ग़ज़लें :

• रंगारंग शायरी (संपादक–प्रकाश पंडित) • ग़ज़ल इंटर नेशनल (संपादक मंसूर उस्मानी) • ग़ज़ल: दुष्यंत के बाद भाग 2 (संपादक दीक्षित दनकौरी) • बिहार में जदीद ग़ज़ल (संपादक अताउल्लाह खां अल्वी) • 101 किताबें ग़ज़लों की (संपादक नीरज गोस्वामी) • संदल सुगंध भाग 4 (संकलित काव्य संग्रह) में पृष्ठ 33-38 पर ग़ज़लें • हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिज़ाज (संपादक अनिरुद्ध सिन्हा) पृष्ठ 92-98 पर ग़ज़लें • 30 ग़ज़लगो 300 ग़ज़लें-डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति में ग़ज़लें शामिल • ग़ज़ल त्रयोदश / उत्तरवाहिनी / अंडरलाइन इत्यादि ग़ज़ल विशेषांक में ग़ज़लें प्रकाशित • कविताकोश www.kavitakosh.org पर 80 से ज़्यादा ग़ज़लें-गीत • www.urduyouthforum.org पर 25 से ज्यादा ग़ज़लें • www.rekhta.org पर 10 से ज्यादा ग़ज़लें • 2 e-book 1 लम्स का सूरज (उर्दू), 2 रंग-ए–हुनर (उर्दू)

सम्प्रति : बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत • (पटना में लगभग 3 साल तक ए डी एम लॉ एंड आर्डर रहे) के पश्चात • सफ़ीर-ए-शहर-ए-शेर ओ अदब • सदर: बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी, पटना: मरकज़-ए-रंग-ए-हुनर

निवास : 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ, पटना-800014

मोबाइल : 878 976 1287

ई-मेल : rameshkanwal78@gmail.com

वेबसाइट : www.rameshkanwal.com